जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चौद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

चित्र केवल परिचयार्थ : पंच परमेष्ठी नमस्कार महामंत्र की स्तुति एवं गुण कीर्तन करते हुए देवेन्द्र, असुरेन्द्र आदि अपने को धन्य मान रहे हैं।

2016 जनवरी 1 JANUARY

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION, Head Office : 96, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 001

विक्रम संवत् 2072 · वीर निर्वाण संवत् 2542 · जय संवत् 220 · जैन पंचमारक संवत् 2538

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	चित्रा १०/४६ तुला **31** माघ वद ७		चित्रा २६/३५ तुला **3** पौष वद ९	पूर्वाषाढ़ा ९/४० मकर **10** पौष सुद १	अश्विनी २३/५६ मेष **17** पौष सुद ८	पुष्य २०/४२ कर्क **24** माघ वद १
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	पुष्य नक्षत्र 23 जनवरी शनिवार रात्रि 8.05 बजे से 24 जनवरी रविवार रात्रि 8.42 बजे तक		स्वाती २९/१६ तुला **4** पौष वद १०	उत्तराषाढ़ा ८/५५ मकर **11** पौष सुद २	भरणी २२/४५ **18** पौष सुद ९	आश्लेषा २१/५२ **25** माघ वद १
मंगल TUE मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे	शुभ दिन 6, 7, 12, 14, 15, 17, 19, 20, 24, 25, 26, 28 अशुभ दिन 1, 2, 5, 10, 11, 21, 30		विशाखा ३१/२५ वृश्चिक **5** पौष वद ११	श्रवण ७/५३ कुंभ **12** पौष सुद ३	कृतिका २१/४२ वृष **19** पौष सुद १०	मघा २३/३६ सिंह **26** माघ वद २
बुध WED मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे	पंचक 12 जनवरी मंगलवार सायं 7.16 बजे से 16 जनवरी शनि रात्रि 1.12 बजे तक		अनुराधा वृश्चिक **6** पौष वद १२	शतभिषा २९/१७ कुंभ **13** पौष सुद ४	रोहिणी २०/५० वृष **20** पौष सुद ११	पूर्वा फाल्गुनी २५/५२ सिंह **27** माघ वद ३
गुरु THU मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे	अमृत सिद्धि योग 6 जनवरी बुधवार, अनुराधा नक्षत्र अहोरात्र तक		अनुराधा ८/५६ वृश्चिक **7** पौष वद १२	पूर्वा भाद्रपद २७/५५ मीन **14** पौष सुद ५	मृगसिरा २०/१३ मिथुन **21** पौष सुद १२	उत्तरा फाल्गुनी २८/३६ कन्या **28** माघ वद ४
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	उत्तरा फाल्गुनी २०/२३ कन्या **1** पौष वद ७		ज्येष्ठा ९/४६ धनु **8** पौष वद १३	उत्तरा भाद्रपद २६/३२ मीन **15** पौष सुद ६	आर्द्रा १९/५६ मिथुन **22** पौष सुद १३	हस्त कन्या **29** माघ वद ५
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	हस्त २३/३२ कन्या **2** पौष वद ८		मूल ९/५९ धनु **9** पाक्षिक प्रतिक्रमण पौष वद १४/३०	रेवती २५/१२ मेष **16** पौष सुद ७	पुनर्वसु २०/०५ कर्क **23** पाक्षिक प्रतिक्रमण पौष सुद १४/१५	हस्त ७/३९ तुला **30** माघ वद ६

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

जनवरी	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	6.32	5.54	7.20	9.22
6	6.33	5.56	7.21	9.23
11	6.35	5.59	7.23	9.26
16	6.36	6.02	7.24	9.27
21	6.36	6.05	7.24	9.28
26	6.36	6.07	7.24	9.28
31	6.36	6.09	7.24	9.29

जैन पर्व

15. विमल जिन केवल, 18. शांति जिन केवल, 20. अजित जिन केवल, 23. अभिनन्दन जिन केवल, आचार्य श्री पार्श्वचन्द्रजी म. सा. का जन्म दिवस, मरुधर केसरी स्मृति दिवस, आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. का जन्म दिवस, धर्म जिन केवल, 30. पद्म जिन च्यवन

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. नववर्ष प्रारंभ, 5. सफला एकादशी व्रत, 7. प्रदोष, 12. पंचक प्रारंभ, 13. लोहड़ी (पंजाब), 14. मकर संक्रान्ति, पोंगल, 16. पंचक समाप्ति, 20. पुत्रदा एकादशी व्रत, 21. प्रदोष, 23. माघस्नानारंभ, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, 26. गणतंत्र दिवस, 27. सौभाग्य सुन्दरी व्रत, 30. गांधी पुण्य तिथि, 31. स्वामी विवेकानन्द जयंती

अवकाश

1. नववर्ष प्रारंभ (ऐ), 9. द्वितीय शनिवार, 13. लोहड़ी पंजाब (ऐ), 14. मकर संक्रान्ति, पोंगल, 26. गणतंत्र दिवस

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त: 9. पाक्षिक पर्व, 23. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

2016 का वार्षिक राशिफल

1. मेष लग्न राशि (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

यह वर्ष आपके लये कुछ अपवादों को छोड़कर बहुत श्रेष्ठ रहेगा। घर में नये वाहन आने के योग हैं। शुभ मांगलिक कार्य के संयोग बनने की संभावना है। आय की वृद्धि के साथ मांगलिक कार्य के खर्चे भी बढ़ने की संभावना है। फरवरी मार्च में आँखों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें। मई मास में वाहन चलाने में सावधानी बरतें। एक्सीडेंट योग से बचने के लिये इस महिने में गाय को गुड़ रोटी अवश्य देवें। जून में राजकीय कार्य स्वत: ही बनने के योग बन सकते हैं। जमीन जायदाद में अच्छा मुनाफा मिल सकता है। जुलाई मास में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। अगस्त में शत्रु से सावधान रहें। सितम्बर मास विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त अनुकूल रहेगा। वर्षान्त तक का समय श्रेष्ठ रहेगा, उधारी वसूल होने के संयोग हैं।

उपाय-सुझाव—मंगल के दोष निवारण हेतु **ॐ ह्रीं श्रीं वासुपूज्याय नम:** की नित्य एक माला फेरें तथा राहू के दोष शमन हेतु चिड़िया को बाजरे का दाना देवें। अशुभ योग निवारण हेतु निम्न जाप करें—

राज काज में तेज रहे, वलि खमा खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो॥

2. वृषभ लग्न राशि (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

यह वर्ष आपको आध्यात्मिकता की ओर प्रवेश करवाने वाला बनेगा। पुरानी गलतियों का अहसास करते हुए सुधार के लिये सचेष्ट बनेंगे। आध्यात्मिक शक्ति से रुके हुए कार्य अथवा अड़चन बाधा दूर हटेगी। प्रथम तिमाही में आर्थिक उन्नति के आसार बनते हैं। मध्य की छ:माही में घर में शुभ व मांगलिक कार्य के योग बनते हैं। अंतिम तिमाही में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। इस वर्ष आपकी राशि में उतार-चढ़ाव ज्यादा होने की संभावना को देखते हुए अपने इष्ट बल का स्मरण नित्य करें। अन्यथा कोई बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। पारिवारिक विवादों से बचने का पूरा-पूरा प्रयास करावें।

उपाय-सुझाव—काल सर्प योग के निवारण हेतु **ॐ जुं स: स: जुं ॐ** की नित्य तीन माला फेरें अथवा कुत्ते को रोटी देने का लक्ष्य रखावें। अड़चन आदि निवारण हेतु निम्न जाप करें—

अडियो काम तो हुय जावे, वलि बिगड्यो काम भी बण जावे।
भूल चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो॥

3. मिथुन लग्न राशि (का, की, कू, के, को, घ, ड, छ, ह)

नववर्ष आपके लिये नये शुभ समाचारों के साथ प्रवेश करेगा। जितना अधिक आप पुरूषार्थ करेंगे उतनी अधिक आपको सफलता मिलती जाएगी। पारिवारिक सदस्यों के साथ प्रेम भाव बनाकर रखें। उधारी में संयम बरतें अन्यथा डूबत बढ़ने की सम्भावना है। प्रथम तिमाही में शत्रु पक्ष से सावधान रहें, विश्वासघात होने की सम्भावना है। घर में मांगलिक कार्यों के योग बनते हैं। खानपान पर ध्यान देकर स्वास्थ्य के प्रति विशेष जागरूक बनें। नये व्यापार के योग बनने के आसार हैं। प्रशासनिक सेवा देने वाले एवं राजकर्मचारियों के लिये भाषा विवेक न रखने के कारण से जुलाई के पश्चात् का समय पीड़ाकारी बन सकता है, बचाव के लिए 21 दिन तक सूर्य उपासना करें। अंतिम तिमाही में विदेश यात्रा का योग बन सकता है।

उपाय-सुझाव—शनि-दोष निवारण के लिये **ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रत जिनाय नम:** की माला फेरें एवं काली चींटियों को बाजरी का दलिया, खस खस, देसी खांड घी तेल से चोपड़कर नित्य एक मुट्ठि देवें। अशुभ योगों से बचने हेतु निम्न जाप करें—

एक माला नित नेम रखो, किणी बात तणो नही होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो॥

4. कर्क लग्न राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

यह वर्ष आपके लिये अत्यन्त उत्साहवर्धक रहेगा, आय के नये स्रोत खुलेंगे। प्रथम तिमाही में उधारी देने में सावधानी बरतें। अति विश्वास के कारण धोखा होने की सम्भावना हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों के साथ सौहार्द का व्यवहार बनाना अत्यंत आवश्यक है। मध्य छ:माही में व्यापार वृद्धि एवं रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होने की सम्भावना है। संतान पक्ष की तरफ से कभी कदाच् चिंता बढ़ने की सम्भावना है। इसके निवारण के लिये 5 शनिवार तक कुत्ते को रोटी देवें। वर्ष की अंतिम तिमाही में स्व-चिंतन के द्वारा चिंताओं का निवारण आप स्वयं करने में समर्थ बनेंगे। इस वर्ष हर पूर्णिमासी के दिन व्रत करने का लक्ष्य रखावें एवं बच्चों के गले में चाँदी का अर्द्ध चन्द्रमा एवं मोती पहनाने का लक्ष्य रखें।

उपाय-सुझाव—इस राशि वाले **ॐ अमृते अमृतोद्भवि अमृतवर्धनी अमृते श्रावे श्रावे मम मनोवांछितम् पूरे पूरे स्वाहा** की नित्य एक माला फेरें। निम्न जाप करें—

स्वभक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनि राम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो॥

5. सिंह लग्न राशि (म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

यह वर्ष आपके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एक तरफ आपको आर्थिक ऊँचाईयों की तरफ ले जाएगा तो दूसरी तरफ स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता रखने के लिये कर्तव्यबोध करवायेगा। नये मेहमानों का घर में आगमन सम्भव है। प्रथम तिमाही में घर परिवार में मांगलिक शुभ कार्य सम्पन्न होने की सम्भावना है। स्वयं के मुख से स्वयं की उपलब्धियों की प्रशंसा न करें अन्यथा बनते-बनते कार्य में रुकावट महसूस कर सकते हैं। प्रशासनिक सेवा करने वाले अथवा राजकर्मियों के लिये यह वर्ष आर्थिक उन्नति के साथ पदोन्नति के सहयोग बनाएगा। पुराने कोर्ट कचहरी के मामले स्वत: ही सुलझते जायेंगे।

उपाय-सुझाव—गुरू के श्रेष्ठ फल के लिए प्रत्येक गुरूवार को सात रोटी पर घी हल्दी लगाकर सात गुरूवार तक देवें। शनि एवं मंगल के दोष निवारण हेतु निम्न जाप करें—

ॐ झौं झौं चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर गंभीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु॥

अंतिम तिमाही अत्यंत ही उपलब्धिकारक रहेगी। क्रोध का शमन करने का पूरा-पूरा यत्न करें। निम्न जाप करें—

अडियो काम तो हुय जावे, वलि बिगड्यो काम भी बण जावे।
भूल चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो॥

6. कन्या लग्न राशि (टो, पा, पी, पू, पे, पो, ष, ण, ठ)

कन्या राशि वाले जिनके बुध की महादशा चल रही है उनके लिये यह वर्ष अत्यन्त ही उपलब्धिकारक रहेगा। वचन सिद्धि का योग फलीभूत होगा, पद प्राप्ति होगी, मान-सम्मान में अभिवृद्धि होगी। अनेक शुभ एवं मांगलिक कार्य सानन्द सम्पन्न होंगे। परिवार की अभिवृद्धि के मध्य के छमाही में पूरे-पूरे संयोग बन सकते हैं। अनेक प्रकार की आर्थिक एवं राजनीतिक उपलब्धियाँ प्राप्त होने की सम्भावना है। इस वर्ष मानसिक एवं नाड़ी से सम्बन्धित रोगों से बचने के लिये हमेशा सतर्क रहें एवं अपने इष्ट देव का स्मरण करते रहें। इस वर्ष अल्प जप जाप भी अधिक फलदायक बनेगा। पारिवारिक सदस्यों से कभी कदाच् चिंताजनक वातावरण बन सकता है लेकिन गुरू श्रेष्ठ फलदायक होने के कारण सारी चिंताओं का स्वत: निवारण हो जाएगा। इस वर्ष अंतिम तिमाही में स्थायी लाभ की प्राप्ति होने की सम्भावना है। संयोग वियोग में स्वयं को समत्व की साधना से जोड़कर रखें।

उपाय-सुझाव—कुत्ते को रोटी देने से शनि अत्यन्त शुभ फलदायक बनेगा और शत्रुओं को परास्त करेगा। छाछ का दान करने से शुक्र धनदायक बनेगा। निम्न जाप करें—

विविध भाँति है जैन के, सम्प्रदाय अभंग। संवत् अठारह पांच का, स्मारक जयमल संघ।।

जनवरी

कुशल-हर्ष-भगवान-सूर्य-राज-नथमल्लजी। चौथ - बख्त रावत चाँद नय स्वामी नामी नमूँ।।
जय-गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय-जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चाँद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

2016

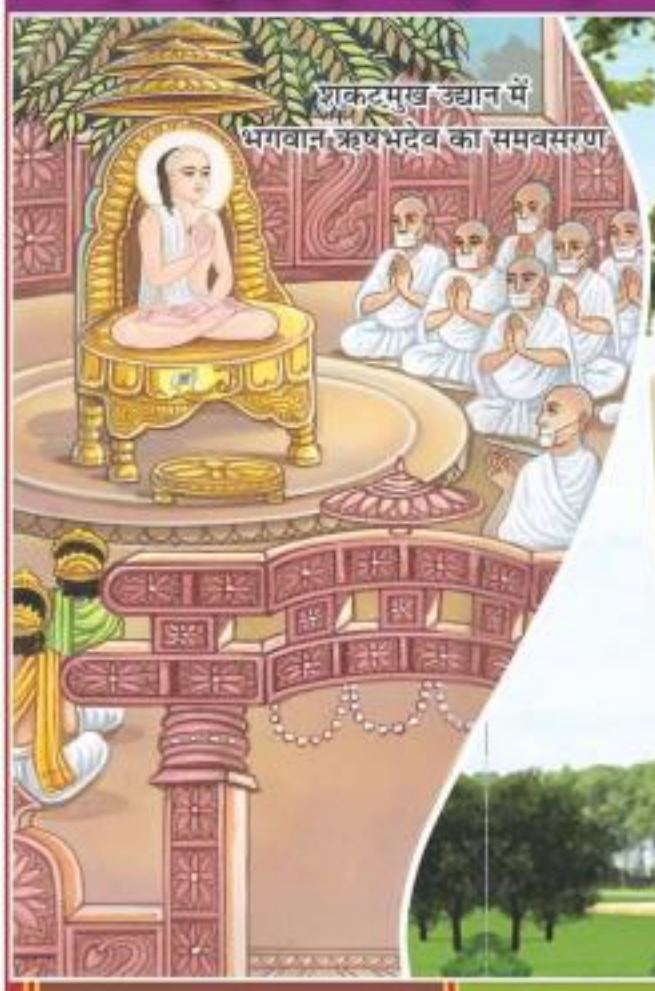

फरवरी 2 FEBRUARY

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 001

विक्रम संवत् 2072 · वीर निर्वाण संवत् 2542 · जय संवत् 220 · जैन पंचमारक संवत् 2538

वार					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे		उत्तराषाढा १८/२५ मकर **7** पाक्षिक पर्व माघ वद १४	भरणी २८/०८ मेष **14** माघ सुद ७	आश्लेषा २९/२८ सिंह २१/२६ **21** माघ सुद १४	स्वाती २१/२४ तुला **28** फाल्गुन वद ५
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	स्वाती १३/४३ तुला **1** माघ वद ८	श्रवण १६/५८ कुंभ २८/०७ **8** माघ वद ३०	कृतिका २७/०५ वृष ९/४० **15** माघ सुद ८	मघा सिंह **22** पाक्षिक पर्व माघ सुद १५	विशाखा २४/१४ वृश्चिक १७/३३ **29** फाल्गुन वद ६
मंगल TUE मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे	विशाखा १६/१४ वृश्चिक ९/३९ **2** माघ वद ९	धनिष्ठा १५/११ कुंभ **9** बसंत पंचमी माघ सुद १	रोहिणी २६/२५ वृष **16** माघ सुद ९	मघा ७/२१ सिंह **23** फाल्गुन वद १	पुष्य नक्षत्र 20 फरवरी शनिवार सूर्योदय से रात्रि 3-59 बजे तक
बुध WED मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे	अनुराधा १८/०८ वृश्चिक **3** माघ वद १०	शतभिषा १३/१२ मीन २९/३८ **10** माघ सुद २	मृगसिरा २६/०९ मिथुन १४/१४ **17** माघ सुद १०	पूर्वा फाल्गुनी ९/३९ कन्या १६/१७ **24** फाल्गुन वद २	शुभ दिन 3, 7, 10, 17, 19, 24 अशुभ दिन 2, 5, 9
गुरु THU मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे	ज्येष्ठा १९/१७ धनु ११/१३ **4** माघ वद ११	पूर्वा भाद्रपद ११/०७ मीन **11** माघ सुद ३	आर्द्रा २६/१९ मिथुन **18** माघ सुद ११	उत्तरा फाल्गुनी १२/१८ कन्या **25** फाल्गुन वद ३	पंचक 8 फरवरी सोमवार रात्रि 4.07 बजे से 13 फरवरी शनिवार प्रातः 7.12 बजे तक
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	मूल १९/४१ धनु **5** माघ वद १२	उत्तरा भाद्रपद ९/०५ मेष ३१/१२ **12** रेवती ३१/१२ माघ सुद ४/५	पुनर्वसु २६/५६ कर्क २०/४३ **19** माघ सुद १२	हस्त १५/१४ तुला २८/४८ **26** फाल्गुन वद ४	अमृत सिद्धि योग 3 फरवरी बुधवार, अनुराधा, सूर्योदय से सायं 6.08 बजे तक,
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	पूर्वाषाढा १९/२१ मकर २५/१० **6** माघ वद १३	अश्विनी २९/३२ मेष **13** माघ सुद ६	पुष्य २७/५९ कर्क **20** माघ सुद १३	चित्रा १८/१९ तुला **27** फाल्गुन वद ४	अमृत सिद्धि योग 12 फरवरी शुक्रवार, रेवती, प्रातः 9.05 से अहोरात्र तक

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

फरवरी	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	6.36	6.10	7.24	9.29
6	6.35	6.12	7.23	9.29
11	6.33	6.13	7.21	9.28
16	6.32	6.15	7.20	9.27
21	6.29	6.16	7.17	9.25
26	6.27	6.17	7.15	9.24
29	6.26	6.18	7.14	9.24

जैन पर्व

5. शीतल जिन जन्म, शीतल जिन दीक्षा, 6. ऋषभ जिन मोक्ष, 8. श्रेयांस जिन केवल, खद्दरधारी गुरु गणेश पुण्यतिथि, 10. अभिनन्दन जिन जन्म, वासुपूज्य जिन केवल, 11. धर्म जिन जन्म, विमल जिन जन्म, 12. विमल जिन दीक्षा, 15. अजित जिन जन्म, 16. अजित जिन दीक्षा, 19. अभिनन्दन जिन दीक्षा, 20. धर्म जिन दीक्षा, 25. आचार्य जीत स्मृति दिवस, 29. सुपार्श्व जिन केवल

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

6. प्रदोष, 8. मौनी अमावस्या, पंचक प्रारंभ, सोमवती अमावस्या, 12. बसंत पंचमी, 13. पंचक समाप्ति, 18. जया एकादशी व्रत, 20. प्रदोष, 22. माघ स्नान पूर्ति

अवकाश

12. बसंत पंचमी
13. द्वितीय शनिवार

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त 7. पाक्षिक पर्व, 22. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

2016 का वार्षिक राशिफल

राज काज में तेज रहे, वलि खमा खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

7. तुला लग्न राशि (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

यह वर्ष आपके लिये शानदार रहेगा। धर्म कर्म के क्षेत्र में अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ प्राप्त होने की सम्भावना है। राजनीतिक एवं भरोसेमंद व्यक्तियों से सतर्क रहें। असावधानी से धोखा हो सकता है। यात्रा में अपने इष्टबल का स्मरण करने का लक्ष्य रखें। आपका इष्टबल ही आपकी यात्रा को सुखद बना सकता है। दान-पुण्य से अशुभ कर्मों का शुभ में संक्रमण करने का लक्ष्य रखें। पैतृक दोष निवारण हेतु नित्य कौओं एवं गाय को भोजन देवें। परिवार की तरफ से समय-समय पर चिंता का वातावरण बनने की सम्भावना है लेकिन आप अपनी कुशल बुद्धि से सभी चिंताओं का निवारण करने में सक्षम बनेंगे। मध्य की छ:माही में स्वास्थ्य के प्रति विशेष सजगता बरतें।

उपाय-सुझाव—प्रत्येक सोमवार को दूध चावल का भोजन करने से मनोबल में दृढ़ता आयेगी। संकल्प विकल्पों से छुटकारा प्राप्त होगा। निम्न मंत्र का जाप करने से आर्थिक उन्नति होगी—

लक्ष्मी दिन दिन बढ जावे, वलि दुख नेडो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

8. वृश्चिक लग्न राशि (तो, न, ना, नी, नू, ने, नो, य, या, यी, यू)

यह वर्ष आपके लिये मिश्र फलदायक रह सकता है। प्रथम तिमाही में उतार-चढ़ाव अत्यधिक रहने की सम्भावना है, सावधानी बरतें। चैत्र मास के पश्चात् परिस्थिति में परिवर्तन होने की सम्भावना है। आय के नये स्रोत खुलने की सम्भावना है। इस समय शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि मिलेगी। घर में सुख-सुविधा के अनेक साधन आयेंगे। अंतिम तिमाही में विदेश यात्रा के संयोग बन सकते हैं। बकाया वसूली अक्टूबर के पश्चात् होने की सम्भावना है। धार्मिक प्रवृति एवं दान-पुण्य से मंगल के दोषों का परिहार नितान्त आवश्यक है। घर परिवार में नारी जाति का सम्मान करने से लक्ष्मी में वृद्धि होगी। समय-समय पर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। खाने-पीने में परहेज रखें।

उपाय-सुझाव—लाल गाय को गुड़ देने से मंगल का श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा। वर्ष भर निम्न मंत्र का जाप करने से घर में सुख-शांति रहेगी—

राज काज में तेज रहे, वलि खमा खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

9. धनु लग्न राशि (ये, यो, भा, भी, भू, भे, धा, फा, ढा)

यह वर्ष पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ रहेगा। आय वृद्धि के अनेक मौके प्राप्त होंगे। निर्णायक बुद्धि से निर्णय करने पर सफलता प्राप्त होगी। संकल्प विकल्प को विराम देने से व्यापार में उन्नति संभव है। घर-परिवार के क्लेश निवारण हेतु **ॐ ह्रीं श्रीं नमो लोए सव्व साहूणं** का नियमित 108 बार जाप करने का लक्ष्य रखावें। मध्य छमाही में वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। एक्सीडेंट योग निवारण हेतु चिड़िया को बाजरी का दाना देवें अथवा गाय को रोटी देवें। व्यापार वृद्धि हेतु शुक्र का श्रेष्ठ फल प्राप्त करने के लिये दूध-दही व छाछ का दान करें।

उपाय-सुझाव—पैतृक दोष निवारण हेतु 41 दिन तक भोजन से पूर्व कौओं को रोटी देवें। निम्न मंत्र का जाप करने से व्यापार में सफलता प्राप्त होगी—

लक्ष्मी दिन दिन बढ जावे, वलि दुख नेडो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

10. मकर लग्न राशि (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

यह वर्ष परिवार के मुखिया की पुण्यवानी के कारण से परिवार के सभी सदस्यों के लिये श्रेष्ठ सिद्ध होगा। व्यापार वृद्धि, आकस्मिक धन प्राप्ति के अनेक अवसर हाथ में आयेंगे। देश-विदेश की यात्राओं के भी संयोग बन सकते हैं। मार्च के पश्चात् का समय पूर्ण रूप से आपके लिये अनुकूल रहने की सम्भावना है। नवम्बर के आसपास स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता रखें। जितनी अधिक धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावना रखेंगे, उतना अधिक आपको लाभ प्राप्त होगा। भ्रातृ सम्बन्ध में प्रेम भाव बनाकर रखें। संदेह से सम्बन्ध खराब हो सकते हैं। स्त्री पक्ष की चिंता की तरफ अधिक ध्यान न दें अन्यथा स्वास्थ्य पर गलत प्रभाव पड़ेगा।

उपाय-सुझाव—अशुभ योग निवारण हेतु निम्न मंत्र का जाप करें—

पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दु:ख कष्ट रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

11. कुंभ लग्न राशि (गू, गे, स, सा, सी, सू, से, सो, द, दा)

यह वर्ष आपके लिये संघर्षदायक रहेगा। अंधविश्वासों के जाल में फँसने से मानसिक चिंता बढ़ने की सम्भावना है। स्वयं के हटाग्रह से स्वयं को हानि हो सकती है। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अत्यंत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। गुरुकृपा के बिना अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। जिसका विश्वास अधिक किया जाएगा वही विश्वासघात कर सकता है। व्यापार धंधे में सावधानी बरतें। अंतक्लेश के कारण से काफी आर्थिक नुकसान होने की सम्भावना बन सकती है। यात्रा में विशेष सजगता रखें।

उपाय-सुझाव—सभी अशुभ योगों के निवारण के लिए **ॐ ह्रीं श्रीं दर्दुर देवाय नम:** की एक माला फेरें तथा नित्य तीन बार चमत्कारी जय जाप का पठन करें एवं निम्न जाप की नित्य एक माला फेरें—

एक माला नित नेम रखो, किणी बात तणो नहीं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

12. मीन लग्न राशि (दी, दू, दे, दो, थ, झ, भ, च, चा, ची)

ये वर्ष आपके लिये बहुत श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। घर-आँगन में खुशियों की बहार आने की सम्भावना है। परिवार वृद्धि के योग बनेंगे। शुभ मांगलिक कार्य में धन खर्च होगा। आकस्मिक धन प्राप्ति के संयोग हैं। व्यापार वृद्धि के लिये अनेक नये आयाम बनेंगे। प्रथम तिमाही से मध्य की छमाही श्रेष्ठ फलदायक रहेगी। कोर्ट कचहरी के कार्य सहज में सुलझ जायेंगे। वर्ष की अंतिम तिमाही में महिला पक्ष की तरफ से चिंता बढ़ने की सम्भावना है। इस अशुभ योग के निवारण के लिये **ॐ ह्रीं श्रीं नमो लोए सव्व साहूणं** की नित्य एक माला फेरें। राजकर्मचारियों के लिये पदोन्नति के लिये अनेक अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय-सुझाव—घर में सुख-शांति के लिये निम्न मंत्र का 108 बार नित्य जाप करें—

पूज्य नामे सब कष्ट टले, वलि भूत प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवे गुप चुपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो ॥

पद्मोदय जैन कैलेंडर MOBILE APP अब पर भी

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर 'पद्मोदय जैन कैलेण्डर' अत्यधिक लोकप्रिय हो चुका है। इसी को ध्यान में रखते हुए MOBILE APP तैयार किया गया है। FREE DOWNLOADING के लिए PLAY STORE से 'PADMODAYA JAIN CALENDAR' DOWNLOAD किया जा सकता है। RATING में 5 STAR देवें।

धन्यवाद!

For Android	:	https://play.google.com/store/apps/details?id=com.bion.jain.padmodayacalendar&hl=en
For iphone	:	https://appsto.re/in/7T934.i
Connect on facebook	:	https://www.facebook.com/padmodaya.jain.calendar

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चौंद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

जे.पी.पी. जैन समणी सेन्टर
पारस गार्डन, रायचूर (कर्नाटक)

2016
मार्च 3 MARCH

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 00, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 001

विक्रम संवत् 2072 · वीर निर्वाण संवत् 2542 · जय संवत् 220 · जैन पंचमारक संवत् 2538

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 18 मार्च शुक्रवार प्रातः 8-30 बजे से 19 मार्च शनिवार प्रातः 9-47 बजे तक	श्रवण २७/३७ मकर **6** फाल्गुन वद १२	भरणी ११/०६ वृष १६/३६ **13** फाल्गुन सुद ५	आश्लेषा ११/३५ सिंह ११/३५ **20** फाल्गुन सुद १२	विशाखा वृश्चिक २४/१७ **27** चैत्र वद ४
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	**शुभ दिन** 11, 12, 14, 16, 17, 18, 26, 28 **अशुभ दिन** 1, 2, 4, 8, 13, 27	धनिष्ठा २५/४६ कुंभ १४/४९ **7** फाल्गुन वद १३	कृत्तिका ९/२४ वृष **14** फाल्गुन सुद ६	मघा १३/४८ सिंह **21** फाल्गुन सुद १३	विशाखा ७/०० वृश्चिक **28** चैत्र वद ५
मंगल TUE मध्याह्न 3.00 से 4.30 बजे		अनुराधा २६/३६ वृश्चिक **1** फाल्गुन वद ७	शतभिषा २३/३० कुंभ **8** पाक्षिक पर्व फाल्गुन वद १४	रोहिणी ८/१५ मिथुन २१/१४ **15** फाल्गुन सुद ७	पूर्वा फाल्गुनी १६/११ कन्या २२/४९ **22** चातुर्मासिक फाल्गुन सुद १४	अनुराधा ९/३८ वृश्चिक **29** चैत्र वद ६
बुध WED मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे		ज्येष्ठा २८/२० धनु २८/२० **2** फाल्गुन वद ८	पूर्वा भाद्रपद २०/५८ मीन १४/३९ **9** फाल्गुन वद ३०/१	मृगसिरा ७/४२ मिथुन **16** फाल्गुन सुद ८	उत्तरा फाल्गुनी ११/०५ कन्या **23** फाल्गुन सुद १५	ज्येष्ठा ११/४९ धनु ११/४९ **30** चैत्र वद ६
गुरू THU मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे		मूल २९/१८ धनु **3** फाल्गुन वद ९	उत्तरा भाद्रपद १८/१८ मीन **10** फाल्गुन सुद २	आर्द्रा ७/४७ कर्क २६/१९ **17** फाल्गुन सुद ९	हस्त २२/०१ कन्या **24** चैत्र वद १	मूल १३/२४ धनु **31** चैत्र वद ७
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे		पूर्वाषाढ़ा २९/२९ धनु **4** फाल्गुन वद १०	रेवती १५/४० मेष १५/४० **11** फाल्गुन सुद ३	पुनर्वसु ८/३० कर्क **18** फाल्गुन सुद १०	चित्रा २५/०२ तुला ११/३१ **25** चैत्र वद २	**पंचक** 7 मार्च सोमवार मध्याह्न 2.45 बजे से 11 मार्च शुक्रवार अपराह्न 3-40 बजे तक
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे		उत्तराषाढ़ा २८/५३ मकर ११/४४ **5** फाल्गुन वद ११	अश्विनी १३/१३ मेष **12** फाल्गुन सुद ४	पुष्य ९/४७ कर्क **19** फाल्गुन सुद ११	स्वाती २८/०५ तुला **26** चैत्र वद ३	**अमृत सिद्धि योग** 11 मार्च शुक्रवार, रेवती, सूर्योदय से अपराह्न 3-40 बजे तक

पच्चक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

मार्च	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	6.25	6.18	7.13	9.23
6	6.22	6.18	7.10	9.21
11	6.19	6.19	7.07	9.19
16	6.16	6.19	7.04	9.16
21	6.13	6.20	7.01	9.14
26	6.09	6.20	6.57	9.11
31	6.06	6.20	6.54	9.09

जैन पर्व

1. सुपार्श्व जिन मोक्ष, चन्द्रप्रभ जिन केवल, 3. सुविधि जिन च्यवन, 5. ऋषभ जिन केवल, 6. मुनि सुव्रत जिन केवल, श्रेयांस जिन जन्म, 7. श्रेयांस जिन दीक्षा, 8. वासुपूज्य जिन जन्म, 9. वासुपूज्य जिन दीक्षा, 10. अरह जिन च्यवन, 12. मल्लि जिन च्यवन, 16. संभव जिन च्यवन, 20. मुनि सुव्रत जिन दीक्षा, मल्लि जिन मोक्ष, 27. पार्श्व जिन च्यवन, पार्श्व जिन केवल, 28. चन्द्रप्रभ जिन च्यवन

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

3. रामदास नवमी, 5. विजया एकादशी व्रत, 6. प्रदोष, 7. महाशिवरात्री व्रत, पंचक प्रारंभ, 10. रामकृष्ण परमहंस जयंती, 11. पंचक समाप्ति, 13. याज्ञवल्क्य जयंती, 16. होलाष्टक प्रारंभ, 19. आमलकी एकादशी व्रत, 20. मेला श्यामजी (खाटू), प्रदोष, 22. होलिका दहन, 23. छारेंडी, 31. शीतला सप्तमी

अवकाश

7. महाशिवरात्री व्रत, 12. द्वितीय शनिवार, 22. होलिका दहन, 23. होली छारेंडी

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त 8. पाक्षिक पर्व, 22. चातुर्मासिक

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

तीर्थंकर परिचय

क्र.सं.	तीर्थंकर	माता का नाम	पिता का नाम	लांछन	वर्ण	जन्म	यक्ष	जिनशासन देवी	प्रमुख गणधर	गणधरों की सं.	प्रमुख साध्वी
1.	श्री ऋषभ जिन जी	श्री मरुदेवी	श्री नाभि	वृषभ	पीला	इक्ष्वाकुभूमि	गौमुख	चक्रेश्वरी	उषभसेण जी	84	ब्राह्मीसुन्दरी जी
2.	श्री अजित जिन जी	श्री विजयादेवी	श्री जितशत्रु	गज	पीला	अयोध्या	महायक्ष	रोहिणी	सिंहसेण जी	95	फागुणी जी
3.	श्री संभव जिन जी	श्री सेना	श्री जितारि	अश्व	पीला	श्रावस्ती	श्रीमुख	प्रज्ञप्ति	चारु जी	102	सामा जी
4.	श्री अभिनंदन जिन जी	श्री सिद्धार्था	श्री संवर	वानर	पीला	अयोध्या	यक्षेश्वर	वज्रशृंखला	वजरनाथ जी	116	अजिया जी
5.	श्री सुमति जिन जी	श्री मंगला	श्री मेघ	क्रौंच	पीला	अयोध्या	तुंबरु	पुरुषदत्ता	चिमर जी	100	काचवा जी
6.	श्री पद्म जिन जी	श्री सुसीमा	श्री धर	पदम	पीला	कौशाम्बी	पुष्प (कुसुम)	मनोवेगा	सुव्रत जी	107	रतिया जी
7.	श्री सुपार्श्व जिन जी	श्री पृथ्वी	श्री प्रतिष्ठ	स्वस्तिक	लाल	वाराणसी	नंदी	कालीदेवी	विदर्भ जी	95	सोभा जी
8.	श्री चन्द्रप्रभ जिन जी	श्री लक्ष्मी	श्री महासेन	चन्द्र	सफेद	चन्द्रपुरी	शाम (विजय)	ज्वालामालिनी	दीनकरण जी	93	सोहनी जी
9.	श्री सुविधि जिन जी	श्री रामा	श्री सुग्रीव	मकर	सफेद	काकंदी	अजित	महाकाली	वारु जी	88	वांरनी जी
10.	श्री शीतल जिन जी	श्री नन्दा	श्री दृढ़रथ	श्रीवत्स	पीला	भद्दिलपुर	ब्रह्मयक्ष	मानवी	आनन्द जी	81	सुलसा जी
11.	श्री श्रेयांस जिन जी	श्री विष्णुदेवी	श्री विष्णु	गैंडा	पीला	सिंहपुर	ईश्वर (यक्षराट्)	गौरी	गौतम जी	76	धारणी जी
12.	श्री वासुपूज्य जिन जी	श्री जया	श्री वासुदेव	महिष	लाल	चम्पापुर	कुमार	गांधारी	सोम जी	66	धनधारणी जी
13.	श्री विमल जिन जी	श्री श्यामा	श्री कृतवर्मा	सूअर	पीला	कपिलपुर	चतुर्मुख	वैरोटीदेवी	मिन्दर जी	57	धारणी जी
14.	श्री अनन्त जिन जी	श्री सुयशा	श्री सिंहसेन	बाज	पीला	अयोध्या	पाताल	अनन्तमती	जसोधर जी	50	पद्मावती जी
15.	श्री धर्म जिन जी	श्री सुव्रता	श्री भानु	वज्र	पीला	रत्नपुर	किन्नर	मानसी	अरिष्ठ जी	43	शिवा जी
16.	श्री शान्ति जिन जी	श्री अचिरा	श्री विश्वसेन	मृग	पीला	हस्तिनापुर	गरुड़ यक्ष	महामानसी	चक्रु जी	36	सुइ जी
17.	श्री कुंथु जिन जी	श्री श्रीदेवी	श्री सूरसेन	बकरा	पीला	हस्तिनापुर	गंधर्व	जया, गंधारी	संभु जी	35	अज्या जी
18.	श्री अर जिन जी	श्री महोदेवी	श्री सुदर्शन	नंदावर्त	पीला	हस्तिनापुर	खगेंद्र	तारावती	कुम्भकरण जी	33	रखीया जी
19.	श्री मल्लि जिन जी	श्री प्रभावती	श्री कुम्भ	कलश	नीला	मिथिला	कुबेर	अपराजिता	अमीर जी	28	बुद्धवन्ता जी
20.	श्री मुनिसुव्रत जिन जी	श्री पद्मावती	श्री सुमित्र	कछुआ	काला	राजगृह	वरुण	बहुरूपिणी	इन्द्रकुम्भ जी	18	पुष्पचूला जी
21.	श्री नमि जिन जी	श्री वप्रा	श्री विजयसेन	कमल	पीला	मिथिला	भृकुटी	चामुण्डी	कुम्भ जी	17	अनिला जी
22.	श्री नेमि जिन जी	श्री शिवादेवी	श्री समुद्रविजय	शंख	काला	शोर्यपुर	गोमेद (सर्वाह्न)	कुष्माण्डिणी	वरदत्त जी	11	यक्षणी जी
23.	श्री पार्श्व जिन जी	श्री वामा	श्री अश्वसेन	सर्प	नीला	वाराणसी	धरणेन्द्र	पद्मावती	दीनकर्ण जी	10	पुष्पचूला जी
24.	श्री वर्द्धमान जिन जी	श्री त्रिशला	श्री सिद्धार्थ	सिंह	पीला	कुण्डलपुर	मातंग	सिद्धायनी	इन्द्रभूति जी	11	चन्दनबाला जी

चौदह नियम

त्याग व्रत मर्यादा का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इहलोक व परलोक दोनों सुखमय बनाने का एकमात्र साधन ही त्याग व मर्यादा है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए श्रावक ही क्या प्रत्येक धर्म-प्रेमी सद्गृहस्थ को चाहिए कि वह प्रतिदिन प्रातः निम्न चौदह नियमों को ग्रहण करे एवं आवश्यकता के अनुसार मर्यादा करके उपरान्त त्याग कर ले, जितना त्याग उतनी ही शान्ति। चौदह नियम धारण करने से समुद्र जितना पाप घटकर बूँद के बराबर रह जाता है।

1. **सचित्त**—कच्चा पानी, हरी वनस्पति, फल, सचित्त नमक, कच्चा पूरा धान आदि सचित्त वस्तुओं का परिमाण करना।
2. **द्रव्य**—रोटी, दाल, शाक, पूड़ी, पापड़, पान, सुपारी, इलायची, लौंग आदि द्रव्यों की मर्यादा करना।
3. **विगय**—घी, तेल, दूध, दही व मीठा—इन पाँचों विगय का परिमाण करना।
4. **उपानह**—जूते, चप्पल, मोजे आदि की मर्यादा करना।
5. **ताम्बूल**—पान, सुपारी, इलायची, लौंग, चूर्ण आदि मुखवास की मर्यादा करना।
6. **वस्त्र**—पहनने, ओढ़ने के सारे वस्त्रों की मर्यादा करना।
7. **कुसुम**—सूँघने की वस्तु (फूल, इत्र की मर्यादा करना)।
8. **वाहन**—साइकिल, स्कूटर, मोटर, रेल, हाथी, घोड़ा आदि वाहनों की मर्यादा करना।
9. **शयन**—पलँग, खाट, बिछौने आदि की मर्यादा करना।
10. **विलेपन**—केसर, चन्दन, तेल, उबटन आदि की मर्यादा करना।
11. **अब्रह्म**—मैथुन-सेवन का त्याग करना या मर्यादा करना।
12. **दिशा**—ऊँची, नीची, तिरछी दिशा में जाने की मर्यादा करना।
13. **स्नान**—स्नान एवं स्नान के लिए जल की मर्यादा करना।
14. **भक्त**—भोजन (कितने समय व कितना प्रमाण) की मर्यादा करना।

तीन मनोरथ

प्रातःकाल उठकर तीन नवकार का ध्यान करें तथा फिर निम्न तीन मनोरथ का चिन्तन करें। पश्चात् तीन बार 'तिक्खुत्तो' के पाठ से देव-गुरु-धर्म को नमस्कार करें।

1. वह दिन मेरा धन्य होगा, जब मैं आरम्भ-परिग्रह को तजकर निवृत्ति को धारण करूँगा।
2. वह दिन मेरा धन्य होगा, जब मैं आगारधर्म को छोड़कर अणगारधर्म को धारण करूँगा।
3. वह दिन मेरा धन्य होगा, जब मैं संथारा-संलेखना करके पण्डितमरण को प्राप्त होऊँगा।

कलयुग का कल्पवृक्ष

इस कलिकाल में लोगस्स रूपी कल्पवृक्ष तत्काल वांछित फल देने वाला है। साधक धैर्य एवं निष्ठा से आराधना करे।

प्रथम मण्डल

ॐ ऐं अँ ह्रीं श्रीं लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली, मम मनोतुष्टिं कुरु कुरु ॐ स्वाहा।

विधि—प्रथम मण्डल को पूर्व दिशा सन्मुख खड़े होकर 14 दिन तक काउस्सग्ग में 108 बार जपे। साधनाकाल में ब्रह्मचर्य-पालन करते हुए भूमि या पाट पर शयन करे। मान-सम्मान, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होवे, चोर-भय दूर होवे। इति सत्यम्॥

द्वितीय मण्डल

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं उसभमजियं च वन्दे सम्भवमभिनन्दणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपास, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पद्मासन में उत्तर दिशा सन्मुख प्रतिदिन 108 बार 7 दिन जपे। सोमवार से प्रारम्भ करे। एक समय भोजन तथा ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि शयन करे। भोजन सफेद वस्तु का ही करे। कलह मिटे, मैत्रीभाव बढ़े, सुख-सम्पत्ति मिले।

तृतीय मण्डल

ॐ ऐं ह्रीं झूँ झ्रीं सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि स्वाहा।

विधि—तृतीय मण्डल को लाल रंग की माला से 21 दिन तक 108 बार जपे। शत्रु-भय मिटे तथा संग्राम या मुकद्दमे में जीत होवे।

चतुर्थ मण्डल

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथं अरं च मल्लिं वन्दे मुणिसुव्वयं नमजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च मम मनोवांछित पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पीले रंग की माला से पूर्व दिशा की ओर मुँह करके 11,000 बार जपे अथवा प्रतिदिन एक माला फेरे। भूत-प्रेत बाधा दूर हो, अष्टगंध या केसर से लिखकर गले में बाँधने से ज्वर पीड़ा मिटे।

पंचम मण्डल

ॐ ह्रीं ह्रां एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीण जर मरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पूर्व दिशा की ओर हाथ जोड़कर खड़े-खड़े मुख आकाश की तरफ रखते हुए 5,500 बार जपे अथवा प्रतिदिन एक माला फेरे। सभी सुख प्राप्त होवें, सभी का प्रिय बने।

षष्ट मण्डल

ॐ अम्बराय कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को उत्तर दिशा की ओर मुँह करके 15,000 बार जपे अथवा प्रतिदिन एक माला फेरे। देवगण भी प्रसन्न हो, जय-जयकार एवं सुख मिले, अन्त में समाधिमरण (संथारा) होवे।

सप्तम मण्डल

ॐ ह्रीं ऐं ओं झ्रीं चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु। मम मनोवांछितं पूरय पूरय स्वाहा।

विधि—इस मण्डल को पूर्व दिशा की ओर मुख करके 1,000 बार जप करने से अथवा प्रतिदिन एक माला फेरने से मन की आशा पूर्ण होती है एवं यश-प्रतिष्ठा बढ़े तथा सभी का पूजनीय बने।

विविध भाँति है जैन के, सम्प्रदाय अभंग। संवत् अठारह पांच का, स्मारक जयमल संघ।।

कुशल—हर्ष—भगवान—सूर्य—राज—नथमल्लजी। चौथ — बख्त रावत चाँद नथ स्वामी नामी नमूँ।।
जय—गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय—जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

मार्च

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चौंद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम
जैन कैलेण्डर
(पद्मोदय-पंचांग)

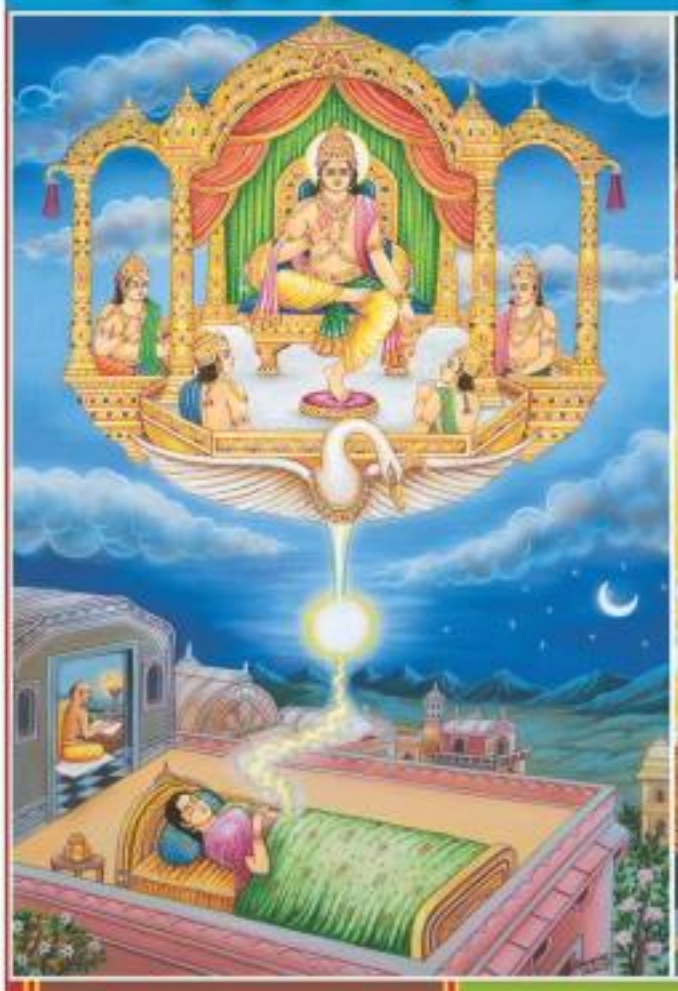

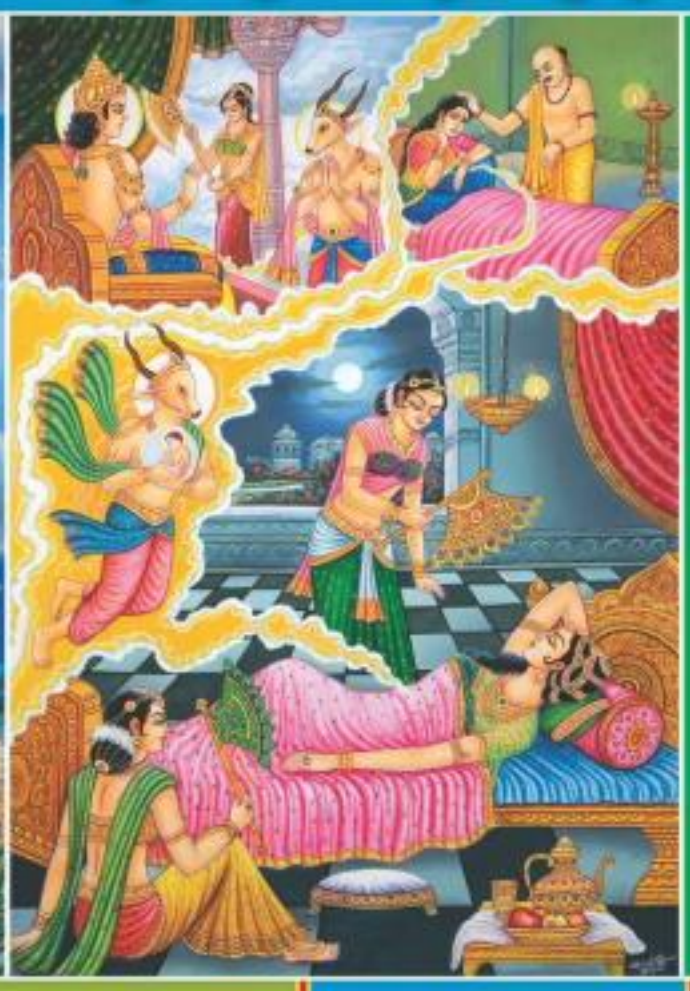

चित्र केवल परिचयार्थ : चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर को देवानंदा के गर्भ से महारानी त्रिशला के उदर में स्थापित करते हुए हरिणगमेषी देव।

2016

अप्रैल 4 APRIL

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 ...

विक्रम संवत् 2072-73 | वीर निर्वाण संवत् 2542 | जय संवत् 220 | जैन पंचमारक संवत् 2538

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 14 अप्रैल गुरुवार मध्यान्ह 2.33 बजे से 15 अप्रैल शुक्रवार अपराह्न 3.34 बजे तक	श्रवण १३/४७ कुंभ २५/१२ **3** चैत्र वद १०/११	कृतिका १८/०६ वृष **10** चैत्र सुद ४	मघा १९/३४ सिंह **17** चैत्र सुद ११	विशाखा १३/०१ वृश्चिक ६/१९ **24** वैशाख वद २
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	**शुभ दिन** 8, 11, 13, 14, 19, 20, 21, 23, 25, 30 **अशुभ दिन** 3, 5, 12, 16, 17, 18, 24, 29	धनिष्ठा १२/२७ कुंभ **4** चैत्र वद १२	रोहिणी १६/०९ मिथुन २७/२५ **11** चैत्र सुद ५	पूर्वा फाल्गुनी २२/१५ कन्या २८/५८ **18** चैत्र सुद १२	अनुराधा १५/३६ वृश्चिक **25** वैशाख वद ३
मंगल TUE मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे	**पंचक** 3 अप्रैल रविवार रात्रि 1.12 बजे से 7 अप्रैल गुरुवार रात्रि 2.20 बजे तक	शतभिषा १०/३० मीन २६/४३ **5** चैत्र वद १३	मृगसिरा १४/५१ मिथुन **12** चैत्र सुद ६	उत्तरा फाल्गुनी २५/११ कन्या **19** चैत्र सुद १३	ज्येष्ठा १७/५२ धनु १७/५२ **26** वैशाख वद ४
बुध WED मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 11 अप्रैल सोमवार अपराह्न 4.09 से आगामी सूर्योदय तक	पूर्वा भाद्रपद ८/०५ मीन **6** चैत्र वद १४	आर्द्रा १४/१८ मिथुन **13** चैत्र सुद ७	हस्त २८/१३ कन्या **20** चैत्र सुद १४	मूल ११/४३ धनु **27** वैशाख वद ५
गुरु THU मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 14 अप्रैल गुरुवार दोपहर 2.33 से आगामी सूर्योदय तक	रेवती २६/२० मेष २६/२० **7** चैत्र वद ३०	पुनर्वसु १४/३३ कर्क ८/२५ **14** चैत्र सुद ८	चित्रा तुला १३/४४ पाक्षिक पर्व **21** चैत्र सुद १४	पूर्वाषाढ़ा २१/०३ मकर २६/१८ **28** वैशाख वद ६
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	पूर्वाषाढ़ा १४/१७ मकर २०/२३ **1** चैत्र वद ८	अश्विनी २३/२२ मेष **8** चैत्र सुद १	पुष्य १५/३४ कर्क **15** चैत्र सुद ९	चित्रा ७/१५ तुला **22** चैत्र सुद १५	उत्तराषाढ़ा २१/४८ मकर **29** वैशाख वद ७
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	उत्तराषाढ़ा १४/२४ मकर **2** चैत्र वद ९	भरणी २०/३४ वृष २५/५५ **9** चैत्र सुद २/३	आश्लेषा १७/१७ सिंह १७/१७ **16** चैत्र सुद १०	स्वाती १०/१२ तुला **23** वैशाख वद १	श्रवण २१/५४ मकर **30** वैशाख वद ८

पच्चक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

अप्रैल	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	6.05	6.20	6.53	9.08
6	6.02	6.21	6.50	9.06
11	5.59	6.21	6.47	9.04
16	5.56	6.22	6.44	9.02
21	5.53	6.22	6.41	9.00
26	5.51	6.23	6.39	8.59
30	5.49	6.24	6.37	8.57

जैन पर्व

1. ऋषभ जिन जन्म, ऋषभ जिन दीक्षा, वर्षीतप प्रारंभ, 9. कुंथु जिन केवल, 11. अनन्त जिन मोक्ष, अजित जिन मोक्ष, 12. संभव जिन मोक्ष, 14. ओली तप प्रारंभ, 15. सुमति जिन मोक्ष, 17. सुमति जिन केवल, 19. महावीर जिन जन्म, 22. पद्मप्रभ जिन केवल, ओली तप समाप्त, 23. कुंथु जिन मोक्ष, 24. शीतल जिन मोक्ष, 27. कुंथु जिन दीक्षा, 28. शीतल जिन च्यवन

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. शीतला अष्टमी, 3. पापमोचनी एकादशी व्रत, पंचक प्रारंभ, 5. प्रदोष, 7. पंचक समाप्ति, 8. नवरात्रारम्भ (घट स्थापन), संवत्सरारंभ, 9. गणगौरी पूजा, 14. दुर्गाष्टमी, डॉ. अंबेडकर जयंती, 15. रामनवमी, 19. प्रदोष, भगवान महावीर जन्म जयन्ती, 22. हनुमान जयन्ती, वैशाख स्नानारंभ, 26. अनुसूया जयन्ती

अवकाश

9. द्वितीय शनिवार, 14. डॉ. अंबेडकर जयंती, 15. रामनवमी, 19. भगवान महावीर जन्म जयन्ती, 22. हनुमान जयन्ती

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त
6. पाक्षिक पर्व,
21. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

पद्मोदय यंत्र विज्ञान

जल भय मिटे

		स	री	र	मा		
		सं	सा	रो	अ		
ओ	णो	१३७	१४४	१३०	१३५	ण्ण	हु
वि	सि	१३४	१३१	१४१	१४०	वो	ना
ना	हे	१४३	१३८	१३६	१२९	बु	व
इ	म	१३२	१३३	१३९	१४२	त्तो	त्ति
		न्ति	र	त	जं		
		च्च	बु	वो	जी		

—: मंत्र :—

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरन्ति महेसिणो॥

विधि—उक्त मंत्र की पूर्णिमा के दिन साधना की जाती है। शरद पूर्णिमा को एक-एक माला फेरने से मंत्र सिद्ध होता है। मंत्र सिद्ध होने के पश्चात् इस यंत्र को यंत्रोक्त विधि से श्वेत कागज पर लिखकर साथ में रखें तो जल भय मिटे।

विवाह बाधा निवारण यंत्र

१२५	११५	१५६	१३२	११४	१५३	१२७
१२६	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	१५७	१३०	१२५	१३५	१३६
१३९	१४७	१४४	११६	१४१	१४२	१४३
१४४	१२३	१४५	१२८	११६	१४७	१६६
१२२	१४६	१४९	१२१	१५०	१२०	१२१

विधि—इस यंत्र को हल्दी के रस से भोजपत्र पर लिखकर कुँआरी कन्या अथवा वर के हाथ में बाँध दें। सम्बन्ध तय करने जो व्यक्ति देखने आयेगा, उसे पसन्द आयेंगे, सम्बन्ध तय होगा।

पेट आफरा रोग-निवारण यंत्र

१६	२३	२	७
६	३	२०	१९
२२	१७	८	१
४	५	१८	२१

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर हाथ में बाँधें तो पेट का आफरा दूर हो।

मस्तक पीड़ा दूर यंत्र

४१	३४	४	५
३	६	४०	३५
३८	३७	१	८
२	७	३९	३६

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर बाँधने से मस्तक पीड़ा दूर होती है।

शान्ति एवं धनदायक यंत्र

ॐ	ऐं	ह्रीं	श्रीं	च	इ	त्ता
नि	क	रे	लो	ए	प	भा
स	म:	१२	५	१०	त्तो	र
न्ती	न	७	९	११	ग	हं
स	ह्रीं	८	१३	६	इ	वा
ओ	श्रीं	रं	त्त	णु	म	सं
ड्डि	हि	म	ड्डी	व	क्क	च

—: मंत्र :—

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं॥

विधि—शुक्रवार को श्वेत वस्त्र धारण कर उक्त मंत्र की १६ माला फेरें। श्वेत धान्य का आयंबिल तप करें। इस प्रकार १६ शुक्रवार तक इस मंत्र की साधना करें। नित्य इस मंत्र की एक माला फेरें। १६वें शुक्रवार को अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र/श्वेत कागज पर इस यन्त्र को लिखकर तिजोरी अथवा गल्ले में रखें, अवश्य ही धन की वृद्धि होवे। यह मंत्र आगमोक्त है। इसकी साधना कभी खाली नहीं जाती। साधना करते ही मानसिक एवं शारीरिक शांति की अनुभूति होती है तथा धन आने के रास्ते स्वत: ही खुलते हैं। साधना काल में ब्रह्मचर्य का पालन करें एवं कंद-मूल, रात्रि-भोजन का त्याग रखें। प्रत्येक शुक्रवार को (१६ शुक्रवार तक) आयंबिल अवश्य करें।

प्रसूति पीड़ा हर यंत्र

				च				
			र	हं	वा			
		म	न्ति	स	न्ति	क		
	ओ	रं	१६	२	१२	रे	सं	
भा	ड्डि	त्त	६	१०	१४	लो	च	इ
	हि	णु	८	१८	४	ए	क्क	
		म	इ	ग	त्तो	प		
			म	ड्डी	व			
				त्ता				

—: मंत्र :—

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
सन्ति सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं॥

विधि—यह मंत्र पठित सिद्ध है। गर्भवती महिलाओं को नित्य इस मंत्र की एक माला फेरनी चाहिए, जिससे बच्चा प्रतिभा-सम्पन्न, स्वस्थ एवं संस्कारित होता है। प्रसव के समय अगर कोई बाधा हो तो इस यंत्र को केसर की स्याही से श्वेत कागज पर लिखकर उक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर पानी में घोलकर पिलावे तो पीड़ा दूर हो जावे और आराम से बच्चे का जन्म होवे।

आँख पीड़ा बाधा-निवारण यंत्र

१०	१७	६	५
१७	४	११	६
३	१४	९	१२
८	३	१२	१५

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर पुरुष के दायें हाथ तथा स्त्री के बायें हाथ में बाँधने से आँख की पीड़ा ठीक होती है।

व्यापार में लाभ व वृद्धिकारक यंत्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठ:	४२	३५	४०	फु
ठ:	३७	३९	४१	फु
ठ:	३८	४३	३६	फु
हैं	भुर	भुर	भुर	फु

विधि—ताँबे, चाँदी या सोने के पत्र पर शुभ मुहूर्त में खुदवाकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को शुद्ध जगह स्थापित करके, शुद्ध होकर, श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन व श्वेत माला का प्रयोग करते हुए निम्नांकित मंत्र की प्रतिदिन 10 माला फेरें—

मंत्र—ओं ह्रीं श्रीं अर्ह नम:।

41 दिन तक जाप करके यंत्र को तिजोरी में स्थापित कर दें। इससे व्यापार में लाभ-वृद्धि होगी।

सर्वरोग निवारण यंत्र

द्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	दे	व	द्रीं
श्रीं	द	त्त	श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

विधि—केसर से भोजपत्र पर लिखें, देवदत्त की जगह रोगी का नाम लिखें, फिर हाथ के बाँधें, सर्व रोग मिटें।

मिरगी मिटे यंत्र

४२	४२	२	।।७
४५	४३	७	७।
।।१४।।	।।५।।	४४	४७।।
।।१४।।	।।५	४४	४७।।

विधि—अष्टगंध से भोजपत्र पर यह यंत्र लिखकर भुजा के बाँधें तो मिरगी का रोग मिटे।

गाय-भैंस का दूध बढ़ावे वाला यंत्र

७	२	३५	२८
३१	३२	३	६
१	८	२९	३४
३३	३०	५	४

विधि—इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर ताँबे के ताबीज में मँढ़वाकर गले में बाँध देने से दूध कम आता हो या सूख गया हो तो इससे अवश्य दूध की वृद्धि होगी। भैंस के सींग में बाँधना चाहिए।

बच्चे का सूखना बन्द हो यंत्र

२ १६	९ ९	२ १	७ २
६ ३	३ ४	६ १२	५ १३
८ १०	३ १५	८ ५	१ ६
४ ७	५ ८	४ १४	७ ११

विधि—अच्छे दिन इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिखें। एक तो बच्चे के दाहिने हाथ में बाँध दें, दूसरा घर के दरवाजे के बीचोंबीच लटका दें। 11वें दिन एक यंत्र और लिखें, बच्चे के उस हाथ में, जिसमें पहले से यंत्र बँधा है, बाँध दें और बच्चे के हाथ वाला यंत्र घर के दरवाजे के बीच लटका दें। दरवाजे में जो पहले से लटकाया हुआ यंत्र है, उसे कुएँ में फिकवा दें।

मुँह के छाले दूर हों यंत्र

३	२९	२६
२२	७३	३७५
३०	३७	३७ न

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधने से मुँह के छाले मिट जाते हैं। मुँह में कॅंसर का छाला हो तो भी ठीक हो जाता है।

बच्चे के बुरे स्वप्न दूर हों यंत्र

हं	सं	षं	फं
षं	दं	धं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	दं

विधि—इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर सोते समय मस्तक के नीचे रखें तो बुरे स्वप्न नहीं आयेंगे।

भूत, प्रेत, पिशाच आदि व्यंतर देव दोष निवारण यंत्र

२	क्लौं	ह्रीं	क्लौं	९
क्लौं	५ शान्तिनाथाय पार्श्वनाथाय, धरणेन्द्र देव महावीर स्वामी चक्रेश्वरी देवी १			क्लौं
	१		२	
९	क्लौं	ह्रीं	क्लौं	५

विधि—इस यंत्र को मैनसिल व गोरोचन से आक के पत्ते पर लिखकर, धूप देकर गले, भुजा या कमर पर बाँध दें तो व्यंतर-देव-जनित उपद्रव अवश्य शान्त हो जायेंगे।

चमत्कारिक प्रभु पार्श्व यंत्र

			ह्रीं			
७	२	४	ॐ	३	९	९
२६	३३	४२	पा	२८	३१	४०
र्श्व	ना	था	य	ह्रीं	न	म:
१७	२०	३७	ध्र	८	१२	२४
५०	५१	८३	ह्रीं	३९	५२	५१

विधि—प्रभु पार्श्व जन्म-कल्याणक के दिन यह यंत्र रजत पत्र अथवा ताम्र पत्र पर खुदवाकर केसर चंदन का लेप करें। फिर पीले चावल चढ़ावें और ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय पार्श्व जिनाय नम: इसकी 125 माला फेरनी। सभी प्रकार के विघ्नों का निवारण होता है। मनोभिलाषा की पूर्ति होती है।

अप्रैल

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चौंद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

2016 मई 5 MAY

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office: 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 001

चित्र केवल परिचयार्थ : रुक्मणी पुत्र प्रद्युम्नकुमार की प्रबल पुण्यवानी के कारण उसे नाग की ज्वाला भी भस्म न कर सकी।

विक्रम संवत् 2073 · वीर निर्वाण संवत् 2542 · जय संवत् 220-221 · जैन पंचमारक संवत् 2538

रवि SUN (राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे)	धनिष्ठा २१/२१ **1** वैशाख वद ९	रोहिणी २६/०७ **8** वैशाख सुद २	पूर्वा फाल्गुनी २८/२४ **15** वैशाख सुद ९	अनुराधा २१/३० **22** ज्येष्ठ वद १	शतभिषा २७/२३ **29** ज्येष्ठ वद ७/८
सोम MON (प्रातः 7.30 से 9.00 बजे)	शतभिषा २०/०८ **2** वैशाख वद १०	मृगसिरा २४/०१ **9** वैशाख सुद ३	उत्तरा फाल्गुनी **16** वैशाख सुद १०	ज्येष्ठा २३/३५ **23** ज्येष्ठ वद २	पूर्वा भाद्रपद २६/१७ **30** ज्येष्ठ वद ९
मंगल TUE (मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे)	पूर्वा भाद्रपद १८/२० **3** वैशाख वद ११	आर्द्रा २२/५१ **10** वैशाख सुद ४	उत्तरा फाल्गुनी ७/२० **17** वैशाख सुद ११	मूल २५/१८ **24** ज्येष्ठ वद २	उत्तरा भाद्रपद २४/४२ **31** ज्येष्ठ वद १०
बुध WED (मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे)	उत्तरा भाद्रपद १६/०१ **4** वैशाख वद १२	पुनर्वसु २२/२१ **11** वैशाख सुद ५	हस्त १०/२५ **18** वैशाख सुद १२	पूर्वाषाढा २६/३८ **25** ज्येष्ठ वद ३	पुष्य नक्षत्र: 12 मई गुरुवार सूर्योदय से रात्रि 10.43 बजे तक
गुरु THU (मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे)	रेवती १३/१९ **5** वैशाख वद १३/१४	पुष्य २२/४३ **12** वैशाख सुद ६	चित्रा १३/३० **19** वैशाख सुद १३	उत्तराषाढा २७/३२ **26** ज्येष्ठ वद ४	शुभ दिन: 9, 12, 18, 27, 31 अशुभ दिन: 4, 13, 17, 21, 22
शुक्र FRI (प्रातः 10.30 से 12.00 बजे)	अश्विनी १०/२४ **6** वैशाख वद ३०	आश्लेषा २३/५५ **13** वैशाख सुद ७	स्वाती १६/२६ **20** वैशाख सुद १४	श्रवण २७/५९ **27** ज्येष्ठ वद ५	पंचक: 1 मई, प्रातः 9.42 बजे से 5 मई मध्याह्न 1.19 बजे तक, 28 मई अपराह्न 4.02 बजे से 1 जून रात्रि 10.41 बजे तक
शनि SAT (प्रातः 9.00 से 10.30 बजे)	भरणी ७/२६ **7** वैशाख सुद १	मघा २५/५२ **14** वैशाख सुद ८	विशाखा १९/०७ **21** वैशाख सुद १५	धनिष्ठा २७/५६ **28** ज्येष्ठ वद ६	अमृत सिद्धि योग: 9 मई सोमवार, मृगसिरा सूर्योदय से रात्रि 12.09 बजे तक

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

मई	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	5.48	6.24	6.36	8.57
6	5.46	6.25	6.34	8.55
11	5.45	6.26	6.33	8.55
16	5.44	6.27	6.32	8.54
21	5.43	6.29	6.31	8.54
26	5.42	6.30	6.30	8.54
31	5.42	6.32	6.30	8.54

जैन पर्व

2. नमी जिन मोक्ष, 5. अनन्त जिन जन्म, अनन्त जिन दीक्षा, अनन्त जिन केवल, कुंथु जिन जन्म, 9. अक्षय तृतीया, आचार्य जय पद प्रदान दिवस एवं जयगच्छीय दशम् पट्टधर आचार्य लाल स्मृति दिवस, 10. अभिनन्दन जिन च्यवन, 13. धर्म जिन च्यवन, 14. अभिनन्दन जिन मोक्ष, आचार्य हस्ती पुण्यतिथि, सुमति जिन जन्म, 15. सुमति जिन दीक्षा, 16. महावीर जिन केवल, 17. स्वामी हरक-रावत गुरु स्मृति-दिवस, 18. विमल जिन च्यवन, 19. अजित जिन च्यवन, 20. एकभवावतारी आचार्य सम्राट श्री जयमलजी म.सा. स्मृति दिवस, 28. श्रेयांस जिन च्यवन, 29. मुनिसुव्रत जिन जन्म, 30. मुनिसुव्रत जिन मोक्ष

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. पंचक प्रारंभ, 4. प्रदोष, 5. पंचक समाप्ति, 7. टैगोर जयन्ती, 8. शिवाजी जयन्ती, परशुराम जयन्ती, 9. अक्षय तृतीया, 11. आद्यशंकराचार्य जयन्ती, 12. रामानुज जयन्ती, गंगोत्पत्ति, 17. मोहिनी एकादशी व्रत, 19. प्रदोष, 20. नृसिंह चतुर्दशी, 21. वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा, 23. नारद जयन्ती, 28. पंचक प्रारंभ

अवकाश

1. मजदूर दिवस, 14. द्वितीय शनिवार
21. बुद्ध पूर्णिमा

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

व्याख्यान: 6. पाक्षिक पर्व, 21. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

पद्मोदय वास्तु विज्ञान - 1

भवन निर्माण या किसी भी प्रकार का निर्माण करने से पूर्व योजना बनानी चाहिए और अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप प्रारूप बना लेना चाहिए। प्रारूप बनाते समय सभी मुख्य वास्तु सिद्धान्तों को व्यवहार में लाने से नहीं चूकना चाहिए। प्रयास करना चाहिए कि अधिक से अधिक वास्तु सिद्धान्त प्रयोग में ला सकें।

किसी भी भूखण्ड पर भवन बनाते समय उसके शुभाशुभ का विचार कर लेना चाहिए। दिशा के अनुरूप आठ प्रकार की स्थितियाँ बनेंगी, जो कि निम्न प्रकार हैं–

1. पूर्व मुखी भवन, 2. पश्चिम मुखी भवन, 3. उत्तर मुखी भवन, 4. दक्षिण मुखी भवन, 5. ईशान मुखी भवन, 6. आग्नेय मुखी भवन, 7. नैऋत्य मुखी भवन, 8. वायव्य मुखी भवन।

उपर्युक्त आठों दिशाओं पर पड़ने वाले भूखण्डों पर भवन निर्माण करते समय जितने अधिक से अधिक वास्तु सिद्धान्तों का पालन हो सके करना चाहिए। अब यहाँ आठों दिशाओं में पड़ने वाले भूखण्डों पर निर्माण करने पर होने वाली शुभाशुभता का विचार करेंगे।

1. पूर्व मुखी भवन का शुभाशुभ विचार

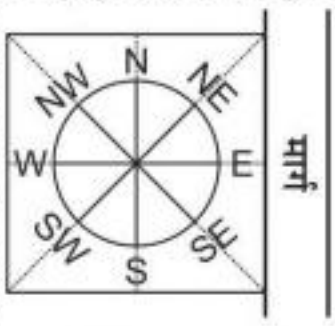

भूखण्ड के पूर्व दिशा में मार्ग हो तो भवन पूर्व मुखी अर्थात् पूर्वाभिमुख होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. भवन के पूर्व-उत्तर दिशाओं में रिक्त स्थान हो तो भवन स्वास्थ्य एवं अर्थ (धन) की दृष्टि से उन्नतिकारक है। वस्तुतः पूर्व, उत्तर या पूर्व-उत्तर दिशाओं में रिक्त स्थान अवश्य छोड़ना चाहिए। ऐसा करेंगे तो धन, वंश और पुत्र लाभ के साथ-साथ स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

2. भूखण्ड या भवन में पूर्व भाग नीचा हो तो भवन स्वामी स्वस्थ और साधन-सम्पन्न होगा। अतः पूर्व भाग नीचा रखने का प्रयास करें।

3. पूर्व व उत्तर दिशा रिक्त हो तो उत्तर दिशा के छोर में स्थित ईशान कोण लाभदायी होता है। पूर्व व उत्तर दिशा में दो फुट की बालकनी बनानी चाहिए। ऐसा करने पर पूर्व-उत्तर में रिक्त स्थान भी रह जाता है।

4. पूर्व दिशा में चारदीवारी के पड़ोस में स्थित भवन का स्वामी कोई निर्माण कराता है तो उस दीवार से अल्पतम चार अंगुल (लगभग 3 इंच) रिक्त स्थान छोड़कर चार इंची दीवार चार फुट ऊँची बनानी चाहिए।

5. पूर्व मुखी भवन में मुख्य द्वार के अतिरिक्त अन्य द्वार भी पूर्व मुखी रखने पर अत्यन्त शुभ फल प्राप्त होगा।

6. भवन में पूर्व दिशा या पूर्व-उत्तर (ईशान) कोण में कुँआ या हैंडपम्प या ट्यूबवैल या जलस्रोत का स्थान अवश्य बनाएँ।

7. पूर्व दिशा की चारदीवारी दक्षिण व पश्चिम दिशा की चार दीवारी से कम ऊँचाई में होनी चाहिए।

8. पूर्व दिशा में बरामदा अवनत रखने पर घर में स्वास्थ्य और यश की वृद्धि होती है। शान्ति और सौभाग्य का वास भी गृह में रहता है।

9. मुख्य द्वार पूर्व में हो, उत्तर दिशा में रिक्त स्थान न हो और भवन के अन्दर निर्माण वास्तु के अनुकूल हो तो शुभ फल मिलता है।

पूर्व मुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बेडरूम वाला आदर्श मानचित्र

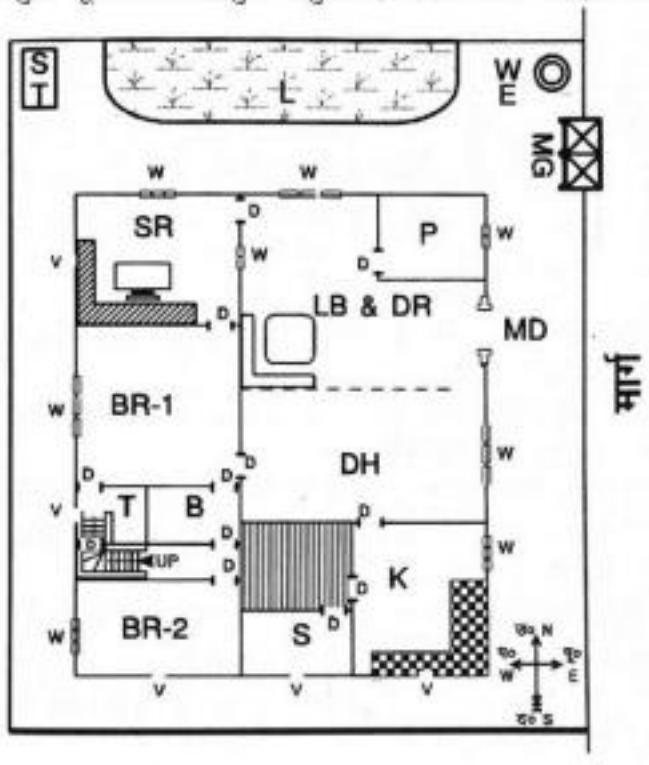

1. L–लॉन या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) पूर्व दिशा में, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) पूर्व दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR–अध्ययनकक्ष वायव्य कोण में पूजास्थल के पास में, 6. DR & LB–स्वागत कक्ष एवं लॉबी पूजा स्थल व अध्ययनकक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH–भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K–रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S–भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2–शयनकक्ष पश्चिम व नैऋत्य कोण में, 11. T & B–शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. ST–सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 13. D–द्वार, 14. V–रोशनदान (Ventilator), 15. W–खिड़की (Window) एवं 16. WE–कुँआ ईशान कोण में।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. पूर्व दिशा का स्थल, भवन का भाग या बरामदा ऊँचा न रखें। यदि रखेंगे तो आर्थिक तंगी के अतिरिक्त सन्तान अस्वस्थ एवं मन्दबुद्धि हो जायेगी।

2. पूर्व-उत्तर में रिक्त स्थान रखकर निर्माण नहीं करेंगे तो पुत्र नहीं होगा या सन्तान विकलांग होगी।

3. यदि पूर्व दिशा में मुख्य मार्ग से सटकर भवन बनायेंगे और पश्चिम में रिक्त स्थान रखेंगे तो भवन स्वामी रोगी व अल्पायु होगा।

4. भवन में आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) कोण में कोई मुख्य द्वार या अन्य द्वार न रखें। यदि ऐसा करेंगे तो मुकदमे, आर्थिक तंगी व चोर व अग्नि का भय बना रहेगा।

5. पूर्व भाग या ईशान कोण को अपवित्र न रखें। इस ओर कूड़ा, पत्थर या मिट्टी के टीले न बनाएँ। यदि ऐसा करेंगे तो धन और सन्तान की हानि होगी।

6. पूर्व दिशा रिक्त न हो और पश्चिम भाग भी अवनत हो तो नेत्र रोग, लकवा आदि से भवन स्वामी कष्ट में रहते हैं।

7. पूर्व मुखी भवन के चहुँ ओर चारदीवारी है या बना रहे हैं तो ध्यान रखें पूर्व-उत्तर की चारदीवारी दक्षिण-पश्चिम से नीची होनी चाहिए। मुख्य द्वार मार्ग से दिखना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो सन्तान हानि एवं अशुभ फल मिलेगा।

8. यदि भवन में किराएदार को रखना है तो स्वयं उन्नत भाग में रहें और किराएदार को अवनत भाग में रखें। किराएदार न हो तो अवनत भाग रिक्त न रखें उसे प्रयोग में लाएँ। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो अनेक अनचाही समस्याओं से घिर जायेंगे।

2. पश्चिम मुखी भवन का शुभाशुभ विचार

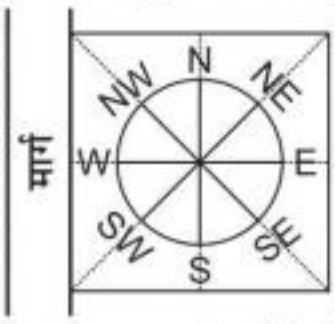

भूखण्ड के पश्चिम दिशा में मार्ग हो तो भवन पश्चिम मुखी अर्थात् पश्चिमाभिमुख होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. मुख्य मार्ग से सटकर मुख्य भवन बनाया जाए तो शुभ फल मिलते हैं।

2. मुख्य द्वार पश्चिम में हो और अन्य द्वार भी पश्चिम में हो तो शुभ फल मिलेगा।

3. भवन के पश्चिम मुखी भाग में ऊँचा चबूतरा एवं ऊँची दीवार का होना सुख-समृद्धि और यश प्राप्ति के लिए शुभ है।

4. पश्चिम दिशा में चारदीवारी ऊँची होना धनकारक है।

5. पश्चिम दिशा में घने वृक्ष लगाना शुभ है।

6. पश्चिम दिशा में कूड़ा, पत्थर व टीला आदि होने का भी शुभ फल ही मिलेगा।

पश्चिम मुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बेडरूम वाला आदर्श मानचित्र

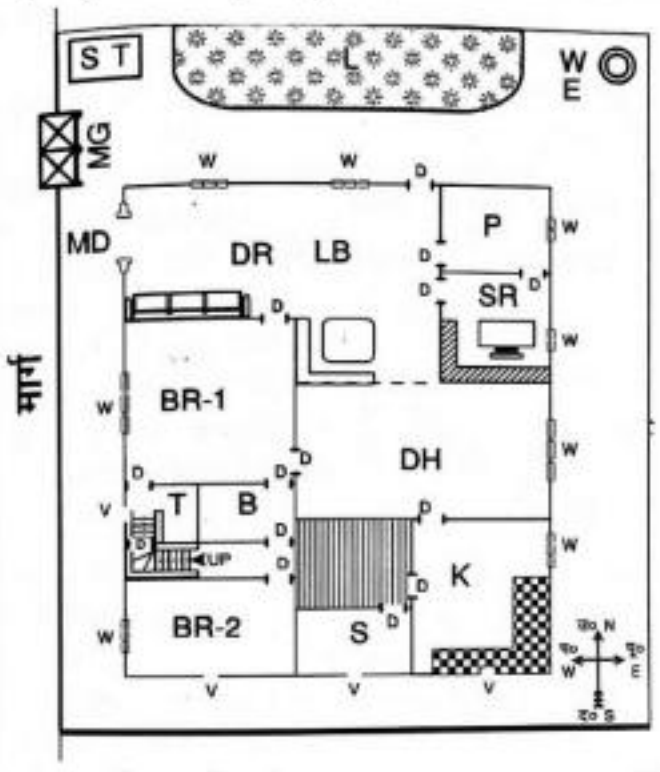

1. L–लॉन या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) पूर्व दिशा में, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) पूर्व दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR–अध्ययनकक्ष वायव्य कोण में पूजास्थल के पास में, 6. LB–लॉबी पूजा स्थल व

मई

जय भूधर | जय जयमल | जय चौथ | जय रावत | जय चाँद | जय जीत | जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

2016

जून 6 JUNE

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 ...

चित्र केवल परिचयार्थ : राजा हरिश्चन्द्र एवं रानी तारामती की सत्य निष्ठा से देवता भी नतमस्तक हो गए।

विक्रम संवत् 2073 | वीर निर्वाण संवत् 2542 | जय संवत् 221 | जैन पंचमारक संवत् 2538

वार					
रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 8 जून बुधवार प्रातः 7.45 बजे से 9 जून गुरुवार प्रातः 7.30 बजे तक	रोहिणी १२/३७ मिथुन २३/२९ **5** ज्येष्ठ वद ३०/१	पूर्वा फाल्गुनी ११/३४ कन्या १८/१२ **12** ज्येष्ठ सुद ८	ज्येष्ठा वृश्चिक **19** पाक्षिक पर्व ज्येष्ठ सुद १४	शतभिषा ८/५७ मीन २६/२५ **26** आषाढ वद ६
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	**शुभ दिन** 2, 6, 7, 8, 9, 24, 28 **अशुभ दिन** 1, 10, 17, 22, 25, 26, 27, 29	मृगसिरा १०/२७ मिथुन **6** ज्येष्ठ सुद २	उत्तरा फाल्गुनी १४/१४ कन्या **13** ज्येष्ठ सुद ९	ज्येष्ठा ६/०३ धनु ६/०३ **20** ज्येष्ठ सुद १५	पूर्वा भाद्रपद ८/११ मीन **27** आषाढ वद ७
मंगल TUE मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे	**पंचक** 24 जून शुक्रवार रात्रि 9.25 बजे से 28 जून मंगलवार प्रातः 5.39 बजे तक	आर्द्रा ८/४६ कर्क २५/४६ **7** ज्येष्ठ सुद ३	हस्त १७/१४ कन्या **14** ज्येष्ठ सुद १०	मूल ७/२८ धनु **21** आषाढ वद १	उत्तरा भाद्रपद ७/०५ मेष २९/३९ **28** आषाढ वद ८
बुध WED मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे	रेवती २२/४१ मेष २२/४१ **1** ज्येष्ठ वद ११	पुनर्वसु ७/४५ कर्क **8** ज्येष्ठ सुद ४	चित्रा २०/१९ तुला ६/४७ **15** ज्येष्ठ सुद १०	पूर्वाषाढा ८/२९ मकर १४/४१ **22** आषाढ वद २	अश्विनी २७/५६ मेष **29** आषाढ वद ९
गुरु THU मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे	अश्विनी २०/१९ मेष **2** ज्येष्ठ वद १२	पुष्य ७/३० कर्क **9** ज्येष्ठ सुद ५	स्वाती २३/१७ तुला **16** ज्येष्ठ सुद ११	उत्तराषाढा ९/०८ मकर **23** आषाढ वद ३	भरणी २६/०० मेष **30** आषाढ वद १०/११
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	भरणी १७/४४ वृष २३/०४ **3** ज्येष्ठ वद १३	आश्लेषा ८/०४ सिंह ८/०४ **10** ज्येष्ठ सुद ६	विशाखा २५/५६ वृश्चिक १९/१८ **17** ज्येष्ठ सुद १२	श्रवण ९/२५ कुंभ २१/२५ **24** आषाढ वद ४	**अमृत सिद्धि योग** 4 जून शनिवार दोपहर 3.06 बजे सूर्योदय तक 6 जून सोमवार सूर्योदय से प्रातः 10.27 तक
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	कृतिका १५/०६ वृष **4** पाक्षिक पर्व ज्येष्ठ वद १४	मघा ९/२७ सिंह **11** ज्येष्ठ सुद ७	अनुराधा २८/१२ वृश्चिक **18** ज्येष्ठ सुद १३	धनिष्ठा ९/२१ कुंभ **25** आषाढ वद ५	**अमृत सिद्धि योग** 9 जून गुरुवार, पुष्य, सूर्योदय से प्रातः 7.30 बजे तक

पच्चक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

जून	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	5.42	6.32	6.30	8.54
6	5.42	6.34	6.30	8.55
11	5.42	6.35	6.30	8.55
16	5.43	6.36	6.31	8.56
21	5.44	6.38	6.32	8.57
26	5.45	6.38	6.33	8.58
30	5.46	6.39	6.34	8.59

जैन पर्व

3. शांति जिन जन्म, शांति जिन मोक्ष, 4. शांति जिन दीक्षा, 9. धर्म जिन मोक्ष, 13. वासुपूज्य जिन च्यवन, 17. सुपार्श्व जिन जन्म, 18. सुपार्श्व जिन दीक्षा, 24. ऋषभ जिन च्यवन, 27. विमल जिन मोक्ष, 29. नमी जिन दीक्षा

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. अपरा एकादशी व्रत, पंचक समाप्ति, 4. शनैश्चर जयन्ती, 5. वट पूजनम्, 7. प्रताप जयन्ती, 12. दुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, 15. गंगा दशहरा व्रत, 16. निर्जला एकादशी व्रत, 17. प्रदोष, वट सावित्री व्रत, 20. कबीर जयन्ती, सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ, 21. आर्द्रा नक्षत्र प्रारंभ (गाज बीज होने पर अस्वाध्याय नहीं), 24. पंचक प्रारंभ, 28. पंचक समाप्ति, 30. योगिनी एकादशी व्रत

अवकाश

11. द्वितीय शनिवार

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त
4. पाक्षिक पर्व,
19. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

पद्मोदय वास्तु विज्ञान - 2

स्वागत कक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH–भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K–रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S–भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2–शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B–शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. DR–स्वागत कक्ष वायव्य कोण में भवन के मुख्यद्वार के पास, 13. ST–सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 14. D–द्वार, 15. V–रोशनदान (Ventilator), 16. W–खिड़की (Window) एवं 17. WE–कुँआ ईशान कोण में।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. मुख्य मार्ग से हटकर भवन न बनाएँ।
2. पश्चिम भाग नीचा चबूतरा, बरामदा या कुँआ आदि न लगवायें।
3. पश्चिम दिशा में तहखाना या बेसमेन्ट न बनाएँ। भवन के साथ नाला, गड्ढा या भूमिगत पानी की टंकी या सेप्टिक टैंक न बनवाएँ।
4. पश्चिम मुखी भूखण्ड न खरीदें यदि उसमें गहरी खाई, खड्डे आदि हों जिन्हें भर पाना असंभव या कठिन हो।
5. दक्षिण दिशा की ओर मुख्य द्वार बनाना हो तो उस भूखण्ड को नाप के अनुसार नौ भाग में बराबर-बराबर बाँट लें फिर पश्चिम से गिनने पर 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9वें भाग पर मुख्य द्वार न बनाएँ।
6. यह भली भाँति जान लें कि वास्तु के विपरीत कोई भी निर्माण कार्य अपने भूखण्ड पर न करें।

3. उत्तर मुखी भवन का शुभाशुभ विचार

मार्ग

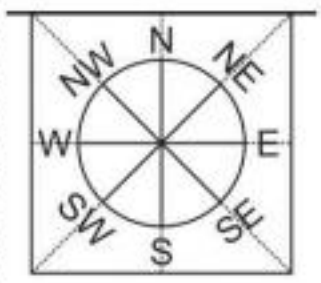

भूखण्ड के उत्तर दिशा में मार्ग हो तो भवन उत्तरमुखी अर्थात् उत्ताभिमुख होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. उत्तर दिशा का विशेष प्रभाव स्त्री व धन पर पड़ता है। वस्तुत: निर्माण करते समय कक्षों या कमरों में नीचे ढलवाँ बरामदे लाभप्रद हैं।
2. उत्तर दिशा में मुख्य द्वार वाले भूखण्ड या भवन में उत्तरी दिशा की चारदीवारी गृह निर्माण करने के उपरान्त बनवानी चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो धन हानि व बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
3. उत्तरमुखी भूखण्ड में पूर्व में रिक्त स्थल न हो और कोण पर स्थित ईशान शुभदायी है। यदि भूखण्ड का ईशान कट रहा हो तो पश्चिममुखी गृह या मार्ग के पश्चिमी दिशा वाला गृह भी होता है।
4. यदि भवन में किराएदार हो तो स्वामी को उच्च भाग में निवास करना चाहिए।
5. बरामदा और भवन का खाली भाग नीचा रखने पर पारिवारिक सुख और धन लाभ से सन्तोष होगा।
6. उत्तरी क्षेत्र में दक्षिण क्षेत्र की अपेक्षा रिक्त स्थान अधिक रखने पर गृह समस्त सुखों का पर्याय बन जाता है।
7. समस्त प्रकार के जल का प्रवाह या बहाव उत्तर से ईशान की ओर रखना शुभफलदायी है।
8. उत्तर दिशा में बरामदा या चबूतरा जो भी बनाएँ उन्हें नीचा ही रखें क्योंकि ऐसा करने पर उन्नति, धन व यश की प्राप्ति होगी।
9. भवन में रसोई आग्नेय कोण में और पूजा स्थल ईशान कोण में अवश्य बनाएँ। ऐसा करना गृह की सुख-शान्ति के लिए उत्तम है। भवन के अन्य कक्षों का निर्माण भी वास्तु के अनुरूप करना चाहिए।

उत्तर मुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बेडरूम वाला आदर्श मानचित्र

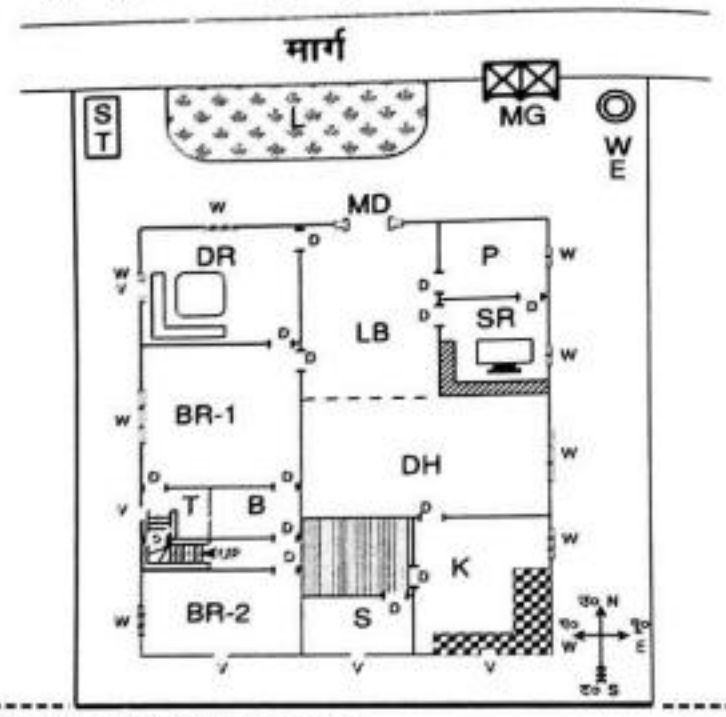

1. L–लॉन या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) उत्तर दिशा में, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) उत्तर दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR–अध्ययनकक्ष ईशान कोण में पूजास्थल के पास में, 6. LB–लॉबी पूजा स्थल व स्वागत कक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH–भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K–रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S–भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2–शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B–शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. DR–स्वागत कक्ष वायव्य कोण में भवन के मुख्यद्वार के पास, 13. ST–सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 14. D–द्वार, 15. V–रोशनदान (Ventilator), 16. W–खिड़की (Window) एवं 17. WE–कुँआ ईशान कोण में।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. दक्षिण-पश्चिम में रिक्त स्थान अधिक छोड़ना हानिकारक है।
2. उत्तरी भाग में पड़ने वाले बरामदे या चबूतरे ऊँचे न बनाएँ। यदि बनायेंगे तो धन हानि और स्त्री अस्वस्थ रहेगी। पारिवारिक सुख भी नहीं मिल पायेगा या सन्तुष्ट नहीं होंगे।
3. दक्षिण भाग में खाली स्थान रखने और उत्तर भाग में खाली स्थान न छोड़ने पर गृह उजड़ जायेगा, बिक जायेगा या दूसरों की सम्पत्ति बन जायेगा।
4. उत्तर-पूर्व या ईशान कोण में टीले, कूड़ा, गोबर या बेकार सामान न रखें, यदि रखेंगे तो आर्थिक तंगी व धन हानि से परेशान रहेंगे।
5. वायव्यमुखी द्वार भवन में न लगायें, यदि लगायेंगे तो चोरों तथा अग्नि का भय बना रहेगा।

4. दक्षिणमुखी भवन का शुभाशुभ विचार

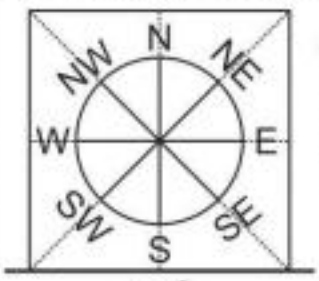

मार्ग

भूखण्ड के दक्षिण दिशा में मार्ग हो तो भवन दक्षिणमुखी अर्थात् दक्षिणाभिमुख होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. भवन का सामने का भाग जो दक्षिण में पड़े उसे ऊँचा बनाना चाहिए। ऐसा करने पर गृह में रहने वाले लोग स्वस्थ एवं सम्पन्न होते हैं।
2. दक्षिणामुखी भूखण्ड पर मार्ग की ओर से भूखण्ड के सिरे से ही भवन का निर्माण करना चाहिए।
3. दक्षिणामुखी भूखण्ड पर बने भवन का जल उत्तर दिशा से निकास हो तो स्त्रियों को स्वास्थ्य लाभ के साथ धन लाभ हो। यदि उत्तर दिशा से जल का निकास न हो सके तो पूर्व दिशा से जल का निकास करना चाहिए। ऐसा करने पर पुरुष यशस्वी व स्वस्थ होंगे।
4. दक्षिण दिशा में भवन के सम्मुख टीले, पहाड़ी और कोई ऊँचा भवन हो तो शुभ फलदायी है।
5. भवन निर्माण करते समय अन्य महत्त्वपूर्ण वास्तु सिद्धान्तों को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिए।

दक्षिणमुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बैडरूम वाला आदर्श मानचित्र

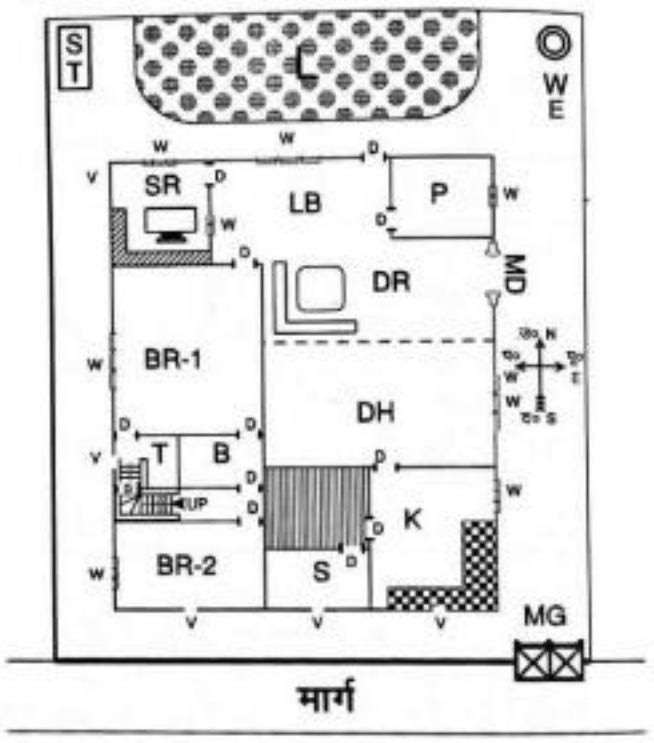

1. L–लॉन या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) दक्षिण दिशा में, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) पूर्व दिशा में पूजा स्थल के पास, 4. P–पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR–अध्ययनकक्ष वायव्य कोण में, 6. LB–लॉबी पूजा

कुशल–हर्ष–भगवान–सूर्य–राज–नथमल्लजी। चौथ – बख्त रावत चाँद नव स्वामी नामी नमूँ।।
जय–गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय–जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

जून

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चाँद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

2016
जुलाई 7 JULY

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 90, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 021

चित्र केवल परिचयार्थ : धनाकुमार के सत्य-शील की अडिगता से देवी ने नतमस्तक हो पुरस्कार प्रदान किया।

विक्रम संवत् 2073 | वीर निर्वाण संवत् 2542 | जय संवत् 221 | जैन पंचमारक संवत् 2538-39

रवि SUN राहूकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	आर्द्रा २६/४८ मिथुन **31** श्रावण वद १२/१३	मृगसिरा २०/०४ मिथुन **3** आषाढ वद १४	उत्तरा फाल्गुनी २२/०४ कन्या **10** आषाढ सुद ६	ज्येष्ठा १३/४५ धनु **17** आषाढ सुद १३	पूर्वा भाद्रपद १३/३७ मीन **24** श्रावण वद ५
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	**पुष्य नक्षत्र** 5 जुलाई मंगलवार सायं 5.28 बजे से 6 जुलाई बुधवार सायं 4.59 बजे तक	आर्द्रा १८/३२ मिथुन **4** आषाढ वद ३०	हस्त २४/४९ कन्या **11** आषाढ सुद ७	मूल १५/०० धनु **18** आषाढ सुद १४	उत्तरा भाद्रपद १२/२७ मीन **25** श्रावण वद ६
मंगल TUE मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे	**शुभ दिन** 2, 10, 12, 14, 15, 23 **अशुभ दिन** 1, 4, 5, 9, 22, 27, 28	पुनर्वसु १७/२८ कर्क **5** आषाढ सुद १	चित्रा २७/५० तुला **12** आषाढ सुद ८	पूर्वाषाढा १५/४४ मकर **19** चातुर्मासिक आषाढ सुद १५	रेवती ११/०७ मेष **26** श्रावण वद ७
बुध WED मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे	**पंचक** 21 जुलाई रात्रि 3.39 बजे से 26 जुलाई मंगलवार पूर्वाह्न 11.07 बजे तक	पुष्य १६/५९ कर्क **6** आषाढ सुद २	स्वाती तुला **13** आषाढ सुद ९	उत्तराषाढा १६/०० मकर **20** श्रावण वद १	अश्विनी ९/४० मेष **27** श्रावण वद ८
गुरु THU मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे	**अमृत सिद्धि योग** 2 जुलाई शनिवार सूर्योदय से रात्रि 9.56 तक 26 जुलाई मंगल प्रातः 11.07 से सूर्योदय तक	आश्लेषा १७/११ सिंह **7** आषाढ सुद ३	स्वाती ६/५० वृश्चिक **14** आषाढ सुद १०	श्रवण १५/५१ कुंभ **21** श्रावण वद २	भरणी ८/०९ वृष **28** श्रावण वद ९
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	कृतिका २३/५७ वृष **1** आषाढ वद १२	मघा १८/०७ सिंह **8** आषाढ सुद ४	विशाखा ९/३६ वृश्चिक **15** आषाढ सुद ११	धनिष्ठा १५/२२ कुंभ **22** श्रावण वद ३	कृतिका ६/३८ वृष **29** रोहिणी २९/१० श्रावण वद १०
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	रोहिणी २१/५६ वृष **2** आषाढ वद १३	पूर्वा फाल्गुनी १९/४६ कन्या **9** आषाढ सुद ५	अनुराधा ११/५६ वृश्चिक **16** आषाढ सुद १२	शतभिषा १४/३६ कुंभ **23** श्रावण वद ४	मृगसिरा २७/५१ मिथुन **30** श्रावण वद ११

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

जुलाई	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	5.47	6.39	6.35	9.00
6	5.48	6.40	6.36	9.01
11	5.49	6.40	6.37	9.01
16	5.51	6.39	6.39	9.03
21	5.52	6.39	6.40	9.03
26	5.53	6.38	6.41	9.04
31	5.54	6.36	6.42	9.04

जैन पर्व

7. जयगच्छीय श्रुताचार्य स्वामी चौथ स्मृति दिवस, 10. महावीर जिन च्यवन, 12. अरिष्टनेमि जिन मोक्ष, 18. वासुपूज्य जिन मोक्ष, 19. जैन पंचमारक का 2538वां संवत्सर समाप्त, चातुर्मास प्रारंभ, 20. जैन पंचमारक का 2539वां संवत्सर प्रारंभ, 22. श्रेयांस जिन मोक्ष, 26. अनन्त जिन च्यवन, आचार्य श्री जीतमलजी म.सा. का जन्म दिवस, 27. नमी जिन जन्म, 28. कुंथु जिन च्यवन

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

2. प्रदोष, 4. सोमवती अमावस्या, 15. देवशयनी एकादशी व्रत, 17. प्रदोष, 19. वायु परीक्षा, व्यास पूजा, गुरू पूर्णिमा, 21. पंचक प्रारंभ, 26. पंचक समाप्ति, 30. कामिका एकादशी व्रत, 31. प्रदोष

अवकाश

9. द्वितीय शनिवार
19. गुरु पूर्णिमा

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

सामायिक: 4. पाक्षिक पर्व, 19. चातुर्मासिक

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

पद्मोदय वास्तु विज्ञान - 3

स्थल व अध्ययन कक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH–भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K–रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S–भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR, व BR₂–शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B–शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. DR–स्वागत कक्ष उत्तर दिशा में भवन के मुख्यद्वार के पास, 13. ST–सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 14. D–द्वार, 15. V–रोशनदान (Ventilator), 16. W–खिड़की (Window) एवं 17. WE–कुँआ ईशान कोण में।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. दक्षिण भाग कभी भी नीचा न रखें। यदि रखेंगे तो घर की स्त्रियाँ अस्वस्थ, धन हानि और आकस्मिक मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

2. दक्षिणी भाग में कभी भी कुँआ या जल के लिए किसी प्रकार की बोरिंग न करायें। यदि करायेंगे तो धनहानि, दुर्घटना व आकस्मिक मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है।

3. दक्षिण भाग में बनने वाले कक्षों के बरामदे या फर्श नीचे न बनाएँ। प्रयास करें इस भाग में जो भी निर्माण करें वह पूर्व, उत्तर व ईशान दिशा की अपेक्षा ऊँचा हो।

4. दक्षिण द्वार मुख्य हो तो प्रयास करें कि अन्य कक्षों के द्वार दक्षिण की ओर न हों और पूर्व, उत्तर दिशा की ओर भी द्वार अवश्य हों। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो शत्रु भय, कष्ट और बाधाएँ आयेंगी।

5. दक्षिण भाग में खाली स्थान न छोड़ें, यदि छोड़ें तो नाममात्र को हो।

5. ईशान मुखी भवन का शुभाशुभ विचार

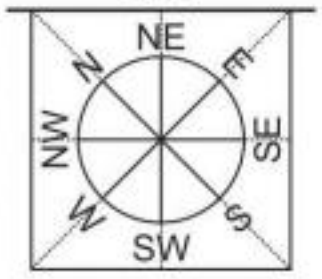

भूखण्ड के ईशान दिशा में मार्ग हो तो भवन ईशानमुखी अर्थात् ईशान्यभिमुख होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. ईशानमुखी भूखण्ड ऐश्वर्य, लाभ, वंश वृद्धि, बुद्धिमान सन्तान और शुभ फलों को देने वाला है। ऐसे भूखण्ड पर निर्माण कार्य करते समय ईशान की रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए ध्यान रखें कि अन्य दिशाओं विशेषकर दक्षिण, पश्चिम से ऊँचा न हो। ईशान कटा या ढका भी नहीं होना चाहिए। प्रयास करें कि प्रत्येक कक्ष का ईशान न घटे।

2. ईशान नीचा होना चाहिए। यदि ऐसा होगा तो सर्वप्रकार से सुख-सम्पन्नता व ऐश्वर्य लाभ होगा।

3. ईशान कोण बन्द न करें न कोई भारी वस्तु रखें। यदि ईशान मुखी भूखण्ड में आगे का भाग खाली रख सकें तो अत्यन्त शुभ होगा।

4. ईशान मुखी भूखण्ड पर ईशान की ओर ही आने-जाने का द्वार बनाएँ

5. ईशान के हिस्से को साफ रखें। यहाँ पर कूड़ा-करकट, गन्दगी आदि न डालें। झाड़ू भी न रखें।

6. ईशान मुखी भूखण्ड के सम्मुख नदी, नाला, तालाब, नहर तथा कुँए या नल का होना घर की वृद्धि एवं धन-सम्पत्ति के लिए शुभ है।

7. घर का जल ईशान दिशा से बाहर निकालें। फर्श का ढलाव भी ईशान कोण की ओर रखें।

ईशानमुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बैडरूम वाला आदर्श मानचित्र

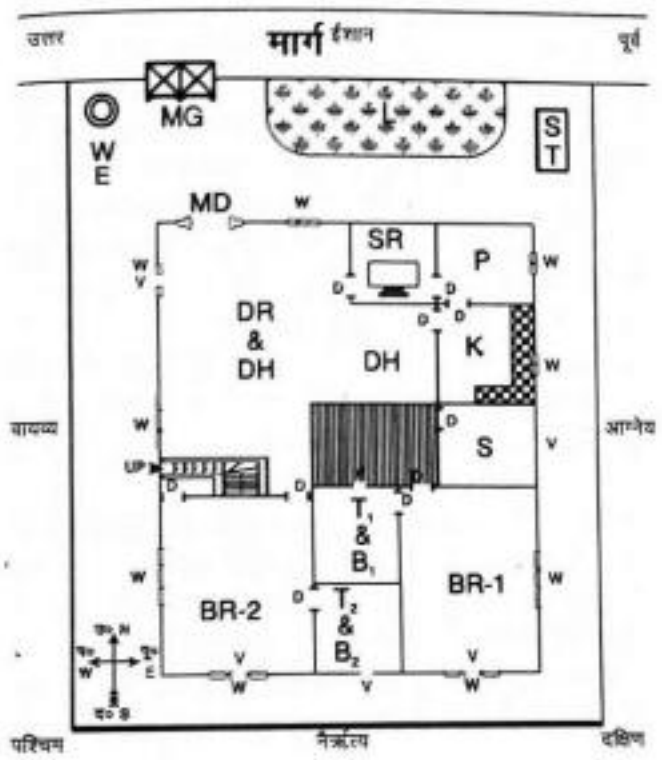

1. L–लॉन या बगीचा ईशान दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) ईशान दिशा में उत्तर कोण पर, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) ईशान दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान दिशा में पूर्ण कोण पर, 5. SR–अध्ययनकक्ष ईशान दिशा में पूजा स्थल के पास, 6. DR & DH–स्वागत कक्ष व भोजनकक्ष संयुक्त रूप में ईशान दिशा में, 7. K–रसोईघर आग्नेय दिशा में, 8. S–भण्डारगृह (Store) रसोईघर के बराबर आग्नेय दिशा में, 9. BR, व BR₂–शयनकक्ष नैर्ऋत्य दिशा में, 10. T₁ & B₁ व T₂ & B₂–शौचालय व स्नानगृह शयनकक्ष के साथ नैर्ऋत्य दिशा में, 11. ST–सैप्टिक टैंक ईशान दिशा में उत्तर कोण की ओर, 12. WE–कुँआ ईशान दिशा में पूर्व की ओर, 13. D–द्वार, 14. V–रोशनदान, 15. W–खिड़की।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. ईशान दिशा में इस प्रकार निर्माण न करें जिससे वह ऊँचा हो जाए। यदि ऊँचा ईशान रखेंगे तो धनहानि होने के कारण कंगाल हो जायेंगे।

2. ईशान दिशा घटाएँ भी नहीं। ईशान का घटना भी अशुभ है। ईशान घटाने पर सन्तान सुख में कमी व कष्ट रहता है। ईशान कोण या दिशा में ऐसा निर्माण करें कि वो बढ़ा हुआ लगे।

3. भवन के चारों तरफ की चार दीवारी बनायें तो ईशान दिशा या पूर्व, उत्तर की ओर ऊँची न रखें।

4. ईशान दिशा में भवन के सम्मुख ऊँचे टीले या ऊँचा निर्माण नहीं होना चाहिए। यदि है तो धन व सन्तान हानि होगी।

5. ईशान दिशा में कूड़ा-करकट या अन्य वस्तुओं का ढेर न लगाएँ। यदि ईशान गन्दा रखेंगे तो आयु क्षीण हो जायेगी और अनेक कष्ट झेलने पड़ेंगे।

6. ईशान कोण में रसोईघर न रखें वरना घर में अशान्ति, कलह और धन हानि की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने लगेंगी।

7. ईशान को कभी दूषित न करें वरना जीवन में असुविधा, असफलता, निराशा और कष्ट झेलने पड़ेंगे।

6. आग्नेय मुखी भवन का शुभाशुभ विचार

भूखण्ड की आग्नेय दिशा में मार्ग हो तो भवन आग्नेय मुखी अर्थात् आग्नेयाभिमुख होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

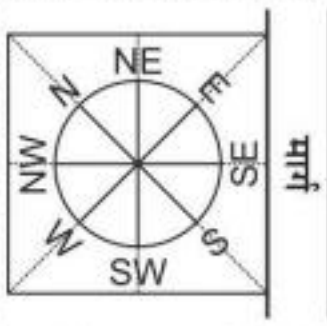

शुभता हेतु अपनाएँ

1. आग्नेय दिशा वायव्य और ईशान से नीचे नहीं होनी चाहिए जबकि नैर्ऋत्य से नीचे होनी चाहिए। आग्नेय नैर्ऋत्य से ऊँची नहीं होनी चाहिए जबकि ईशान व वायव्य से ऊँची होनी चाहिए।

2. आग्नेय दिशा में रसोईघर बनाना शुभ और सुखदायक है।

3. ईशान में उत्तर की ओर सैप्टिक टैंक बनाना शुभ है। इसी प्रकार ईशान दिशा में पूर्व कोण में कुँआ बनाना शुभ है।

4. आग्नेय दिशा को पूर्णतः बन्द न करें। पूर्णतः बन्द करने पर विकास रुक जाता है और दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है।

5. आग्नेय दिशा में अग्नि सम्बन्धी कार्य करने व आग्नेय को ठीक रखने पर स्वास्थ्य ठीक रहता है और हर प्रकार से शुभता रहती है।

आग्नेयमुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बैडरूम वाला आदर्श मानचित्र

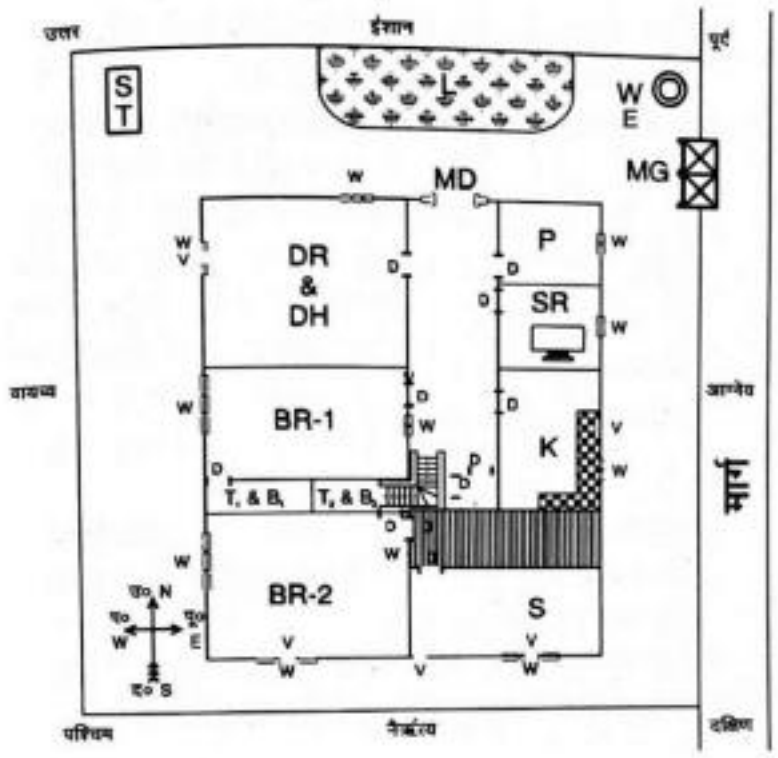

1. L–लॉन या बगीचा ईशान दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) ईशान दिशा में पूर्व कोण पर, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) ईशान दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान दिशा में पूर्ण कोण पर, 5. SR–अध्ययनकक्ष ईशान दिशा में पूजा स्थल के पास, 6. DR & DH–स्वागत कक्ष व भोजनकक्ष संयुक्त रूप में ईशान दिशा में उत्तर कोण

कुशल–हर्ष–भगवान–सूर्य–राज–नथमल्लजी। चौथ – बख्त रावत चाँद नय स्वामी नामी नमूँ।।

जय–गच्छ के श्रृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय–जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चाँद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

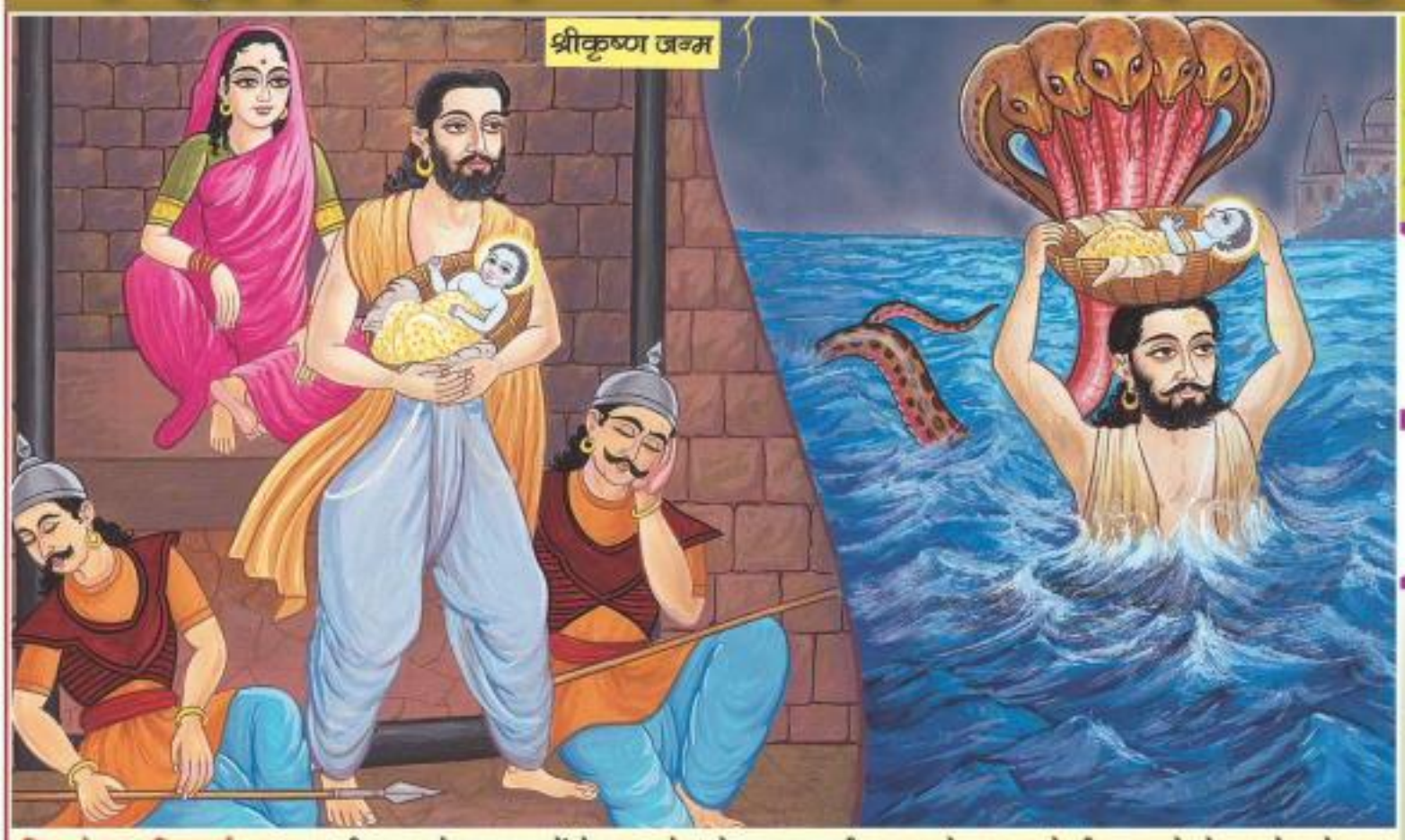

चित्र केवल परिचयार्थ : नवजात श्रीकृष्ण को कारागार में से मथुरा ले जाते हुए। उफनती यमुना को पार करके श्रीकृष्ण को गोकुल ले जाते हुए।

2016 अगस्त 8 AUGUST

विक्रम संवत् 2073 · वीर निर्वाण संवत् 2542 · जय संवत् 221 · जैन पंचमारक संवत् 2539

वार					
रवि SUN (राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे)	पुष्य नक्षत्र: 2 अगस्त मंगलवार सूर्योदय से रात्रि 1.51 बजे तक 29 अगस्त सोमवार प्रातः 8.59 से 30 अगस्त मंगलवार प्रातः 9.10 तक	उत्तरा फाल्गुनी ६/२३, कन्या, **7**, श्रावण सुद ५	मूल २३/४५, धनु, **14**, श्रावण सुद ११	उत्तरा भाद्रपद १८/४४, मीन, **21**, भाद्रपद वद ३/४	आर्द्रा ९/१२, कर्क २७/००, **28**, भाद्रपद वद ११
सोम MON (प्रातः 7.30 से 9.00 बजे)	पुनर्वसु २६/०६, कर्क २०/१५, **1**, श्रावण वद १४	हस्त ८/५३, तुला २२/१७, **8**, श्रावण सुद ६	पूर्वाषाढा २४/३१, धनु, **15**, श्रावण सुद १२	रेवती १६/५८, मेष १६/५८, **22**, भाद्रपद वद ५	पुनर्वसु ८/५९, कर्क, **29**, भाद्रपद वद १२
मंगल TUE (मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे)	पुष्य २५/५१, कर्क, **2**, पाक्षिक प्रति., श्रावण वद ३०	चित्रा ११/४५, तुला, **9**, श्रावण सुद ६	उत्तराषाढा २४/३८, मकर ६/३५, **16**, श्रावण सुद १३	अश्विनी १५/१२, मेष, **23**, भाद्रपद वद ६	पुष्य ९/१०, कर्क, **30**, पर्युषण प्रारंभ, भाद्रपद वद १३
बुध WED (मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे)	आश्लेषा २६/०७, सिंह २६/०७, **3**, श्रावण सुद १	स्वाती १४/४६, तुला, **10**, श्रावण सुद ७	श्रवण २४/११, मकर, **17**, पाक्षिक प्रति., श्रावण सुद १४	भरणी १३/३२, वृष १९/०९, **24**, भाद्रपद वद ७	आश्लेषा ९/४८, सिंह ९/४८, **31**, पाक्षिक प्रति., भाद्रपद वद १४
गुरु THU (मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे)	मघा २६/५७, सिंह, **4**, श्रावण सुद २	विशाखा १७/४२, वृश्चिक १०/५९, **11**, श्रावण सुद ८	धनिष्ठा २३/१७, कुंभ ११/४७, **18**, श्रावण सुद १५	कृतिका १२/०३, वृष, **25**, भाद्रपद वद ८	शुभ दिन: 7, 12, 14, 16, 18, 19, 23, 24, 30; अशुभ दिन: 6, 13, 15, 20, 21, 27
शुक्र FRI (प्रातः 10.30 से 12.00 बजे)	पूर्वा फाल्गुनी २८/२३, सिंह, **5**, श्रावण सुद ३	अनुराधा २०/१७, वृश्चिक, **12**, श्रावण सुद ९	शतभिषा २२/००, कुंभ, **19**, भाद्रपद वद १	रोहिणी १०/४७, मिथुन २३/१६, **26**, भाद्रपद वद ९	पंचक: 18 अगस्त गुरुवार पूर्वाह्न 11.47 बजे से 22 अगस्त मंगलवार अपराह्न 4.58 बजे तक
शनि SAT (प्रातः 9.00 से 10.30 बजे)	उत्तरा फाल्गुनी, कन्या १०/४०, **6**, श्रावण सुद ४	ज्येष्ठा २२/२०, धनु २२/२०, **13**, श्रावण सुद १०	पूर्वा भाद्रपद २०/२७, मीन १४/४९, **20**, भाद्रपद वद २	मृगसिरा ९/४९, मिथुन, **27**, भाद्रपद वद १०	अमृत सिद्धि योग: 7 अगस्त रविवार प्रातः 6.23 से आगामी सूर्योदय तक। 23 अगस्त मंगलवार, अश्विनी, सूर्योदय से अपराह्न 3.12 तक।

पच्चक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

अगस्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	5.55	6.36	6.43	9.05
6	5.56	6.34	6.44	9.05
11	5.56	6.32	6.44	9.05
16	5.57	6.29	6.45	9.05
21	5.58	6.27	6.46	9.05
26	5.58	6.24	6.46	9.04
31	5.58	6.20	6.46	9.03

जैन पर्व

4. सुमति जिन च्यवन, 7. अरिष्टनेमि जिन जन्म, 8. अरिष्टनेमि जिन दीक्षा, 11. पार्श्व जिन मोक्ष, 14. आचार्य श्री शुभचन्द्रजी म.सा. का जन्म दिवस, 17. जयगच्छीय सप्तम पट्टधर आचार्य भीकमचंदजी म.सा. जन्म जयन्ती, स्वामी हरक स्वामी पद प्रदान दिवस, मरुधर केसरी जन्म जयन्ती, 18. मुनि सुव्रत जिन च्यवन, रक्षा बंधन, 24. शांति जिन च्यवन, चन्द्रप्रभ जिन मोक्ष, सुपार्श्व जिन च्यवन, 30. पर्युषण

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

2. हरियाली अमावस्या, 5. श्रावण की तीज, 7. नाग पंचमी, 10. तुलसी जयन्ती, 14. पवित्रा एकादशी व्रत, 15. स्वतन्त्रता दिवस, प्रदोष, 18. पंचक प्रारंभ, रक्षा बंधन, 22. पंचक समाप्ति, 25. जन्माष्टमी, 26. गोगा नवमी, 29. प्रदोष

अवकाश

13. द्वितीय शनिवार, 15. स्वतन्त्रता दिवस, 18. रक्षा बंधन, 25. जन्माष्टमी

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

2. पाक्षिक पर्व, 17. पाक्षिक पर्व, 30. पर्युषण प्रारंभ, 31. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

पद्मोदय वास्तु विज्ञान - 4

पर, 7. K–रसोईघर आग्नेय दिशा में, 8. S–भण्डारगृह (Store) नैर्ऋत्य दिशा में उत्तर कोण पर, 9. BR, व BR_2–शयनकक्ष वायव्य दिशा में, 10. T, & B, व T_2 & B_2–शौचालय व स्नानगृह शयनकक्ष के साथ संयुक्त रूप में दोनों के मध्य, 11. ST–सैप्टिक टैंक ईशान दिशा में उत्तर कोण की ओर, 12. WE–कुँआ ईशान दिशा में पूर्व की ओर, 13. D–द्वार, 14. V–रोशनदान एवं 15. W–खिड़की।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. कुँआ आग्नेय दिशा में न बनाएँ। यदि बनायेंगे तो अनेक बाधाएँ, कष्ट व अशुभता का सामना करना पड़ेगा। विकास अवरुद्ध हो जायेगा।

2. मुख्य द्वार नैर्ऋत्य दिशा में न बनाएँ। ऐसा करेंगे तो चोरी व धन हानि का भय रहेगा।

3. आग्नेय क्षेत्र नैर्ऋत्य व ईशान से नीचा न बनाएँ, यदि बनायेंगे तो दुर्घटना, शत्रुता और मानसिक विकार से परेशान रहेंगे।

4. आग्नेय क्षेत्र में जल सम्बन्धी कार्यों की स्थापना न करें। यदि करेंगे तो स्त्री और सन्तान को कष्ट हो। घर में वाद-विवाद और सन्तान का क्षय हो।

7. नैर्ऋत्य मुखी भवन का शुभाशुभ विचार

भूखण्ड की नैर्ऋत्य दिशा में मार्ग हो तो भवन नैर्ऋत्य मुखी होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभ पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. नैर्ऋत्य दिशा सदैव ऊँची एवं भारी बनाएँ। इस दिशा में भवन का भाग ऊँचा व भारी रखें जिससे अन्य दिशाओं का जल इस ओर न आए।

2. नैर्ऋत्य दिशा शुद्ध रखने पर ही भाग्य वृद्धि होगी।

3. यदि भवन के स्वामी ने ईशान और नैर्ऋत्य दिशा को शुद्ध कर लिया तो समझ लें उसने भाग्य और भोग के सभी साधन जुटाने का प्रबन्ध कर लिया है।

4. ऐसा नैर्ऋत्य मुखी भूखण्ड कदापि नहीं खरीदना चाहिए जिसमें खाई, खड्डा या भराव की आवश्यकता हो।

5. नैर्ऋत्य दिशा में भूखण्ड के आसपास ऊँचे वृक्ष हों तो उन्हें कटवाना नहीं चाहिए। यदि कटवायेंगे तो धन हानि से ग्रस्त रहेंगे।

6. नैर्ऋत्य दिशा में ऊँचा चबूतरा बनाना उन्नतिकारक है।

7. नैर्ऋत्य दिशा का भाग ऊँचा रखना यश, समृद्धि व धन कारक है।

8. मुख्य द्वार पश्चिम में और कुँआ ईशान दिशा में बनाना शुभ है।

नैर्ऋत्यमुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बैडरूम वाला आदर्श मानचित्र

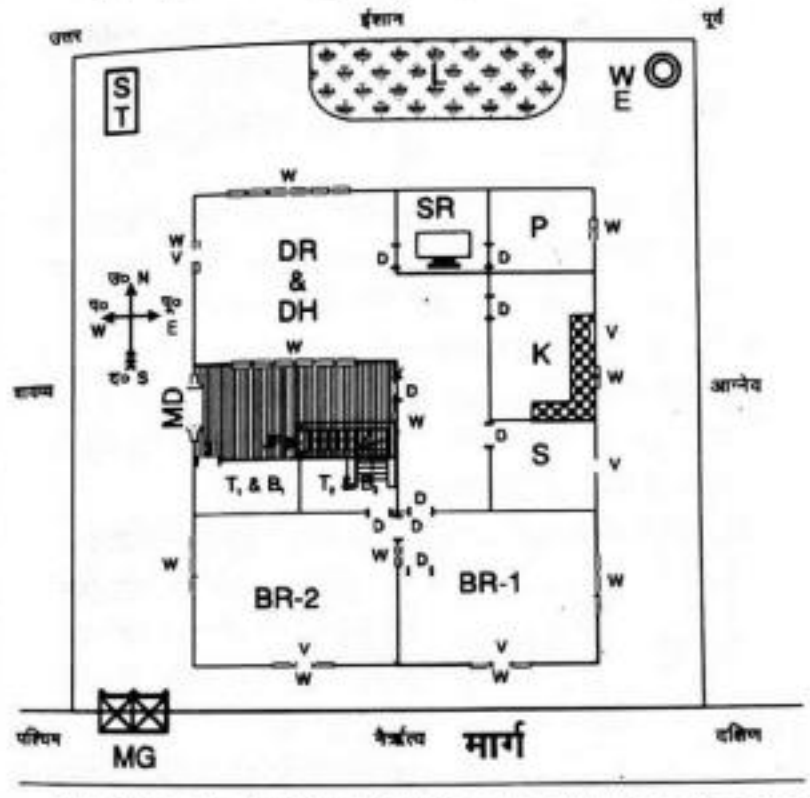

1. L–लॉन या बगीचा ईशान दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) नैर्ऋत्य दिशा में, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) वायव्य दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान दिशा में पूर्ण कोण पर, 5. SR–अध्ययनकक्ष ईशान दिशा में पूजा स्थल के पास, 6. DR & DH–स्वागत कक्ष व भोजनकक्ष संयुक्त रूप में ईशान दिशा में उत्तर कोण पर, 7. K–रसोईघर आग्नेय दिशा में, 8. S–भण्डारगृह (Store) नैर्ऋत्य दिशा में उत्तर कोण पर, 9. BR, व BR_2–शयनकक्ष वायव्य दिशा में, 10. T, & B, व T_2 & B_2–शौचालय व स्नानगृह शयनकक्ष के साथ संयुक्त रूप में दोनों के मध्य, 11. ST–सैप्टिक टैंक ईशान दिशा में उत्तर कोण की ओर, 12. WE–कुँआ ईशान दिशा में पूर्व की ओर, 13. D–द्वार, 14. V–रोशनदान एवं 15. W–खिड़की।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. नैर्ऋत्य दिशा को नीचा कदापि न रखें, यदि रखें तो विकार, अकाल मृत्यु एवं व्याधियों के शिकार होंगे।

2. नैर्ऋत्य दिशा में लगे हुए ऊँचे वृक्ष कटवाने पर हानि और धन-यश में कमी आती है।

3. नैर्ऋत्य दिशा स्वयं के व्यवहार और आचार-विचार के लिए उत्तरदायी होती है। इस दिशा में किसी प्रकार का वास्तु-दोष रखने पर अकाल मृत्यु को बुलावा देना है।

4. नैर्ऋत्य दिशा में स्नानागार व शौचालय न बनाएँ।

5. नैर्ऋत्य दिशा में मुख्य भवन का प्रवेश द्वार न बनाएँ। यदि बनायेंगे तो अपयश, जेल, दुर्घटना, आत्महत्या तक के शिकार होने की सम्भावना बनेगी।

8. वायव्यमुखी भवन का शुभाशुभ विचार

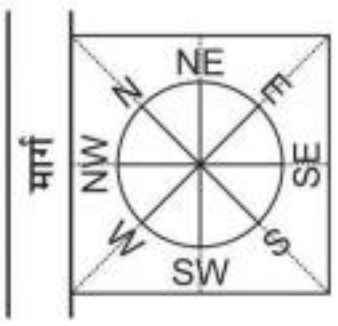

भूखण्ड की वायव्य दिशा में मार्ग हो तो भवन वायव्य मुखी होगा। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय वास्तु सिद्धान्तों के पालन के अतिरिक्त अधोलिखित शुभाशुभता पर भी विचार करना चाहिए।

शुभता हेतु अपनाएँ

1. वायव्य कोण को दोष रहित रखें नहीं तो शत्रु अधिक होंगे। वायव्य शुद्ध होने पर यश, प्रतिष्ठा और क्षेत्र का विस्तार होता है।

2. वायव्य दिशा नैर्ऋत्य तथा आग्नेय से नीचा रखने पर शुभ फल करता है।

3. वायव्य को ईशान से नीचा कदापि न रखें। यदि रखेंगे तो शत्रुता और रोग से ग्रस्त रहेंगे। वस्तुतः वायव्य आग्नेय से नीचा और ईशान से ऊँचा रखें।

4. वायव्य दिशा में कुँआ या गड्ढा न बनवाएँ।

5. वायव्य में शौचालय बना सकते हैं परन्तु सैप्टिक टैंक उत्तर कोण में बनवाएँ।

6. घर का जल उत्तर कोण से बाहर निकालें।

7. वायव्य की चारदीवारी को गोल भी बना सकते हैं।

अशुभता से बचाव हेतु त्याज्य दें

1. उत्तर वायव्य मार्ग में मार्ग वेध न हो।

2. वायव्य दिशा न बढ़ाएँ नहीं तो राज्य-भय, मुकदमों और अग्नि से भय रहेगा।

3. वायव्य में गड्ढा न खुदवाएँ अर्थात् कुँआ न बनवाएँ।

4. वायव्य कोण को डंककर न रखें अन्यथा दुर्घटनाओं व कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

उपरोक्त आठों दिशाओं की शुभाशुभता का विचार और इनके वास्तु आधारित आदर्श मानचित्र दिए गए हैं। भवन बनाते समय इस अमूल्य ज्ञान को व्यवहार में लाना चाहिए।

वायव्य मुखी भूखण्ड का वास्तु के अनुरूप दो बैडरूम वाला आदर्श मानचित्र

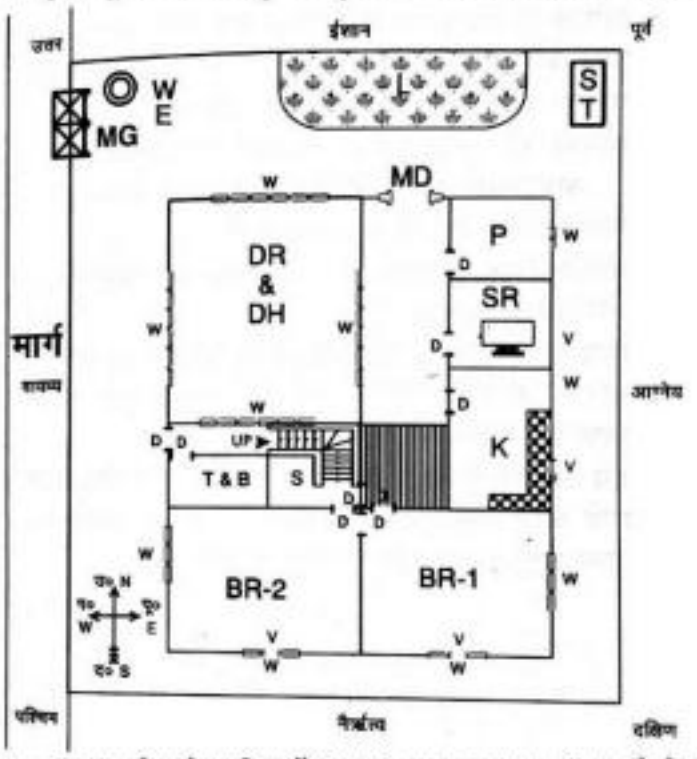

1. L–लॉन या बगीचा ईशान दिशा में, 2. MG–मुख्य द्वार (Main Gate) नैर्ऋत्य दिशा में, 3. MD–भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) वायव्य दिशा में, 4. P–पूजास्थल ईशान दिशा में पूर्ण कोण पर, 5. SR–अध्ययनकक्ष ईशान दिशा में पूजा स्थल के पास, 6. DR & DH–स्वागत कक्ष व भोजनकक्ष संयुक्त रूप में ईशान दिशा में उत्तर कोण पर, 7. K–रसोईघर आग्नेय दिशा में, 8. S–भण्डारगृह (Store) मध्य में रसोईघर के सामने, 9. BR, व BR_2–शयनकक्ष वायव्य दिशा में, 10. T, & B, व T_2 & B_2–शौचालय व स्नानगृह शयनकक्ष के पास संयुक्त रूप में दोनों के मध्य, 11. ST–सैप्टिक टैंक ईशान दिशा में उत्तर कोण की ओर, 12. WE–कुँआ ईशान दिशा में पूर्व की ओर, 13. D–द्वार, 14. V–रोशनदान एवं 15. W–खिड़की।

कुशल–हर्ष–भगवान–सूर्य–राज–नथमल्लजी। चौथ – बखत रावत चाँद नव स्वामी नामी नमूँ।।
जय–जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

अगस्त

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चौद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

卐 चमत्कारी जय जाप 卐

पूज्य जयमल जी हुआ अवतारी, ज्यांरा नाम तणी महिमा भारी।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत-प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवै गुप-चुपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
अड़ियो काम तो होय जावे, वली बिगड़यो काम भी बण जावे।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
राज-काज में तेज रहे, वली खम्मा-खम्मा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
एक माला नित्त नेम रखो, किणी बात तणो नहीं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
स्वमत तणी प्रतिफल करे, मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दुःख कष्ट-रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।

2016

सितम्बर 9 SEPTEMBER

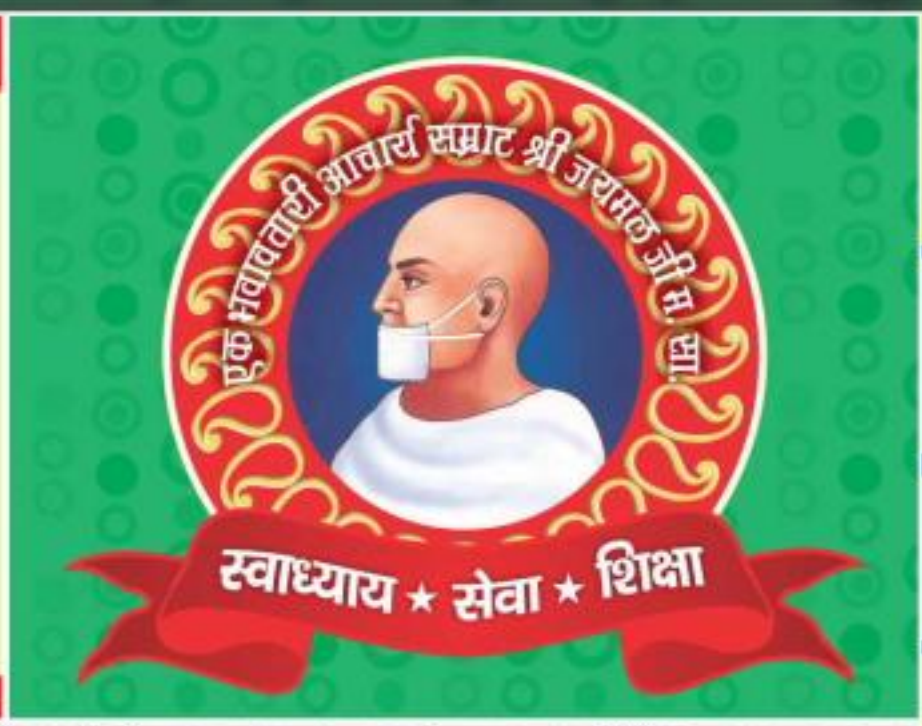

एकभवावतारी आचार्य जय जीवन प्रकाश

● एक प्रवचन श्रवण मात्र से वैराग्य उत्पन्न होना। 3 घण्टे (1 प्रहर) में खड़े-खड़े प्रतिक्रमण कंठस्थ करना। ● 16 वर्ष एकान्तर ● 16 वर्ष बेले-बेले तप, 20 मासक्षमण तप, 10 द्वि-मासक्षमण तप, 40 अट्ठाई तप, 90 दिन अभिग्रहयुक्त तपस्या, एक बार चौमासी तप, एक बार छह मासी तप, 2 वर्ष तक तेले-तेले पारणा, 3 वर्ष 5 के पारणे 5 की तपस्या आदि अनेक तपस्या करना। ● 50 वर्ष तक आड़ा आसन नहीं करना वि. सं. 1804 से वि. सं. 1853 तक। ● 8 दिन तक निराहार रहते हुए बीकानेर में 500 यतियों को चर्चा में परास्त कर सदा के लिए जैन सन्तों हेतु सर्वप्रथम क्षेत्र खोला। ● पीपाड़, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, सांचौर, खींचन, फलोदी, सिरोही, जालोर आदि अनेकानेक क्षेत्रों में यतियों को चर्चा में परास्त कर क्षेत्र खोले। ● जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, नागौर, जैसलमेर आदि के राजा-महाराजाओं एवं दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह तथा उनके शहजादे को प्रतिबोध देकर सुमार्गी बनाया। ● 700 भव्यात्माओं को दीक्षा दी। 51 शिष्य, 200 प्रशिष्य, 449 साध्वी समुदाय। ● संथारे के सोलहवें दिन मध्य रात्रि में उदय (मुनि) केशव (मुनि) ने देव-पर्याय में से आकर वन्दन किया, पूर्ण प्रकाश को देखकर आचार्य श्री रायचन्द जी म. सा. आदि संतों के पूछने पर सीमन्धर स्वामी से समाधान पाया कि पूज्यश्री एकभवावतारी हैं। प्रथम कल्प देवलोक से च्यवकर महाविदेह क्षेत्र में जाकर मोक्ष में जायेंगे। ● वि. सं. 1807 में बड़ी साधु वन्दना की रचना की। इसके अतिरिक्त 250 से अधिक काव्य कृतियों का निर्माण किया।

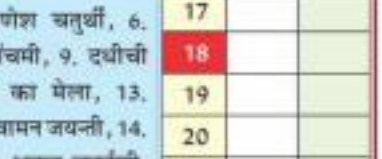

JAY PADMAVATI PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office: 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 021

विक्रम संवत् 2073 | वीर निर्वाण संवत् 2542 | जय संवत् 221 | जैन पंचमारक संवत् 2539

वार					
रवि SUN (राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे)	पुष्य नक्षत्र: 25 सितम्बर रविवार मध्याह्न 2.33 बजे से 26 सितम्बर सोमवार अपराह्न 3.00 बजे तक	हस्त १६/४८ · तुला ३०/०६ · **4** · भाद्रपद सुद ३	मूल ८/४४ · धनु · **11** · भाद्रपद सुद ९	रेवती २४/५५ · मेष २४/५५ · **18** · आश्विन वद २	पुनर्वसु १४/३३ · कर्क ८/३४ · **25** · आश्विन वद १०
सोम MON (प्रातः 7.30 से 9.00 बजे)	शुभ दिन: 2, 4, 8, 11, 24, 26, 27 · अशुभ दिन: 3, 12, 13, 14, 15, 21, 22, 28, 29	चित्रा १९/३२ · तुला · **5** · भाद्रपद सुद ४	पूर्वाषाढ़ा ९/५५ · मकर १६/०५ · **12** · भाद्रपद सुद १०	अश्विनी २२/२८ · मेष · **19** · आश्विन वद ३	पुष्य १५/०० · कर्क · **26** · आश्विन वद ११
मंगल TUE (मध्याह्न 3.00 से 4.30 बजे)	पंचक: 14 सितम्बर बुधवार रात्रि 9.39 बजे तक, 18 सितम्बर रविवार मध्यरात्रि 12.55 बजे तक	स्वाती २२/३१ · तुला · **6** · भाद्रपद सुद ५ · संवत्सरी महापर्व	उत्तराषाढ़ा १०/२१ · मकर · **13** · भाद्रपद सुद ११	भरणी २०/१० · वृष २५/०३ · **20** · आश्विन वद ४	आश्लेषा १५/५९ · सिंह १५/५९ · **27** · आश्विन वद १२
बुध WED (मध्याह्न 12.00 से 1.30 बजे)	अमृत सिद्धि योग: 4 सितम्बर रविवार, हस्त, सूर्योदय से अपराह्न 4.48 बजे तक	विशाखा २५/३३ · वृश्चिक १८/४३ · **7** · भाद्रपद सुद ६	श्रवण १०/०३ · कुंभ २१/३९ · **14** · भाद्रपद सुद १२/१३	कृतिका १८/०७ · वृष · **21** · आश्विन वद ५	मघा १७/२५ · सिंह · **28** · आश्विन वद १३
गुरु THU (मध्याह्न 1.30 से 3.00 बजे)	मघा १०/५३ · सिंह · **1** · भाद्रपद वद ३०	अनुराधा २८/२४ · वृश्चिक · **8** · भाद्रपद सुद ७	धनिष्ठा ९/०६ · कुंभ · **15** · भाद्रपद सुद १४ · पाक्षिक पर्व	रोहिणी १६/२८ · मिथुन २९/४२ · **22** · आश्विन वद ६/७	पूर्वा फाल्गुनी ११/१६ · कन्या २५/०३ · **29** · आश्विन वद १४
शुक्र FRI (प्रातः 10.30 से 12.00 बजे)	पूर्वा फाल्गुनी १२/२५ · कन्या १८/५२ · **2** · भाद्रपद सुद १	ज्येष्ठा · वृश्चिक · **9** · भाद्रपद सुद ८	शतभिषा ७/३४ · मीन २४/०७ · **16** · भाद्रपद सुद १५ · पूर्वा भाद्रपद २९/३४	मृगसिरा १५/१७ · मिथुन · **23** · आश्विन वद ८	उत्तरा फाल्गुनी २१/२७ · कन्या · **30** · आश्विन वद ३० · पाक्षिक पर्व
शनि SAT (प्रातः 9.00 से 10.30 बजे)	उत्तरा फाल्गुनी १४/२४ · कन्या · **3** · भाद्रपद सुद २ · ज्येष्ठा तृतीया	ज्येष्ठा ६/५२ · धनु ६/५२ · **10** · भाद्रपद सुद ९	उत्तरा भाद्रपद २७/२० · मीन · **17** · आश्विन वद १	आर्द्रा १४/३८ · मिथुन · **24** · आश्विन वद ९	

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

सितम्बर	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	5.58	6.20	6.46	9.03
6	5.58	6.16	6.46	9.02
11	5.58	6.13	6.46	9.01
16	5.58	6.09	6.46	9.00
21	5.58	6.06	6.46	9.00
26	5.58	6.02	6.46	8.59
30	5.59	5.59	6.47	8.59

जैन पर्व

6. संवत्सरी महापर्व, 10. सुविधि जिन मोक्ष, 14. एकभवावतारी आचार्य सम्राट पूज्य श्री जयमलजी म. सा. का ३०९वां जन्म दिवस (तेले तप का आयोजन), 30. अरिष्टनेमि जिन केवल

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

4. वराह जयन्ती, 5. गणेश चतुर्थी, 6. संवत्सरी महापर्व, ऋषि पंचमी, 9. दधीची जयन्ती, 12. रामदेवजी का मेला, 13. जलझूलनी एकादशी व्रत, वामन जयन्ती, 14. पंचक प्रारंभ, प्रदोष, 15. अनन्त चतुर्दशी, 18. पंचक समाप्ति, 26. इंदिरा एकादशी व्रत, 28. प्रदोष, 30. सर्वपितृ श्राद्ध

अवकाश

5. गणेश चतुर्थी (ऐ)
10. द्वितीय शनिवार

नोट – सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

6. संवत्सरी महापर्व, 15. पाक्षिक पर्व, 30. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

☆☆☆ प्रमुख नगरों का प्रत्याख्यान यंत्र ☆☆☆

BANGALORE

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	6.40 6.44	6.05 6.11	7.28 7.32	9.30 9.40
फरवरी	1 16	6.44 6.40	6.21 6.27	7.32 7.28	9.40 9.35
मार्च	1 16	6.34 6.26	6.28 6.30	7.22 7.24	9.35 9.30
अप्रैल	1 16	6.16 6.07	6.31 6.32	7.04 6.55	9.20 9.15
मई	1 16	5.59 5.55	6.34 6.38	6.47 6.43	9.10 9.05
जून	1 16	5.54 5.55	6.42 6.47	6.42 6.43	9.05 9.05
जुलाई	1 16	5.59 6.00	6.49 6.49	6.47 6.48	9.10 9.10
अगस्त	1 16	6.01 6.08	6.46 6.39	6.49 6.56	9.10 9.20
सितम्बर	1 16	6.09 6.09	6.29 6.19	6.57 6.57	9.20 9.20
अक्टूबर	1 16	6.09 6.10	6.09 5.59	6.57 6.58	9.20 9.20
नवम्बर	1 16	6.15 6.19	5.52 5.49	7.03 7.07	9.20 9.20
दिसम्बर	1 16	6.27 6.35	5.51 5.53	7.15 7.23	9.20 9.25

RAICHUR

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	6.58 7.02	6.00 6.09	7.46 7.50	9.45 9.49
फरवरी	1 16	7.01 6.55	6.19 6.26	7.49 7.45	9.51 9.48
मार्च	1 16	6.46 6.36	6.31 6.34	7.35 7.24	9.41 9.46
अप्रैल	1 16	6.23 6.12	6.38 6.41	7.15 7.00	9.27 9.20
मई	1 16	6.02 5.56	6.45 6.49	6.50 6.44	9.13 9.09
जून	1 16	5.53 5.53	6.55 7.00	6.41 6.41	9.09 9.10
जुलाई	1 16	5.57 6.01	7.03 7.03	6.45 6.49	9.14 9.17
अगस्त	1 16	6.06 6.10	6.58 6.51	6.54 6.58	9.19 9.21
सितम्बर	1 16	6.14 6.16	6.39 6.28	7.02 7.04	9.21 9.19
अक्टूबर	1 16	6.18 6.21	6.14 6.04	7.06 7.09	9.17 9.17
नवम्बर	1 16	6.27 6.34	5.54 5.39	7.15 7.22	9.19 9.20
दिसम्बर	1 16	6.42 6.50	5.48 5.52	7.30 7.38	9.29 9.36

DELHI

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	7.19 7.18	5.31 5.43	8.03 8.04	9.50 9.53
फरवरी	1 16	7.11 7.04	5.59 6.07	7.59 7.48	9.53 9.48
मार्च	1 16	6.49 6.33	6.18 6.27	7.36 7.20	9.41 9.31
अप्रैल	1 16	6.15 5.58	6.34 6.42	7.01 7.45	9.19 9.09
मई	1 16	5.44 5.34	6.52 7.01	6.31 6.20	9.00 8.55
जून	1 16	5.28 5.27	7.11 7.15	6.14 6.13	8.52 8.53
जुलाई	1 16	5.32 5.38	7.17 7.16	6.17 6.23	8.57 9.01
अगस्त	1 16	5.47 5.54	7.04 6.55	6.32 6.40	9.06 9.09
सितम्बर	1 16	6.03 6.10	6.39 6.21	6.48 6.55	6.11 6.12
अक्टूबर	1 16	6.18 6.27	5.02 5.46	7.03 7.11	9.13 9.15
नवम्बर	1 16	6.37 6.48	5.33 5.23	7.22 7.23	9.19 9.25
दिसम्बर	1 16	7.01 7.11	5.20 5.22	7.45 7.56	9.33 9.42

JODHPUR

माह	ता.	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	7.26 7.27	5.57 6.09	8.14 8.15	10.04 10.08
फरवरी	1 16	7.23 7.10	6.20 6.31	8.11 8.00	10.08 10.02
मार्च	1 16	7.01 6.47	6.40 6.48	7.49 7.35	9.55 9.46
अप्रैल	1 16	6.29 6.14	6.56 7.03	7.17 7.02	9.36 9.26
मई	1 16	6.01 5.51	7.10 7.18	6.49 6.39	9.18 9.13
जून	1 16	5.45 5.46	7.29 7.33	6.33 6.35	9.11 9.14
जुलाई	1 16	5.50 5.56	7.35 7.32	6.38 6.44	9.16 9.21
अगस्त	1 16	6.04 6.10	7.26 7.13	6.52 6.59	9.25 9.28
सितम्बर	1 16	6.18 6.24	6.59 6.43	7.06 7.12	9.29 9.29
अक्टूबर	1 16	6.31 6.39	6.25 6.10	7.19 7.26	9.29 9.32
नवम्बर	1 16	6.48 7.00	5.53 5.49	7.36 7.46	9.35 9.40
दिसम्बर	1 16	7.10 7.19	5.45 5.48	8.00 8.08	9.49 9.57

HYDERABAD

माह	तारीख	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	6.46 6.50	5.53 6.02	7.34 7.38	9.32 9.38
फरवरी	1 16	6.49 6.42	6.11 6.18	7.37 7.30	9.42 9.36
मार्च	1 16	6.35 6.24	6.23 6.26	7.23 7.12	9.32 9.25
अप्रैल	1 16	6.11 6.00	6.29 6.32	6.59 6.48	9.16 9.08
मई	1 16	5.50 5.44	6.36 6.41	6.38 6.32	9.01 8.58
जून	1 16	5.41 5.41	6.47 6.51	6.29 6.29	8.57 8.58
जुलाई	1 16	5.45 5.49	6.54 6.55	6.33 6.37	9.02 9.05
अगस्त	1 16	5.55 5.59	6.50 6.42	6.44 6.47	9.08 9.09
सितम्बर	1 16	6.02 6.05	6.30 6.18	6.50 6.53	9.09 9.07
अक्टूबर	1 16	6.06 6.09	6.06 5.55	6.54 6.57	9.06 9.05
नवम्बर	1 16	6.14 6.21	5.45 5.40	7.02 7.09	9.06 9.10
दिसम्बर	1 16	6.30 6.38	5.39 5.44	7.18 7.26	9.17 9.25

BOMBAY

माह	तारीख	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	7.16 7.19	6.08 6.18	8.04 8.07	9.58 10.03
फरवरी	1 16	7.17 7.10	6.28 6.35	8.05 7.58	10.03 10.00
मार्च	1 16	7.02 6.50	6.40 6.45	7.50 7.38	9.56 9.48
अप्रैल	1 16	6.37 6.25	6.48 6.52	7.25 7.13	9.39 9.31
मई	1 16	6.15 6.08	6.56 7.02	7.03 6.56	9.24 9.20
जून	1 16	6.05 6.05	7.08 7.13	6.53 6.53	9.18 9.21
जुलाई	1 16	6.08 6.13	7.16 7.15	6.56 7.01	9.24 9.27
अगस्त	1 16	6.19 6.23	7.11 7.02	7.07 7.11	9.31 9.32
सितम्बर	1 16	6.27 6.30	6.50 6.38	7.15 7.18	9.32 9.30
अक्टूबर	1 16	6.33 6.36	6.24 6.12	7.21 7.24	9.29 9.29
नवम्बर	1 16	6.42 6.50	6.02 5.57	7.30 7.38	9.31 9.35
दिसम्बर	1 16	6.59 7.08	5.56 6.00	7.47 7.56	9.42 9.50

नवकारसी

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि।

पोरसी

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

डेढ़ पोरसी

उग्गए सूरे साड्ढपोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

दो पोरसी

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

पच्चक्खाण पारने का पाठ

सम्मं काएण न फासियं, न पालियं, न तीरियं, न किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

आयंबिल

उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

उपवास

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

एकासन

उग्गए सूरे एगासणं, बिआसणं पच्चक्खामि तिविहं-चउव्विहं पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि।

संवर (दया)

करेमि भंते! संवरं पंचासवदारं पच्चक्खामि जाव न पालेमि ताव पज्जुवासामि दुविहं-तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा-वयसा-कायसा (अथवा एगविहं-एगविहेणं न करेमि कायसा) तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

सागारी संथारा करने का हिन्दी पाठ

आहार, शरीर, उपधि पचक्खूं पाप अठार।
मरण पाऊं तो वोसिरे, जीऊं तो आगार॥

सूचना— जब अचानक कोई संकट आ जाये या बीमारी आदि की भयंकर स्थिति हो तो सागारी संथारा ऊपर छपे पाठ से किया जाता है। वैसे भी प्रतिदिन साधक को रात को सोने के समय से लेकर अगली प्रातः तक नहीं पारूं, नहीं नितारूं तक सागारी संथारा ग्रहण कर लेना चाहिए, ताकि इस दौरान यदि प्राणान्त हो जाये तो साधक को संथारे का लाभ प्राप्त होगा–सागारी संथारा तीन बार नवकार मन्त्र पढ़कर पारना चाहिए।

JALGAON (Maharashtra)

माह	तारीख	सूर्यो.	सूर्या.	नवकारसी	पोरसी
जनवरी	1 16	7.06 7.09	5.56 6.06	7.54 7.57	9.49 9.53
फरवरी	1 16	7.06 6.59	6.17 6.25	7.54 7.47	9.54 9.51
मार्च	1 16	6.50 6.38	6.31 6.36	7.38 7.26	9.45 9.38
अप्रैल	1 16	6.23 6.10	6.41 6.45	7.11 6.58	9.28 9.19
मई	1 16	6.00 5.52	6.50 6.56	6.48 6.40	9.13 9.08
जून	1 16	5.48 5.49	7.03 7.08	6.36 6.37	9.07 9.08
जुलाई	1 16	5.52 5.57	7.11 7.10	6.40 6.45	9.12 9.16
अगस्त	1 16	6.04 6.09	7.05 6.56	6.52 6.57	9.19 9.21
सितम्बर	1 16	6.13 6.17	6.43 6.29	7.01 7.05	9.21 9.20
अक्टूबर	1 16	6.20 6.24	6.15 6.03	7.08 7.12	9.19 9.19
नवम्बर	1 16	6.31 6.40	5.52 5.46	7.19 7.28	9.21 9.26
दिसम्बर	1 16	6.49 6.59	5.44 5.48	7.37 7.47	9.33 9.41

नोट— निम्नलिखित गाँव वालों को हैदराबाद वाले कोष्टक में निम्नलिखित मिनटें अधिक मिलाकर पच्चक्खाण का पालन करना।

11 मिनट = अकोला   10 मिनट = शोलापुर
18 मिनट = नासिक   11 मिनट = बीजापुर
3 मिनट = नागपुर

नोट—पचक्खाण के समय के 5 मिनट पश्चात् पच्चक्खाण पारना चाहिए।

ओली तप करने की विधि

क्र.	माला	नमोत्थुणं	वंदना	लोगस्स	माला	भोजन
1.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो अरिहंताणं	12	12	12	12	चावल
2.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो सिद्धाणं	8	8	8	8	गेहूँ
3.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो आयरियाणं	36	36	36	36	चना
4.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो उवज्झायाणं	25	25	25	25	मूँग
5.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो लोए सव्व साहूणं	27	27	27	27	उड़द
6.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो दंसणस्स	67	67	67	67	चावल
7.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो नाणस्स	51	51	51	51	चावल
8.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो चरित्तस्स	17	17	17	17	चावल
9.	ॐ ह्रीं श्रीं नमो तवस्स	12	12	12	12	चावल

ओली तप का समय

आसोज सुदी सातम से पूनम एवं चैत्र सुदी सातम से पूनम तक इस प्रकार एक वर्ष में दो बार इस तप की आराधना की जाती है। साढ़े चार वर्ष में कुल नव ओलियाँ एवं इक्यासी आयंबिल के साथ इस तप की पूर्णाहुति होती है। इससे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शान्ति की अनुभूति होती है। कर्म क्षय होते हैं।

कुशल–हर्ष–भगवान–सूर्य–राज–रिद्धमल्लजी। चौथ – बखत रतन चौथ नव स्वामी नामी नमूं।।

जय–गच्छ के श्रृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय–जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

सितम्बर

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चाँद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

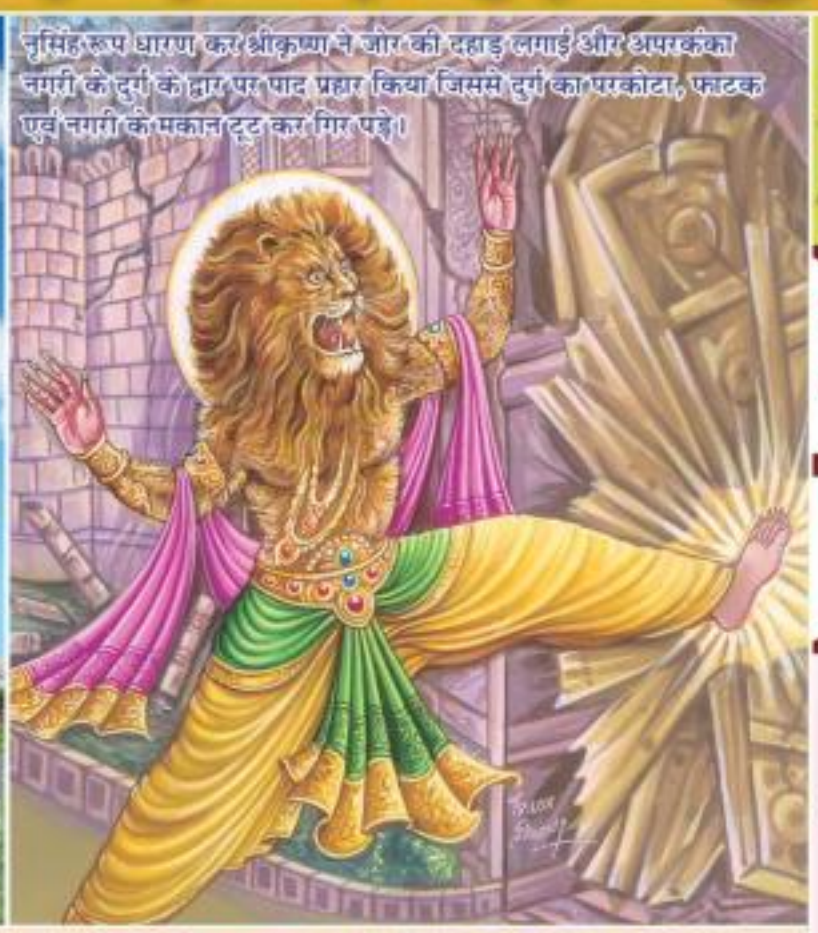

चित्र केवल परिचयार्थ : श्रीकृष्ण का नृसिंह अवतार।

2016

अक्टूबर 10 OCTOBER

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp- Devaiya Park, Bangalore-560 ...

विक्रम संवत् 2073 · वीर निर्वाण संवत् 2542-43 · जय संवत् 221 · जैन पंचमारक संवत् 2539

वार					
रवि SUN (राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे)	चित्रा ९/०२ तुला **30** कार्तिक वद ३०	चित्रा २६/४० तुला १३/१६ **2** आश्विन सुद १	पूर्वाषाढा १८/३४ मकर २४/५४ **9** आश्विन सुद ८	रेवती ११/१५ मेष ११/१५ **16** आश्विन सुद १५/१	पुष्य २०/३६ कर्क **23** कार्तिक वद ८
सोम MON (प्रात: 7.30 से 9.00 बजे)	स्वाती ११/५८ तुला **31** कार्तिक सुद १	स्वाती २९/३६ तुला **3** आश्विन सुद २	उत्तराषाढा १९/३९ मकर **10** आश्विन सुद ९	अश्विनी ८/१८ मेष **17** भरणी २९/२० कार्तिक वद २	आश्लेषा २१/३० सिंह २१/३० **24** कार्तिक वद ९
मंगल TUE (मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे)	**पुष्य नक्षत्र** 22 अक्टूबर शनिवार रात्रि 8.24 बजे से 23 अक्टूबर रविवार रात्रि 8.36 बजे तक	विशाखा वृश्चिक २५/५२ **4** आश्विन सुद ३	श्रवण १९/५७ मकर **11** आश्विन सुद १०	कृतिका २६/३३ वृष १०/३७ **18** कार्तिक वद ३	मघा २३/०२ सिंह **25** कार्तिक वद १०
बुध WED (मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे)	**शुभ दिन** 6, 7, 8, 18, 19, 20, 23, 29 **अशुभ दिन** 1, 10, 17, 21, 30	विशाखा ८/३८ वृश्चिक **5** आश्विन सुद ४	धनिष्ठा १९/२९ कुंभ ७/४९ **12** आश्विन सुद ११	रोहिणी २४/०७ वृष **19** कार्तिक वद ४	पूर्वा फाल्गुनी २५/०५ सिंह **26** कार्तिक वद ११
गुरु THU (मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे)	**पंचक** 12 अक्टूबर बुधवार प्रात: 7.49 बजे से 16 अक्टूबर रविवार पूर्वाह्न 11.15 बजे तक	अनुराधा ११/३७ वृश्चिक **6** आश्विन सुद ५	शतभिषा १८/१६ कुंभ **13** आश्विन सुद १२	मृगसिरा २२/१३ मिथुन ११/०५ **20** कार्तिक वद ५	उत्तरा फाल्गुनी २७/३० कन्या ७/३१ **27** कार्तिक वद १२
शुक्र FRI (प्रात: 10.30 से 12.00 बजे)	**अमृत सिद्धि योग** 5 अक्टूबर बुधवार, अनुराधा, प्रात: 8.38 बजे से अहोरात्र तक	ज्येष्ठा १४/२४ धनु १४/२४ **7** आश्विन सुद ६	पूर्वा भाद्रपद १६/२४ मीन १०/५५ **14** आश्विन सुद १३	आर्द्रा २०/५७ मिथुन **21** कार्तिक वद ६	हस्त ३०/११ कन्या **28** कार्तिक वद १३
शनि SAT (प्रात: 9.00 से 10.30 बजे)	हस्त २३/५६ कन्या **1** आश्विन सुद १	मूल १६/४६ धनु **8** आश्विन सुद ७	उत्तरा भाद्रपद १४/०१ मीन **15** पाक्षिक पर्व आश्विन सुद १४	पुनर्वसु २०/२४ कर्क १३/४८ **22** कार्तिक वद ७	चित्रा तुला १९/३५ **29** कार्तिक वद १४

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

अक्टूबर	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	5.59	5.59	6.47	8.59
6	5.59	5.55	6.47	8.58
11	5.59	5.52	6.47	8.57
16	6.00	5.49	6.48	8.57
21	6.01	5.47	6.49	8.57
26	6.02	5.44	6.50	8.57
31	6.03	5.43	6.51	8.58

जैन पर्व

7. ओली तप प्रारंभ, 11. आचार्य श्री भूधरजी म. सा. का जन्म-स्मृति दिवस, 15. शरद पूर्णिमा, ओली तप समाप्त, 16. नमी जिन च्यवन, 20. संभव जिन केवल, 27. अरिष्टनेमि जिन च्यवन, पद्मप्रभ जिन जन्म, पद्मप्रभ जिन दीक्षा, 30. महावीर जिन मोक्ष, 31. वीर निर्वाण संवत् 2543 प्रारंभ

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. नवरात्रारम्भ, घटस्थापना, अग्रसेन जयन्ती, 2. गांधी जयन्ती, 3. मोहर्रम, 8. सरस्वती आह्वान, 9. सरस्वती पूजा, महाष्टमी, 10. शस्त्रादि पूजा, 11. विजया दशमी, सरस्वती विसर्जन, 12. पंचक प्रारंभ, 14. प्रदोष, 15. शरद पूर्णिमा, 16. पंचक समाप्ति, कार्तिक स्नान प्रारंभ, 19. करवा चौथ, 23. स्वाती नक्षत्र प्रारंभ (गाज बीज होने पर अस्वाध्याय), 26. गोवत्स द्वादशी, रमा एकादशी व्रत, 27. धनतेरस, धन्वंतरी जयन्ती, 28. प्रदोष, 29. रूप चतुर्दशी, दीपदान, 30. महालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा, 31. गोवर्धन पूजा, नूतन वर्षारम्भ

अवकाश

1. अग्रसेन जयन्ती, 2. गांधी जयन्ती, 3. मोहर्रम, 8. द्वितीय शनिवार, 11. विजया दशमी, 19. करवा चौथ, 27. धनतेरस, 29. रूप चतुर्दशी, दीपदान, 30. महालक्ष्मी पूजा, 31. गोवर्धन पूजा

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

चायप्रारंभ 15. पाक्षिक पर्व, 30. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

दीपावली पूजन की विधि

दुकान की स्वच्छता करके शारीरिक शुद्धि के साथ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें। सामने एक साफ या नया बाजोट (पाटा) रखें जिसके चारों पायों के मोली बाँधें तथा उसके ऊपर एक नया वस्त्र बिछाकर साफ या नयी थाली लेवें जिसमें दस दिक्पालों की स्थापना निम्न यंत्र को कुंकुम से लिखते हुए करें। तत्पश्चात् स्वच्छ जल से भरा कलश (लोटा) थाली में रखें। लोटे के मोली बाँध देवें तथा नयी कलम-दवात के मोली ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप भावनापूर्वक तीन-तीन बार लपेटकर बाँध देवें। थाली में सवा रुपया रोकड़ा, मोली से सात बार लपेटा हुआ श्रीफल (नारियल), अखण्ड सात सुपारी, अक्षत (चावल), मिष्ठान आदि रखें। तीन नवकार मंत्र बोलकर बहियाँ, तिजोरी आदि पर कुंकुम-केसर के छींटे डालें, फिर २१ बार नवकार मंत्र एवं सात बार लोगस्स बोलकर बहीखातों में पूजन के पन्नों पर निम्न प्रकार शिखराकर नव श्री, साकिया आदि लिखें।

ॐ ह्रीँ

ईशान ८	इन्द्र १	अग्नि २
कुबेर ७	ब्रह्म नाग ९ १०	यम ३
वायव्य ६	वरुण ५	नैऋत्य ४

श्रीँ क्लीँ

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

ॐ ह्रीँ श्रीँ नम:
ॐ ह्रीँ श्रीँ ऋषभजिनाय नम:
श्री भरत जी चक्रवर्ती की पदवी होवे 卐 श्री कयवन्ना जी री सुख सौभाग्य होवे

ॐ ह्रीँ श्रीँ पुरुषादानीय पार्श्वजिनाय नम:
श्री अभयकुमार जी की बुद्धि होवे
श्री धन्ना शालिभद्र जी की ऋद्धि होवे

ऋद्धि सिद्धि

लाभ शुभ

ॐ ह्रीँ श्रीँ महावीर जिनाय नम:
श्री बाहुबली जी का बल होवे
श्री सरस्वती जी की कृपा होवे

ॐ ह्रीँ श्रीँ अनन्त लब्धि निधान गौतम स्वामी जी महाराज की लब्धि होवे।
पूज्य श्री जयमल जी महाराज रो तेज प्रताप होवे, जिनशासन री जय-जयकार होवे।
श्री महालक्ष्मी जी रो अखण्ड धन वर्षा रे साथे भण्डार सदा भरपूर छे।

वीर संवत् ..... विक्रम संवत् ..... शालिवाहन शाके ..... कार्तिक वदी ..... वार ..... सायं ..... बजकर ..... मिनट पर ..... लग्न में ..... के चौघड़िया में श्री शारदा माता श्री महालक्ष्मी माता का जैन पद्धति के अनुसार सहर्ष सपरिवार पूजन किया दिनांक/तारीख ....

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीँ	श्रीँ	क्लीँ

इतना होने के बाद एक नवकार मंत्र की माला तथा **ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हम् गौतमाय नम:** की माला फेरें। फिर चत्तारि मंगलं का पाठ बोलना तथा अपने से बड़ों को प्रणाम करना। इति समाप्तम्।

सामर्थ्य के अनुसार दीपावली के दिन तेले का तप या उपवास करके शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य-पालन करते हुए अर्द्ध-रात्रि तक नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स की माला फेरें और अर्द्ध-रात्रि के पश्चात् सूर्योदय तक ॐ नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण-महाणस्स का जप करें अथवा गौतम रास का पाठ करें।

मध्य-रात्रि या सूर्योदय के समय केसर या अष्टगन्ध से उक्त यंत्र लिखकर तिजोरी में या अपने पास में रखें। लक्ष्मी की प्राप्ति होवे, सब प्रकार से आनन्द मंगल रहे। फिर अर्द्ध-रात्रि में केसर से सफेद कागज पर निम्न यंत्र बनाकर तिजोरी में रखें, तस्वीर बनाकर लगा देवें, धन प्राप्त होवे।

सर्वसिद्धिदाता लक्ष्मी यंत्र

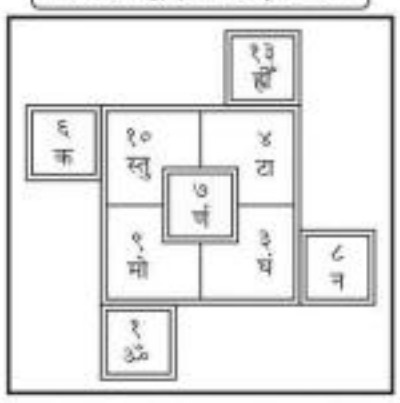

इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से शुद्धतापूर्वक लिखें, लिखते समय शुभ मुहूर्त्त हो, यंत्र को तस्वीर में मढ़वाकर रखें, घण्टाकर्ण मूल के चार श्लोकों का नित्य पाठ करें, तो अवश्य लक्ष्मी का लाभ होता है। घर में लक्ष्मी स्थिर होती है।

व्यापार-वृद्धि यंत्र

	ॐ	ह्रीँ	श्रीँ	क्लीँ	
क्लीँ	९९	१०६	२	७	ॐ
श्रीँ	६	३	१०३	१०२	ह्रीँ
ह्रीँ	१०५	१००	८	१	श्रीँ
ॐ	४	५	१०१	१०४	क्लीँ
	क्लीँ	श्रीँ	ह्रीँ	ॐ	

इस यंत्र को दुकान की दीवाल के ऊपर घी, सिन्दूर से लिखें तो व्यापार में बहुत लाभ होता है।

श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

वंश परम्परागत ट्रस्टी :

अध्यक्ष	:	श्री ज्ञानचन्द जी मुणोत, चेन्नई
उपाध्यक्ष	:	श्री अमरचंद जी बोकड़िया, चेन्नई
		श्री भंवरलाल जी लोढ़ा, चेन्नई
		श्री रिखबचन्द जी बोहरा, चेन्नई
		श्री नरेन्द्रकुमार जी मरलेचा, चेन्नई
		श्री शांतिलाल जी चौपड़ा, चेन्नई
		श्री निर्मल जी कांकरिया, जोधपुर
कोषाध्यक्ष	:	श्री विजयसिंह जी पींचा, चेन्नई
मंत्री	:	श्री ए. एन. प्रकाशचंद जी बोहरा, चेन्नई
		श्री शांतिलाल जी बोहरा, चेन्नई

ट्रस्टी :

- श्री गौतमचन्द जी रुणवाल, चेन्नई
- श्री गौतमचन्द जी बाघमार, ईरोड
- श्री उत्तमचन्द जी बोकड़िया, चेन्नई
- श्री उत्तमचन्द जी बाघमार, ईरोड

सम्पर्क सूत्र : श्री विजयसिंह पींचा 9, TREVELIYAN BASIN STREET, SOWCARPET, CHENNAI-600 079. Mob. : 9884497000

।। श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त।।

सूर्योदय 6.44 IST, सूर्यास्त 5.59 IST (जोधपुर समयानुसार)

1. **बहीखाता निर्माण व लाने का मुहूर्त्त :**

   (1) कार्तिक कृष्णा अष्टमी, रविवार, पुष्य नक्षत्र, दिनांक 23 अक्टूबर 2016

   चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ प्रात: 9.32 बजे से प्रात: 10.57 बजे तक, अमृत प्रात: 10.57 बजे से मध्याह्न 12.20 बजे तक, शुभ अपराह्न 1.44 बजे से सायं 3.10 बजे तक।

   (2) दिनांक 28 अक्टूबर 2016, शुक्रवार, कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, हस्त नक्षत्र।

   चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ प्रात: 8.11 बजे से प्रात: 9.34 बजे तक, अमृत प्रात: 9.34 बजे से प्रात: 10.57 बजे तक, शुभ दोपहर 12.20 बजे से मध्याह्न 1.44 बजे तक।

2. **धन त्रयोदशी, धनवन्तरी-कुबेर पूजन मुहूर्त्त :**

   दिनांक 28 अक्टूबर 2016, शुक्रवार, हस्त नक्षत्र, कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी।

   चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ प्रात: 8.11 बजे से 9.34 बजे तक, अमृत प्रात: 9.44 बजे से 10.57 बजे तक, शुभ मध्याह्न 12.20 बजे से अपराह्न 1.44 बजे तक, लाभ रात्रि 9.01 बजे से रात्रि 10.34 बजे तक, शुभ रात्रि 12.07 बजे से रात्रि 1.40 बजे तक, अमृत रात्रि 1.40 बजे से रात्रि 3.13 बजे तक।

3. **यम दीप दान-कलम-दवात धोने-भरने का मुहूर्त्त :**

   दिनांक 29 अक्टूबर 2016, शनिवार, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी, चित्रा नक्षत्र।

   चौघड़िया मुहूर्त्त—शुभ प्रात: 8.11 बजे से प्रात: 9.34 बजे तक, लाभ अपराह्न 1.44 बजे से अपराह्न 3.08 बजे तक, अमृत अपराह्न 3.08 बजे से अपराह्न 4.32 बजे तक, लाभ सायं 5.55 बजे से सायं 7.28 बजे तक, शुभ रात्रि 9.01 बजे से रात्रि 10.34 बजे तक, अमृत रात्रि 10.34 बजे से रात्रि 12.07 बजे तक।

4. **गादी बिछाने का मुहूर्त्त :**

   दिनांक 30 अक्टूबर 2016, रविवार, कार्तिक कृष्णा अमावस्या, स्वाति नक्षत्र।

   चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ प्रात: 9.34 बजे से 10.57 बजे तक, अमृत प्रात: 10.57 बजे से मध्याह्न 12.20 बजे तक, शुभ अपराह्न 1.44 बजे से 3.08 बजे तक।

5. **श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त :**

   दिनांक 30 अक्टूबर 2016, रविवार, कार्तिक कृष्णा अमावस्या, स्वाति नक्षत्र।

   चौघड़िया मुहूर्त्त—गोधूलि बेला, समय सायं 5.30 बजे से सायं 6.18 बजे तक, अमृत सायं 7.29 बजे से रात्रि 9.01 बजे तक, लाभ रात्रि 1.42 बजे से रात्रि 3.15 बजे तक।

   लग्नानुसार लक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त :

	समय
वृषभ लग्न	रात्रि 6.53 बजे से रात्रि 8.49 बजे तक
मिथुन लग्न	रात्रि 8.49 बजे से रात्रि 11.02 बजे तक
कर्क लग्न	रात्रि 11.02 बजे से रात्रि 1.21 बजे तक
सिंह लग्न	रात्रि 1.21 बजे से रात्रि 3.38 बजे तक
कन्या लग्न	रात्रि 3.38 बजे से रात्रि 5.53 बजे तक

6. **उत्थापन मुहूर्त्त**—दिनांक 31 अक्टूबर 2016, सोमवार, कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा, विशाखा नक्षत्र।

   चौघड़िया मुहूर्त्त—अमृत प्रात: 6.49 बजे से प्रात: 8.12 बजे तक, लाभ प्रात: 10.57 बजे से मध्याह्न 12.20 बजे तक।

7. **नवीन बहीखाता लेखन व व्यापार कर्म मुहूर्त्त :**

   दिनांक 1 अप्रैल 2016, शुक्रवार, पू. षा. नक्षत्र, सूर्योदय समय प्रात: 6.33 IST

   चौघड़िया मुहूर्त्त—लाभ प्रात: 8.04 बजे से 9.37 बजे तक, अमृत प्रात: 9.37 बजे से 11.09 बजे तक, शुभ मध्याह्न 12.42 बजे से अप. 2.15 बजे तक।

विशेष— उपरोक्त समय जोधपुर (राज.) स्थान स्टैण्डर्ड समय से दिये हैं। इष्ट स्थान के लिए समय संशोधन करें।

कुशल–हर्ष–भगवान–सूर्य–राज–नथमलजी। चौथ – बखत रायत चाँद नव स्वामी नामी नमूँ।।

जय–गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय–जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

अक्टूबर

जय भूधर · जय जयमल · जय चौथ · जय रावत · जय चौंद · जय जीत · जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

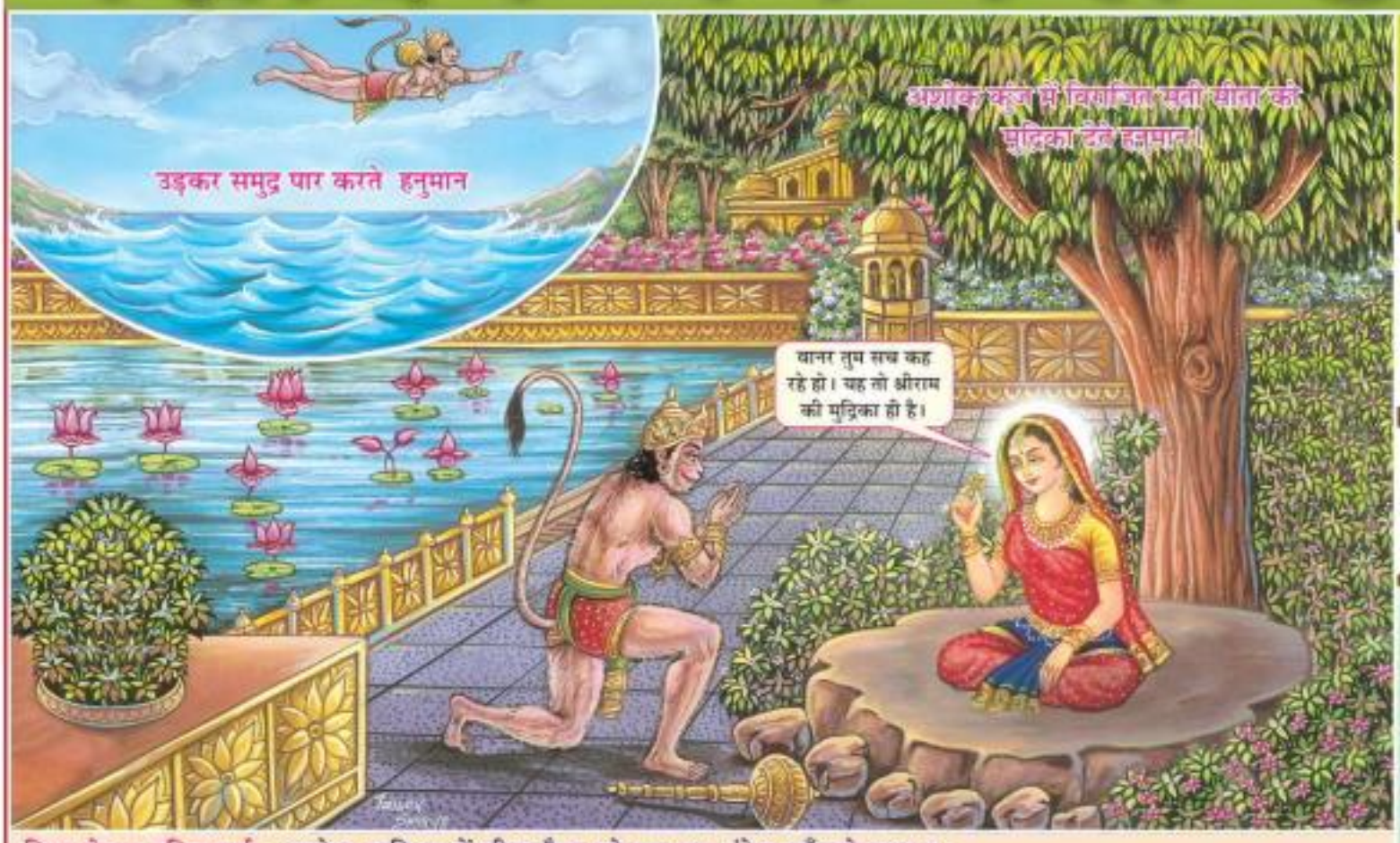

2016

नवम्बर 11 NOVEMBER

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 80, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 021

चित्र केवल परिचयार्थ : अशोक वाटिका में सीता मैया को राम का संदेश पहुँचाते हनुमान।

विक्रम संवत् 2073 | वीर निर्वाण संवत् 2543 | जय संवत् 221 | जैन पंचमारक संवत् 2539

रवि SUN राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे	पुष्य नक्षत्र 19 नवम्बर शनिवार, सूर्योदय से अहोरात्र तक	उत्तराषाढा २७/१३ **6** कार्तिक सुद ६	अश्विनी १९/३७ **13** कार्तिक सुद १४	आश्लेषा २८/०१ **20** मार्गशीर्ष वद ७	स्वाती १८/०४ **27** मार्गशीर्ष वद १३
सोम MON प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	शुभ दिन 6, 7, 10, 13, 15, 16, 18 अशुभ दिन 3, 5, 8, 17, 20, 25	श्रवण २८/१६ **7** कार्तिक सुद ७	भरणी १६/२९ **14** कार्तिक सुद १५	मघा २९/०८ **21** मार्गशीर्ष वद ८	विशाखा २१/०२ **28** मार्गशीर्ष वद १४
मंगल TUE मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे	विशाखा १४/५७ **1** कार्तिक सुद २	धनिष्ठा २८/३५ **8** कार्तिक सुद ८	कृत्तिका १३/११ **15** मार्गशीर्ष वद १	पूर्वा फाल्गुनी ३०/५७ **22** मार्गशीर्ष वद ९	अनुराधा २३/५३ **29** मार्गशीर्ष वद ३०
बुध WED मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे	अनुराधा १७/५४ **2** कार्तिक सुद ३	शतभिषा २८/०७ **9** कार्तिक सुद ९	रोहिणी १०/११ **16** मार्गशीर्ष वद २	उत्तरा फाल्गुनी **23** मार्गशीर्ष वद १०	ज्येष्ठा २६/३४ **30** मार्गशीर्ष सुद १
गुरु THU मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे	ज्येष्ठा २०/४३ **3** कार्तिक सुद ४	पूर्वा भाद्रपद २६/५४ **10** कार्तिक सुद १०	मृगसिरा ७/४२ **17** मार्गशीर्ष वद ३/४	उत्तरा फाल्गुनी ९/२० **24** मार्गशीर्ष वद ११	पंचक 8 नवम्बर मंगलवार अपराह्न 4.31 बजे से 12 नवम्बर शनिवार रात्रि 10.31 बजे तक
शुक्र FRI प्रातः 10.30 से 12.00 बजे	मूल २३/११ **4** कार्तिक सुद ४	उत्तरा भाद्रपद २५/०० **11** कार्तिक सुद ११/१२	पुनर्वसु २८/१६ **18** मार्गशीर्ष वद ५	हस्त १२/०५ **25** मार्गशीर्ष वद ११	अमृत सिद्धि योग 2 नवम्बर बुधवार, अनुराधा, सूर्योदय से सायं 5.54 बजे तक
शनि SAT प्रातः 9.00 से 10.30 बजे	पूर्वाषाढा २५/३२ **5** कार्तिक सुद ५	रेवती २२/३१ **12** कार्तिक सुद १३	पुष्य २७/४३ **19** मार्गशीर्ष वद ६	चित्रा १५/०३ **26** मार्गशीर्ष वद १२	

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

नवम्बर	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	6.03	5.42	6.51	8.57
6	6.05	5.41	6.53	8.59
11	6.06	5.40	6.54	8.59
16	6.09	5.39	6.57	9.01
21	6.11	5.39	6.59	9.03
26	6.13	5.39	7.01	9.04
30	6.15	5.40	7.03	9.06

जैन पर्व

2. सुविधि जिन केवल, 5. ज्ञान पंचमी, 8. स्वामी चांद गुरु स्मृति दिवस, 11. अरह जिन केवल, 14. वीर लोकाशाह जयंती, चातुर्मास समाप्त, 16. एक भवावतारी आचार्य श्री जयमलजी म. सा. की दीक्षा जयंती, 18. सुविधि जिन जन्म, 19. सुविधि जिन दीक्षा, 23. महावीर जिन दीक्षा, 24. पद्मप्रभ जिन मोक्ष

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

1. भाई दूज, 3. दूर्वा गणपति व्रत, 8. गोपाष्टमी, पंचक प्रारंभ, 11. तुलसी विवाह, देवोत्थापन, 12. प्रदोष, पंचक समाप्ति, 14. नेहरू जयन्ती (बाल- दिवस), कार्तिक स्नान पूर्ति, गुरु नानक जयन्ती, पुष्कर यात्रा, 21. काल भैरवाष्टमी, 26. प्रदोष

अवकाश

1. भाई दूज, 12. द्वितीय शनिवार, 14. नेहरू जयन्ती (बाल- दिवस) एवं गुरु नानक जयन्ती

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त

14. चातुर्मासिक
28. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रातः	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

पद्मोदय मंत्र विज्ञान

चौबीस तीर्थंकर देवों के महान् प्रभाविक मन्त्र

संपादि की रक्षा मंत्र

1. श्री ऋषभदेव प्रभु का मन्त्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ उसभस्स आइतित्थयरस्स जलंत्तं गच्छए चक्के सव्वत्थ अपराजिअं आयावणिओ हणिध्यं मणिमोहीणी जंभणी हिली हिली सरणिज्जाणं भाइयाणं अहीणं अहीणं दाढीणं सिंगीणं अहीणं चोराणं चारियाणं जक्खाणं रक्खाणं भूयाणं पि सायाणं मुहबंधणं चक्खुबंधणं गइबंधणं करेमि स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार इस मंत्र का जाप करके साधना करनी चाहिए। मार्ग में संघ की, गाय की, कुल के आचार्य की, साधु-साध्वी की, वस्त्र-पात्र-पुस्तक की, रक्षा के लिए यह विद्या 21 बार बोलकर दसों दिशाओं में धूल डालें तो रक्षा हो।

इच्छित कार्य फलीभूत हो

2. श्री अजितनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ अजिअ जिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा अजए अपराजिए अणिहिए महाबले लोगसारे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास कर साधना करना 1008 बार गिनना, फिर 108 बार गिनने से इच्छित कार्य फलीभूत होता है।

शत्रु भी मित्र बने

3. श्री सम्भवनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ संभवस्स अपराजिअस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा संभवे महासंभवे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनना। मंत्र सिद्ध होवे। शत्रु भी मित्र बने।

साधक की वाणी सिद्ध होवे

4. श्री अभिनन्दननाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अभि-जिणंदस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा नंदने अभिणंदणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करना। फिर 21 बार पानी को मंत्र कर मुख धोकर जिसके पास जाये वह बात को स्वीकार करे।

भूत-भविष्य-वर्तमान का स्वप्न में ज्ञान

5. श्री सुमतिनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ सुमइस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा समणे सुमणसे सोमणसे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करना फिर जो कुछ अपने अथवा दूसरे के लिए जानने की इच्छा हो उसके लिए स्वयं 108 बार इस मंत्र का जाप करके सो जावें। फिर रात्रि में जो कुछ होगा, वह सब भूत, भविष्य, वर्तमान आदि स्वप्न में मालूम हो जाएगा।

सर्वजन प्रिय हो

6. श्री पद्मप्रभु स्वामी का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ पउमप्पहस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा पउमे महापउमे पउमुअरे पउमसिरि ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर सिद्ध करना फिर हमेशा 108 बार गिनने से सर्वजन को प्रिय हो।

कोई परास्त न कर सके

7. श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ सुपासस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा पस्से सुपास्से अइपस्से सहपस्से ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर सो जाना, दण्ड पास में रख कर सोना तो इस दण्ड से इसे कोई न जीत सकेगा।

मनोबल दृढ़ बने

8. श्री चन्द्रप्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ चंदप्पहस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा चंद चंदपभे सुपब्भे अइपब्भे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करें। फिर 108 बार पानी को मंत्र कर अपने मुख को धोयें। मनोबल दृढ़ बने।

आध्यात्मिक बने

9. श्री सुविधिनाथ प्रभु मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ पुप्फदंतस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा पुप्फे महापुप्फे पुप्फसुइ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करना। साधक आध्यात्मिक बने।

रोग मिटे

10. श्री शीतलनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ सियलजिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा सीयले सीयले पसीयले पसंते निव्वूरू निव्वाणे निव्वूए त्ति नमो भवति ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करना, पीछे आँख के रोग, मस्तक, छाला, वायु रोग के लिए 21 बार पानी मंत्र कर पिलायें तो रोग मिटें।

सर्व उपद्रव शान्त हों

11. श्री श्रेयांसनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ सिज्जंस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा सिज्जंसे सिज्जंसे सेयकरे महासेयकरे पभंकरे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करनी है। सर्व उपद्रव की शान्ति निःसन्देह हो। नित्य एक माला फेरें।

जैसा होने वाला हो, वैसा सोते हुए दिखाई दे

12. श्री वासुपूज्य प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ वासुपूज्जस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा वासुपूज्जे महावासुपूज्जे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करना फिर अपने लिए अथवा दूसरे के लिए—जय, विजय, वर्षा आदि जानने की इच्छा से शुद्ध वस्त्र पहन 108 बार गिनकर सो जाना। जैसे होने वाला होगा, वैसा स्वप्न में दिखलाई देगा।

स्वप्न में सूत्र अथवा अर्थ की शंका का समाधान हो

13. श्री विमलनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ विमलस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा अमले अमले विमले विमले कमले निकमले ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके काउस्सग्ग में 1008 मंत्र गिनकर सिद्ध करना। अपने को सूत्र अथवा अर्थ की जो शंका होगी, वह रात्रि में स्वप्न में दिखाई दे।

पढ़ने को जहाँ जाना हो रात्रि को स्वप्न में शुभाशुभ मालूम हो

14. श्री अनन्तनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ अणंतस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा अणंत-केवलणाणं अणंत सम्भवणाणे अणंतगमे अणंत-केवल-दंसणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर सिद्ध करना। सूत्र सीखने की इच्छा वाली विद्या स्थान में अथवा दूसरे स्थान में जाने की इच्छा से सो जाना। जैसा होगा वह स्वप्न में रात्रि को दिखेगा।

जैसा दिखाई दे वैसा हो

15. श्री धर्मनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ धम्मजिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा धम्मे सुधम्मे धम्मचारिणी धम्मे धम्मे उवस सधम्मे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करनी। दीक्षा लेने की इच्छा, बड़ी दीक्षा, अपने नगर में, अन्य नगर में संघ के काम के लिए, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के लिए 108 बार काउस्सग्ग में जाप करना। फिर जैसा पुद्गल शरीर देखे वैसा हो।

सर्व रोग से मुक्त हो

16. श्री शान्तिनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ संतिजिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ संति पसंति उवसंति सव्वपायं पसमेहि स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर सिद्ध करना। चौपाये, दोपाये (दो पैर वाले) के लिए 108 बार मंत्र बोलें तो सर्वरोग से मुक्त हो।

शांति हो

17. श्री कुंथुनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ कुंथुजिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जे कुंथडे कुंथु मइ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास कर 1008 बार जाप कर साधना करना। फिर 108 बार जप कर जहाँ धूल डालें वहाँ शान्ति हो।

बहुत प्रीति सम्मान पावे

18. श्री अरनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ अरजिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा अरस्स अरिणी अरणीस्स पाणि अल ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करना। बाद में ग्राम, नगर, राजा, मंत्री, बड़े आदमी से मान पाने की इच्छा हो तो शरीर में सुगन्धित तेल लगाकर 108 मंत्र का जाप कर जहाँ जायें बहुत सम्मान पावे, बहुत प्रीति हो।

रोग निवारण

19. श्री मल्लिनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ मल्लिजिणस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा मल्लि सुमल्लि जयमल्लि पडिमल्लि ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार जाप करके साधना करना। यह विद्या सिद्ध होने के बाद 108 बार गिनकर रोगी के धागा बाँधें। रोग मिटे।

पशु-पक्षी भय मिटे

20. श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ मुनिसुव्वयस्स सुव्वए सुव्वए महासुव्वए अणुसुव्वए महव्वए वये मइ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार जाप करना। फिर 108 बार जाप करने से सिंह, बाघ, साँप, बिच्छू आदि हिंसक प्राणियों का जोर नहीं चले।

मित्र बनें

21. श्री नमिनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ नमिजिणस्स नमि नामिणि स्वाहा।

विधि—उपवास कर 1008 बार गिनकर साधना करना। सभी मित्र बन जावें।

यात्रा निर्विघ्न होवे

22. श्री नेमिनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जे अरे रहावते वत्ते रिट्ठनेमि स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार जाप करके साधना करे। यात्रा निर्विघ्न होवे।

सुगंधित हो जावे

23. श्री पार्श्वनाथ प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ पासस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा उग्गे महाउग्गे उग्गजस्से पासे सुपासे पस्समाणि स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार जाप करके साधना करना। बाद में इस विद्या से 108 बार गिनें तो गाँव का कुँआ, तालाब का जल, फूल आदि सुगन्धिदार हो जावें।

कल्याणकारी हो

24. श्री महावीर प्रभु का मंत्र—ॐ नमो भगवओ अरहओ महावीर वद्धमाण वीरसामिस्स सिज्जउ मे भगवइ महइ महाविज्जा वीरे वीरे महावीरे सेणवीरे जयंत जये अपराजिये अणिहए स्वाहा।

विधि—उपवास करके 1008 बार गिनकर साधना करनी चाहिए। फिर इस मंत्र से मंत्रित वासक्षेप डाले तो कल्याणकारी हो।

कुशल—हर्ष—भगवान—सूर्य—राज—नथमल्लजी। चौथ — बखत रावत चाँद नव स्वामी नामी नमूँ।।
जय—गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय—जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

नवम्बर

जय भूधर • जय जयमल • जय चौथ • जय रावत • जय चाँद • जय जीत • जय लाल

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर (पद्मोदय-पंचांग)

जे.पी.पी. अहिंसा रिसर्च फाउण्डेशन — सेवा के क्षेत्र में बढ़ते कदम

जे.पी.पी. जैन गुरुकुलम्, तिरुत्तणि (तमिलनाडु)
(CBSE BOARD Upto 12th Std.)

2016

दिसम्बर 12 DECEMBER

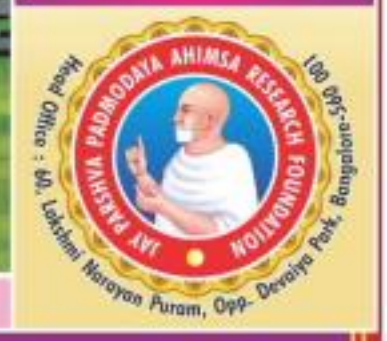

JAY PARSHVA PADMODAYA AHIMSA RESEARCH FOUNDATION
Head Office : 60, Lakshmi Narayan Puram, Opp. Devaiya Park, Bangalore-560 ...

विक्रम संवत् 2073 | वीर निर्वाण संवत् 2543 | जय संवत् 221 | जैन पंचमारक संवत् 2539

वार	विशेष					
रवि SUN (राहुकाल सायं 4.30 से 6.00 बजे)	पुष्य नक्षत्र: 16 दिसम्बर शुक्रवार मध्याह्न 2-26 बजे तक, 17 दिसम्बर शनिवार मध्याह्न 1-10 बजे तक	उत्तराषाढा ९/०५ — मकर — **4** — मार्गशीर्ष सुद ५	भरणी २७/३३ — मेष — **11** — मार्गशीर्ष सुद १२	आश्लेषा १२/४१ — सिंह १२/४१ — **18** — पौष वद ५	विशाखा २७/३७ — वृश्चिक २०/५२ — **25** — पौष वद १२
सोम MON (प्रात: 7.30 से 9.00 बजे)	शुभ दिन: 3, 4, 5, 14, 16, 24, 26, 27, 30; अशुभ दिन: 7, 8, 11, 17, 21, 22, 25	श्रवण १०/३० — कुंभ २३/०१ — **5** — मार्गशीर्ष सुद ६	कृतिका २४/३९ — वृष ६/५९ — **12** — मार्गशीर्ष सुद १३	मघा १३/०२ — सिंह — **19** — पौष वद ६	अनुराधा ३०/२७ — वृश्चिक — **26** — पौष वद १३
मंगल TUE (मध्यान्ह 3.00 से 4.30 बजे)	पंचक: 5 दिसम्बर सोमवार रात्रि 11-01 बजे से 10 दिसम्बर शनिवार प्रात: 8-29 बजे तक	धनिष्ठा ११/२३ — कुंभ — **6** — मार्गशीर्ष सुद ७	रोहिणी २१/४१ — वृष — पाक्षिक पर्व — **13** — मार्गशीर्ष सुद १४/१५	पूर्वा फाल्गुनी १४/१३ — कन्या २०/१८ — **20** — पौष वद ७	ज्येष्ठा — वृश्चिक — **27** — पौष वद १३
बुध WED (मध्यान्ह 12.00 से 1.30 बजे)	सर्वार्थ सिद्धि योग: 5 दिसम्बर, श्रवण, सूर्योदय से प्रात: 10-30 बजे तक; अमृत सिद्धि योग: 9 दिसम्बर, प्रात: 10-12 से आगामी सूर्योदय तक	शतभिषा ११/४० — मीन २९/२६ — **7** — मार्गशीर्ष सुद ८	मृगशिरा १८/५२ — मिथुन ८/१४ — **14** — पौष वद १	उत्तरा फाल्गुनी १६/०१ — कन्या — **21** — पौष वद ८	ज्येष्ठा ९/०० — धनु ९/०० — पाक्षिक पर्व — **28** — पौष वद १४
गुरु THU (मध्यान्ह 1.30 से 3.00 बजे)	मूल २१/०२ — धनु — **1** — मार्गशीर्ष सुद २	पूर्वा भाद्रपद ११/१६ — मीन — **8** — मार्गशीर्ष सुद ९	आर्द्रा १६/२३ — मिथुन — **15** — पौष वद २	हस्त १८/३१ — कन्या — **22** — पौष वद ९	मूल ११/१५ — धनु — **29** — पौष वद ३०	
शुक्र FRI (प्रात: 10.30 से 12.00 बजे)	पूर्वाषाढा — धनु — **2** — मार्गशीर्ष सुद ३	उत्तरा भाद्रपद १०/१२ — मीन — **9** — मार्गशीर्ष सुद १०	पुनर्वसु १४/२६ — कर्क ८/५२ — **16** — पौष वद ३	चित्रा २१/३२ — तुला ८/०४ — **23** — पौष वद १०	पूर्वाषाढा १३/१० — मकर १३/३५ — **30** — पौष सुद १	
शनि SAT (प्रात: 9.00 से 10.30 बजे)	पूर्वाषाढा ७/१४ — मकर १३/३४ — **3** — मार्गशीर्ष सुद ४	रेवती ८/२९ — मेष ८/२९ — अश्विनी ३०/१२ — **10** — मार्गशीर्ष सुद ११	पुष्य १३/१० — कर्क — **17** — पौष वद ४	स्वाती २४/३६ — तुला — **24** — पौष वद ११	उत्तराषाढा १४/४५ — मकर — **31** — पौष सुद २	

पचक्खाण यंत्र (चैन्नई समयानुसार)

दिसम्बर	सूर्योदय	सूर्यास्त	नवकारसी	पोरसी
1	6.16	5.40	7.04	9.07
6	6.19	5.42	7.07	9.09
11	6.21	5.43	7.09	9.11
16	6.24	5.45	7.12	9.14
21	6.27	5.48	7.15	9.17
26	6.29	5.50	7.17	9.19
31	6.31	5.53	7.19	9.21

जैन पर्व

9. अरह जिन जन्म, अरह जिन मोक्ष, 10. अरह जिन दीक्षा, मल्ली जिन जन्म, मल्ली जिन दीक्षा, मल्ली जिन केवल, नमी जिन केवल, मौन ग्यारस, 13. संभव जिन जन्म, संभव जिन दीक्षा, 23. पार्श्व जिन जन्म, 24. पार्श्व जिन दीक्षा, 25. चन्द्रप्रभ जिन जन्म, 26. चन्द्रप्रभ जिन दीक्षा, 28. शीतल जिन केवल

राष्ट्रीय एवं आर्य त्यौहार

4. नाग पंचमी, 5. पंचक प्रारंभ, 10. पंचक समाप्ति, गीता जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्रत, 11. प्रदोष, अनंग त्रयोदशी व्रत, 13. श्रीदत्त जयन्ती, 21. सूर्य उत्तरायण प्रारंभ, 24. सफला एकादशी व्रत, 25. बड़ा दिन (क्रिसमस डे), 26. प्रदोष

अवकाश

10. द्वितीय शनिवार,
25. बड़ा दिन (क्रिसमस डे)

नोट—सभी माह के अवकाश राजकीय गजट में देखकर मान्य करें।

याददाश्त — 13. पाक्षिक पर्व, 28. पाक्षिक पर्व

दूध का हिसाब

ता.	प्रात:	सायं
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
29		
30		
31		

Download Padmodaya Jain Calendar App in Android and iPhone using http://bit.do/padmodaya or search in app store.

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर

पद्मोदय जैन कैलेण्डर

पद्मोदय यात्रा विचार

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मि.	प्रहर 1	प्रहर 2	प्रहर 3	प्रहर 4	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	लाभ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	लाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	भय	क्लेश	सुख	लाभ	शून्य	नाश	दु:ख	संकट
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	लाभ	सुख	सुख	मरण	लाभ	दु:ख	लाभ	लाभ
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्लेश	कल्याण	क्लेश	संकट	क्लेश	दु:ख	लाभ	सुख
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	संकट	क्लेश	भाग्य	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	संकट	क्लेश	लाभ	लाभ	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	विलंब	लाभ	सुख	लाभ	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	—	—	—	—	—	—	—	—
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	लाभ	भय	लाभ	सुख	सुख	लाभ	लाभ	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	लाभ	लाभ	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	लाभ	लाभ
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	मरण	लाभ	लाभ	मरण	लाभ	कष्ट	—	लाभ
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	मरण	लाभ	सुख	लाभ	—	सुख	मरण	कष्ट

नोट

तीज-तेरस, चौथ-चतुर्दशी, पंचमी-पूर्णिमा इनका फल समान है। वदी चौदस व अमावस को यात्रा में निषिद्ध है।
नोट-इन मुहूर्त पर गमन करने वालों को दिशाशूल आदि का विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

पद्मोदय जैन कैलेण्डर के मुख्य प्राप्ति-स्थान

1. पी.एम. बोहरा
जय परिसर,
3-ए, चर्च रोड,
वेपेरी, चैन्नई-600 007

2. श्रुताचार्य चौथ भवन
39, विनोद नगर,
ब्यावर-350 901 (राज.)

3. श्री देवराज जी बोहरा
C/o, श्री श्रुताचार्य चौथ
स्मृति भवन,
महिला बाग,
जोधपुर-342 001 (राज.)

4. Manak Mewa Stores
19, Huriopet,
B.V.K. Iyengar
Road Cross,
Bangalore-560 053
Ph. : 22252232

5. विष्णु बुक एण्ड जनरल स्टोर
गुलाब सागर,
जोधपुर-342 002 (राज.)
फोन : 2556120
मो. : 09414754307

चन्द्र विचार

दिशा	राशि	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
पूर्व	मेष, सिंह, धन	अर्थ लाभ	धन नाश	घात	सुख सम्पत्ति
दक्षिण	वृषभ, कन्या, मकर	सुख सम्पत्ति	अर्थ लाभ	धन नाश	घात
पश्चिम	मिथुन, तुला, कुंभ	घात	सुख सम्पत्ति	अर्थ लाभ	धन नाश
उत्तर	कर्क, मीन, वृश्चिक	धन नाश	घात	सुख सम्पत्ति	अर्थ लाभ

काल राहु विचार

दिशा	वार	शुभ दिशा	निषिद्ध दिशा
उत्तर	रवि	दक्षिण	उत्तर
वायव्य	सोम	अग्नि	वायव्य
पश्चिम	मंगल	पूर्व	पश्चिम
नैऋत्य	बुध	ईशान	नैऋत्य
दक्षिण	गुरु	उत्तर	दक्षिण
अग्नि	शुक्र	वायव्य	अग्नि
पूर्व	शनि	पश्चिम	पूर्व
ईशान	रवि	नैऋत्य	ईशान

नोट

यात्रा में यह काल राहु पीछे का उत्तम माना गया है। प्रस्तुत तालिका में इसी नियम के अनुसार प्रत्येक वार की यात्रा में शुभ व वर्जित दिशा दर्शाई गई है।

शुभाशुभ समय ज्ञान

	गुलिककाल (शुभ)		यमगंडकाल (अशुभ)		राहुकाल (अशुभ)	
वार	प्रारम्भ	समाप्त	प्रारम्भ	समाप्त	प्रारम्भ	समाप्त
रवि	3.00	4.30	12.00	1.30	4.30	6.00
सोम	1.30	3.00	10.30	12.00	7.30	9.00
मंगल	12.00	1.30	9.00	10.30	3.00	4.30
बुध	10.30	12.00	7.30	9.00	12.00	1.30
गुरु	9.00	10.30	6.00	7.30	1.30	3.00
शुक्र	7.30	9.00	3.00	4.30	10.30	12.00
शनि	6.00	7.30	1.30	3.00	9.00	10.30

दिन का चौघड़िया

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग

रात का चौघड़िया

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ

नोट

दिन में 8 तथा रात में 8 चौघड़िया होते हैं। औसतन एक चौघड़िया 1 घंटा 30 मिनट का होता है। शुद्ध मान निकालने के लिये दिनमान में 8 का भाग दें तथा प्राप्त समय को सूर्योदय में उत्तरोत्तर जोड़ने से दिन के चौघड़िया प्राप्त होते हैं। रात्रि के मान में 8 का भाग देकर प्राप्त को सूर्योदय में जोड़ने से उत्तरोत्तर रात्रि के चौघड़िया प्राप्त होते हैं। लाभ, अमृत और शुभ श्रेष्ठ; चंचल सम तथा उद्वेग, काल व रोग अशुभ होते हैं।

जैन कैलेण्डर प्रारम्भकर्त्ता

श्री पदमचन्द जी कांकरिया
वर्तमान पर्याय
डॉ. श्री पदमचन्द्र जी म. सा. (एम. ए., पी-एच. डी.)

मुद्रक एवं प्राप्ति-स्थान :
पद्मोदय प्रकाशन
अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड,
अंजना सिनेमा के सामने, आगरा-282 002
फोन : 2851165, 9319203291

प्रकाशक एवं सम्पर्क सूत्र :
श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई
9, TREVELIYAN BASIN STREET, SOWCARPET, CHENNAI-600 079. Mob. : 9884497000

अब से नियमित कैलेण्डर श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई से ही प्रकाशित होंगे। कैलेण्डर की सामग्री सर्वाधिकार सुरक्षित है। इसकी नकल करने के कार्य को कानूनी अपराध माना जायेगा, दु:साहस करने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी। समस्त विवादों में न्याय क्षेत्र चेन्नई रहेगा।
श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन (रजि.), चेन्नई

विश्व का सर्वप्रथम जैन कैलेण्डर "पद्मोदय जैन कैलेण्डर" का इतिहास

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, जैन-जैनेतर दर्शनों के ज्ञाता, मधुर-ओजस्वी वाणी के धारक, सांसारिक अवस्था में ही जिन्होंने योग-निमित्तादि ज्ञान को साधना की कसौटी पर कसा ऐसे जोधपुर निवासी श्री पदमचन्द जी कांकरिया ने सन् १९८४ में सर्वप्रथम अपने चिन्तन को लिपिबद्ध कर एकभवावतारी आचार्यसम्राट् श्री १००८ श्री जयमल जी म. सा. के नवम् पट्टधर जैनागम मर्मज्ञ आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री जीतमल जी म. सा. पण्डितप्रवर आगम व्याख्याता अनेकानेक विद्याओं के सिद्ध पुरुष आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री लालचन्द्र जी म. सा. का मांगलिक श्रवण कर अनंत श्रद्धा के केन्द्र गुरुदेव श्री पार्श्वचन्द्र जी म. सा. का कृपारूपी वरदहस्त प्राप्त करके जैन कैलेण्डर के नाम से विश्व का प्रथम जैन कैलेण्डर प्रारम्भ किया। इस कैलेण्डर में अनेकानेक जन एवं व्यवहार उपयोगी सामग्री के साथ-साथ आध्यात्मिक जानकारियाँ भी संकलित की गई। ५ वर्ष में कैलेण्डर अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। इसी अन्तराल में १९८८ में श्री पदमचन्द जी कांकरिया ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करके डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. के रूप में जय संघ में जिनशासन की अनुमोदना स्व-पर कल्याण रूप करने लगे। दीक्षा से पूर्व कांकरिया जी ने कैलेण्डर के पीछे के अनेक वर्षों तक छपने योग्य नवीनतम जन-उपयोगी लेख लिखे थे।

श्री पदमचंद जी कांकरिया के द्वारा प्रारम्भ किया गया विश्व का यह प्रथम जैन कैलेण्डर प्रारम्भ में भूधर जैन कला मंच के अध्यक्ष श्री पदमचन्द जी कांकरिया के दिशा-निर्देश में ही प्रकाशित किया गया। कांकरिया जी के दीक्षा लेने के पश्चात् १९८८ में इसके प्रकाशन हेतु भूधर जैन कैलेण्डर प्रकाशन समिति बनाई गई जिस समिति ने करीबन ६ वर्षों तक श्री निर्मलचंद जी कांकरिया के दिशा-निर्देश में कैलेण्डर प्रकाशन का कार्य किया एवं कैलेण्डर अर्द्ध-मूल्य में बिक्री हेतु उपलब्ध करवाये। तत्पश्चात् कैलेण्डर के प्रकाशन का कार्य श्री जयमल जैन मेमोरियल ट्रस्ट, चेन्नई (श्रीमान् सुगनचन्द जी गुगलिया परिवार की निजी ट्रस्ट) को सौंपा गया। ट्रस्ट ने ९ वर्ष तक प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। कैलेण्डर प्रकाशन के कार्य को गति प्रदान करने वाली सभी संस्थाओं को बहुत-बहुत धन्यवाद।

सन् २००५ से स्वाध्याय संगम, कैलेण्डर, पॉकेट कैलेण्डर, प्रवचन साहित्य आदि के प्रकाशन हेतु श्री अ. भा. जयमल जैन श्रावक संघ से सम्बन्धित श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई नामक संस्था स्थापित की गई है। अब से पद्मोदय जैन कैलेण्डर आदि के प्रकाशन का कार्य इसी संस्था के द्वारा किया जायेगा।

सर्वाधिकार सुरक्षित—श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

कुशल-हर्ष-भगवान-सूर्य-राज-रुघमल्लजी। चौथ - बखत रायत चौद नव स्वामी नामी नमूं।।

जय-गच्छ के शृंगार, आचार्य प्रवर गुरु जीत की। होवे जय-जयकार, आचार्य प्रवर गुरु लाल की।।

दिसम्बर